HRSIKESA
ACYUTA
KESAVA
NRSIMHA
श्री वृन्दावन धाम
यथारूप
कृष्णकृपा श्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद
संस्थापकाचार्य: अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत संघ
VAMANA

श्रीवृन्दावन धाम

यथारूप

कृष्णकृपा श्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद
संस्थापकाचार्य अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत संघ

कृष्णकृपा श्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के उद्धरणों का यह सारसंग्रह श्रीकृष्ण-बलराम मंदिर के भव्य उद्घाटन की 30वीं वर्षगाँठ की स्मृति में रामनवमी 2005 को प्रकाशित किया गया है।

पुस्तक की विषय-सामग्री में अधिक जानकारी चाहने वाले पाठकगण निम्नलिखित पते पर सचिव से सम्पर्क कर सकते हैं-

इस्कॉन

श्रीकृष्ण-बलराम मंदिर

भक्तिवेदान्त स्वामी मार्ग

रमणरेती, वृन्दावन (उ.प्र.) 281121, भारत

email: Dayinvrindavan@pamho.net

हिन्दी रूपान्तरण : राधाप्रिया देवी दासी

प्रकाशक : इस्कॉन वृन्दावन

मुद्रक : सम्राट ऑफसेट, बी-88 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-20

प्रस्तावना

दीव्यद् वृन्दारण्य कल्पद्रुमाध:
श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ।
श्रीमद्राधा श्रीलगोविन्द देवौ
प्रेष्ठालीभि: सेव्यमानौ स्मरामि।।

"वृन्दावन में कल्पवृक्ष के नीचे रत्नजड़ित मन्दिर के भीतर श्री श्रीराधा-गोविन्द एक दैदीप्यमान सिंहासन पर विराजित हैं और उनके अत्यन्त विश्वासपात्र पार्षद उनकी सेवा में रत हैं। मैं उन्हें विनम्र प्रणाम करता हूँ।"

इस श्लोक में वृन्दावन सहित श्रीराधा-कृष्ण का वर्णन है। वृन्दावन नाम उस वन को दिया गया है जहाँ श्रीमती वृन्दादेवी (तुलसी देवी) प्रचुरता से उगती हैं।

'*वन*' शब्द का अर्थ है जंगल। वास्तव में यह वह जंगल नहीं, जिसे प्राय: हम अत्यधिक हरी-भरी वनस्पतियों से परिपूर्ण गहन होने के कारण समझते हैं। वृन्दावन में ऐसे बारह *वन* हैं। उनमें से कुछ यमुना के पश्चिमी तट पर स्थित हैं और कुछ पूर्वी तट पर हैं। पूर्वी तट पर स्थित वन हैं – भद्रवन, बिल्ववन, लौहवन, भांडीरवन और महावन। पश्चिमी तट पर स्थित वन हैं- मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलावन, काम्यवन, खादीरवन और वृन्दावन। ये वृन्दावन के बारह वन हैं।

इन वनों में तुलसी के पौधे तथा अन्य वृक्ष भी हैं, किन्तु सभी कल्पवृक्ष अर्थात् आध्यात्मिक हैं। वे मनचाहे ढंग से श्रीकृष्ण की सेवा कर सकते हैं। वे स्वेच्छा से वृक्ष बने हैं। वे आध्यात्मिक-जीव हैं, उन पर किसी भी प्रकार का कोई बन्धन नहीं है। प्रत्येक वृक्ष की सेवा करने की अपनी भिन्न प्रवृत्ति है। वृन्दावन में यद्यपि सभी पेड़-पौधे जीवात्मायें हैं, वे साधारण जीवात्मायें नहीं हैं। उन्होंने फलों तथा फूलों द्वारा श्रीकृष्ण की सेवा करने का निश्चय किया। वे वही सेवा चाहते हैं।

वृन्दावन में प्रत्येक जीव की सेवा करने की अपनी विशेष प्रवृत्ति है। कुछ भूमि-रूप में कृष्ण की सेवा कर रहे हैं; कुछ सिंहासन रूप में कृष्ण की सेवा कर रहे हैं; कुछ फलों तथा फूलों की सेवा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं; कुछ गोपी रूप में और कुछ उनके विश्वासपात्र सेवक रूप में सेवारत हैं। गायें, बछड़े, सभी अलग-अलग जीवात्मायें हैं। वे भौतिक तत्वों से बने हुए भौतिक शरीर नहीं हैं।

आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिस्
ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभिः।
गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतो
गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि।।

"जो अपने धाम गोलोक में अपनी स्वरूप शक्ति, चौंसठ कलायुक्त ह्लादिनीरूपा श्रीराधा तथा उनके ही शरीर के विस्तार-रूपा उनकी *सखियों* के साथ निवास करते हैं, जो कि उनके नित्य आनन्दमय चिन्मय रस से स्फूर्त एवं पूरित रहती हैं, उन आदिपुरुष भगवान् गोविन्द का मैं भजन करता हूँ।"

सभी व्रजवासी भी श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति का विस्तार हैं। एक तरह से वे सभी श्रीकृष्ण हैं। वे श्रीकृष्ण से भिन्न नहीं हैं। "शक्ति शक्तिमतो अभेद,"अर्थात् शक्ति तथा शक्तिमान अभिन्न हैं, समरूप हैं। सूर्य तथा सूर्य के प्रकाश की तरह। सूर्य के गोले में ऊष्मा तथा प्रकाश और सूर्य के प्रकाश में भी उष्मा और प्रकाश दोनों हैं। अतः जहाँ तक प्रकाश और उष्मा की बात है वे दोनों एक समान हैं। इसी प्रकार श्रीकृष्ण एवं श्रीकृष्ण की आनन्द प्रदान करने वाली शक्ति आनन्दचिन्मय को *ह्लादिनि* कहा जाता है। *राधाकृष्ण प्रणयविकृतिर्ह्लादिनि शक्तिरस्मात्*। वृन्दावन में सब कुछ श्रीकृष्ण की आनन्दप्रदायनी शक्ति का विस्तार रूप है। उनमें कोई भेद नहीं है। इसलिए प्रारंभ में 'दीव्याद्', 'दैदीप्यमान्' अथवा 'दिव्य' तथा 'आध्यात्मिक' कहा गया है।

हमें वृन्दावन को कोई सामान्य वन नहीं समझना चाहिए। इस लोक में हमें वृन्दावन मिला है।

वह कोई साधारण वन नहीं है, अपितु साक्षात् यह वृन्दावन गोलोक वृन्दावन का यथारूप है। उनमें कोई अन्तर नहीं है। इसलिए श्रील नरोत्तमदास ठाकुर कहते हैं : -

विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन,
कबे हाम हेरिबो श्रीवृन्दावन।

"जब मेरा मन भौतिक चिन्ताओं तथा इच्छाओं से मुक्त हो जायेगा मैं वृन्दावन एवं श्री श्रीराधा-कृष्ण के माधुर्य प्रेम को समझ पाऊँगा, और तभी मेरा आध्यात्मिक जीवन सफल होगा।"

'*विषय छाड़िया*'। हमारी वर्तमान स्थिति यह है कि हम भव-रोग से पीड़ित हैं। हमें पहले भव-रोग से मुक्त होना होगा। भव-रोग अर्थात इन्द्रियतृप्ति और इसमें भी सबसे दुर्जेय रोग है - यौनाकर्षण। यही भव-रोग कहलाता है। हमें पहले *विषय*-भोगों के प्रदूषण से तथा इन्द्रियतृप्ति से मुक्त होना होगा। यही श्रील नरोत्तम दास ठाकुर का कथन है। "जब मेरा मन भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जाएगा, तभी मैं देख सकूँगा कि वास्तविक वृन्दावन क्या है" भौतिक इच्छाओं के रहते वृन्दावन को देख पाना बहुत कठिन है। भक्ति अर्थात् भगवान् की प्रेममयी सेवा के लिए सभी भौतिक इच्छाओं से मुक्ति-यही पहली योग्यता है। तभी हम वृन्दावन को देख सकते हैं।

श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद
मायापुर, 9 अप्रैल, 1975

विषय-सूची

संक्षिप्त निर्देश चिह्न

भग. गी.	–	श्रीमद् भगवद्गीता यथारूप
श्री. भा.	–	श्रीमद् भागवतम्
चै.च.	–	श्री चैतन्य चरितामृत
श्री.कृ.	–	श्री कृष्ण
भ.र.सि.	–	श्री भक्ति रसामृत सिन्धु
उ. अ.	–	श्री उपदेशामृत
ब.सं.	–	श्री ब्रह्म संहिता
भ. चै. म. शि.	–	भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु का शिक्षामृत
भ. क. शि.	–	भगवान् कपिल की शिक्षाएँ
कु. म. शि.	–	कुन्ती महारानी की शिक्षाएँ
भा.क.प्र.	–	भागवत् का प्रकाश
आ. सा. वि.	–	आत्म साक्षात्कार का विज्ञान
वृ.	–	वृन्दावन
आ. ली.	–	आदि लीला
म. ली.	–	मध्यलीला
अ. ली.	–	अन्त्य लीला
ता.	–	तात्पर्य
वा.	–	वार्तालाप
भू.	–	भूमिका

उद्धरण (QUOTATIONS)

1. केवल भक्तिमयी सेवा द्वारा ही कोई गोलोक वृन्दावन नामक दिव्य लोक में जा सकता है और वहाँ भी केवल भक्ति ही भक्ति है, क्योंकि इस लोक में तथा आध्यात्मिक जगत् में भक्ति सम्बन्धी कार्य-कलाप एक से होते हैं। भक्ति कभी बदलती नहीं। उदाहरण के लिए आम को लें। यदि किसी को कच्चा आम मिले तो वह आम ही रहता है और जब वह पक जाता है तब भी आम ही रहता है, किन्तु उसका स्वाद बढ़ जाता है। इसी प्रकार से एक भक्ति वह है जो गुरु तथा शास्त्र के निर्देश पर की जाती है और दूसरी आध्यात्मिक जगत् की भक्ति है जो श्रीभगवान् की संगति में की जाती है। किन्तु दोनों एक हैं। उनमें कोई भेद नहीं है। अन्तर यही है कि एक अपरिपक्व अवस्था है और दूसरी परिपक्व होने के साथ ही अधिक स्वादिष्ट भी है। केवल भक्तों की संगति में ही भक्ति को परिपक्व बनाया जा सकता है। (श्री. भा. 4.9.11. ता.)

2. अत: वृन्दावन धाम की पूजा क्यों होती हैं? क्योंकि वृन्दावन धाम और श्रीकृष्ण अभिन्न हैं। यदि आप थोड़ी-सी व्रज-रज ग्रहण करते हैं।, इसका अर्थ है आप श्रीकृष्ण के चरणकमलों की रज ले रहे हैं। अत: यह महत्वपूर्ण है। (वृन्दावन में श्री० भा० 6.2.14, 17 सित०, 1975)

3. इसी दृढ़ विश्वास के साथ ही हम अपनी पत्रिका 'भगवद् दर्शन' में यह घोषित करते हैं कि वृन्दावन में रहने वाले कुछ गोस्वामी जो जानबूझकर पाप करते हैं वे इस पवित्र भूमि में कुत्ते, बन्दर तथा कछुवे का शरीर धारण करते हैं। इस प्रकार वे कुछ काल तक निम्न योनि में रहते हैं और अपना पशु-शरीर त्यागने के बाद वे पुन: आध्यात्मिक जगत जाते हैं। ऐसा अल्पकालिक दंड विगत कर्मों का फल नहीं होता। भले ही यह विगत कर्म के कारण प्रतीत हो किन्तु यह दण्ड भक्त को अपनी भूल सुधारने और शुद्ध प्रेम-भक्ति में आने के लिए दिया जाता है। (श्री. भा. 5. 8.26. ता.)

4. मनुष्य को चौबीसों घंटे श्रीकृष्ण के विचारों में लीन रहना चाहिए। वृन्दावन में प्रदर्शित *रागमार्ग* में अनेक भक्त हैं। चाहे *दास्य रस* हो, *साख्य-रस* हो, *वात्सल्य-रस* हो या *माधुर्य-रस,* श्रीकृष्ण के भक्त सदैव श्रीकृष्ण के विचारों में अभिभूत रहते हैं। जब श्रीकृष्ण वृन्दावन से दूर

जंगल में गाएँ चराते हैं तब गोपियाँ, जो *माधुर्य-रस* में लीन हैं, सदा श्रीकृष्ण के विचारों में खोई रहतीं हैं कि श्रीकृष्ण जंगल की भूमि पर कैसे चलते हैं। उनके चरणों के तलवे इतने कोमल हैं कि गोपियाँ उनके चरणकमलों को अपने वक्षस्थलों पर रखने का साहस भी नहीं कर पाती थीं। सचमुच वे अपने वक्षस्थलों को श्रीकृष्ण के चरणकमलों के लिए बहुत कठोर समझती; फिर भी वे चरणकमल जंगल के काँटों-भरे मार्ग पर विचरण कर रहे हैं। गोपियाँ अपने-अपने घरों में रहकर भी ऐसे विचारों में मग्न रहतीं, जबकि श्रीकृष्ण उनसे बहुत दूर होते। इसी तरह से जब श्रीकृष्ण अपने ग्वाल-मित्रों के साथ खेल रहे होते तो माता यशोदा को यही विचार सताता रहता कि श्रीकृष्ण लगातार खेलते रहने के कारण ठीक से भोजन नहीं करते, अतएव वे कमजोर पड़ते जा रहे हैं। ये उन उच्च आनन्दानुभूति के उदाहरण हैं जो श्रीकृष्ण की सेवा करते समय वृन्दावन में प्रकट होते हैं। इस श्लोक में नारदमुनि ने अप्रत्यक्ष रूप से श्रीकृष्ण की सेवा में लीन रहने वालों की प्रशंसा की है। विशेष रूप से नारदमुनि बद्धजीवों के विषय में बताते हैं कि उन्हें किसी भी प्रकार से श्रीकृष्ण के विचारों में मग्न रहना चाहिए, क्योंकि इससे मनुष्य इस संसार के भय से मुक्त हो जाएगा। श्रीकृष्ण के विचारों में पूरी तरह से निमग्न रहना ही भक्तियोग की चरम सीमा है। (श्री. भा. 7.1.27. ता.)

5. ब्रह्मा के एक दिन में जब भी श्रीकृष्ण अवतरित होते हैं वे वृन्दावन में नन्द महाराज के घर में ही आते हैं। श्रीकृष्ण सारी सृष्टि के स्वामी हैं (*सर्वलोक महेश्वरम्*)। इसलिए न केवल नंद महाराज के पड़ोस में, अपितु सारे ब्रह्माण्ड में तथा अन्य सभी ब्रह्माण्डों में भी भगवान् के शुभ आगमन पर वाद्ययंत्र बज उठे। (श्री. भा. 10.5.13. ता.)

6. यद्यपि नन्द महाराज तथा यशोदा को श्रीकृष्ण के माता-पिता के रूप में स्वीकार किया जाता है फिर भी माता यशोदा श्रीकृष्ण के पिता नन्द महाराज से अधिक भाग्यशालिनी थी, क्योंकि नन्द महाराज कभी-कभी श्रीकृष्ण से वियुक्त होते हैं, जबकि यशोदा कभी भी श्रीकृष्ण से विलग नहीं हुईं। श्रीकृष्ण के शिशुकाल से बाल्यकाल तक तथा बाल्यकाल से युवावस्था तक माता यशोदा श्रीकृष्ण की संगति में ही रहीं। यहाँ तक कि जब श्रीकृष्ण बड़े भी हो गए थे तब भी वे वृन्दावन में जाते और माता यशोदा की गोद में बैठते। इसलिए, माता यशोदा के भाग्य की कोई तुलना नहीं की जा सकती। (श्री. भा. 10.8.46. ता.)

7. किन्तु श्रीकृष्ण से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखने वाले भक्तों के चरणचिह्नों का, विशेषतया वृन्दावनवासियों का, अनुसरण करते हुए मनुष्य श्रीकृष्ण के सान्निध्य के परम पद तक पहुँच सकता है। जैसा कि कहा गया है – '*वृन्दावन परित्यज्य पदमेकं न गच्छति*' – श्रीकृष्ण वृन्दावन क्षणभर के लिए भी नहीं छोड़ते। वृन्दावनवासी जैसे माता यशोदा, श्रीकृष्ण के मित्र तथा श्रीकृष्ण की प्रेमिकाएँ – वे तरुण गोपियाँ जिनके साथ वे नृत्य करते हैं – श्रीकृष्ण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले हैं और यदि कोई व्यक्ति इन भक्तों के चरणचिह्नों का अनुसरण करता है तो उसे श्रीकृष्ण अवश्य प्राप्त होते हैं। यद्यपि श्रीकृष्ण के नित्यसिद्ध विस्तार सदैव श्रीकृष्ण के साथ रहते हैं, किन्तु यदि साधना सिद्धि में लगे भक्त श्रीकृष्ण के इन नित्यसिद्ध पार्षदों के चरणचिह्नों का अनुसरण करते हैं तो वे बिना किसी कठिनाई के श्रीकृष्ण को प्राप्त कर सकते हैं। (श्री. भा. 10.9.21. ता.)

8. सुरभि गाएँ सामान्यतया वैकुण्ठ लोकों में पाई जाती हैं। जैसा कि 'ब्रह्मसंहिता' में वर्णन आया है कि भगवान् अपने धाम गोलोक वृन्दावन में सुरभि गाएँ पालने में व्यस्त रहते हैं। (*सुरभीरभिपालयन्तम्*)। ये गाएँ भगवान की पालतू गाएँ हैं। सुरभि गायों से कोई भी अपनी इच्छानुसार दूध ले सकता है और जितनी बार चाहे उन्हें दुह सकता है। दूसरे शब्दों में सुरभि गाय असीम मात्रा में दूध दे सकती है। (श्री. भा. 8.8.2. ता.)

9. 'ब्रह्मसंहिता' हमें सूचना देती है कि आध्यात्मिक जगत् विशेषतया श्रीकृष्ण का निवास स्थान गोलोक वृन्दावन, सुरभि गायों से परिपूर्ण है (*सुरभीरभिपालयन्तम्*)। सुरभि गाय को कामधेनु भी कहते हैं। यद्यपि जमदग्नि के पास एक ही कामधेनु थी, किन्तु वे उससे कोई भी इच्छित वस्तु प्राप्त कर सकते थे। (श्री. भा. 9.15.24. ता.)

10. वृन्दावन मोरों से भरा हुआ है। '*कूजत्-कोकिल-हंस-सारस-गणाकीर्णे मयूराकुले*'। वृन्दावन का जंगल कोयलों, हंसों, सारसों, मोरों, बंदरों, बैलों तथा गायों से सदैव भरा-पुरा रहता है। अत: श्रीकृष्ण तथा बलराम इन पशुओं की बोली की नकल उतारते तथा खेल का आनन्द लेते। (श्री. भा. 10.11.39-40. ता.)

11. जब गोविन्द वंशी बजाते तुरन्त ही सारे मोर मदोन्मत्त हो उठते जैसे कि उन्होंने नये बादलों की गड़गड़ाहट सुनी हो। जब गोवर्धन पर्वत पर या घाटी में विराजमान सभी पशु, वृक्ष और पौधे इन

मोरों को नाचते हुए देखते हैं तो वे भी मूर्तिवत् खड़े होकर वंशी की दिव्य ध्वनि को बड़े ही ध्यानपूर्वक सुनते हैं। (श्रीकृष्ण-21-वंशी द्वारा मोहित गोपियाँ)

12. जब वे बाँसुरी बजाते तो वृन्दावन की सारी गौवें तथा पशु चारा खाना छोड़कर भोजन का ग्रास मुँह में रख लेते और चबाना छोड़ देते। उनके कान ऊपर उठ जाते और वे स्तम्भित हो जाते। वे जीवित नहीं अपितु तस्वीर की भाँति प्रतीत होते। श्रीकृष्ण का वंशीवादन इतना आकर्षक है कि पशु तक उससे मोहित हो जाते। (श्रीकृष्ण-35-गोपियों का वियोग)

13. यदि हम अपने मन को श्रीकृष्ण के चरणकमलों पर स्थिर कर लें तो सबकुछ ठीक ढंग से होगा। श्रीकृष्ण द्वारा भी यही आश्वासन दिया गया है : "*तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीति पूर्वकम्*"। यदि कोई सदैव श्रीकृष्ण के प्रेम और स्नेह से युक्त रहेगा, औपचारिक प्रेम नहीं, अपितु भावपूर्ण प्रेम, स्वाभाविक प्रेम, तो वह सदा वांछनीय है। वृन्दावन में इसका उदाहरण प्राप्त है। कम से कम हम शास्त्रों तथा श्रीमद्‌भागवतम् से वृन्दावन के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। वृन्दावनवासियों का श्रीकृष्ण के प्रति आकर्षण कितना स्वाभाविक है - चाहे वे गोपियाँ हों, गोप-बालक हों, पक्षी हों, पशु हों, बछड़े हों, जानवर हों, वृक्ष हों, सभी, चाहे मक्खियाँ हों, मधुमक्खियाँ हों या कीड़े-मकोड़े। वृन्दावन की रज भी, घास भी, सभी चिन्मय हैं, आध्यात्मिक हैं। वे भौतिक नहीं हैं। लेकिन वे सभी श्रीकृष्ण के प्रति अलग-अलग तरह से आकर्षित हैं। (श्री. भा. प्रवचन, 9 सि. 1970-वृ.)

14. जो वृन्दावन में रह रहे हैं और बन्दरों की तरह व्यवहार कर रहे हैं, वे अगले जन्म में बन्दर की योनि प्राप्त करेंगे। वृन्दावन में रहना अगले जन्म में मुक्ति का साधन है। एक ही जीवन में सभी पापपूर्ण कर्मों की सजा मिल जाएगी, क्योंकि जैसे ही पशु-योनि प्राप्त होगी, आगे पापपूर्ण जीवन का कोई लेखा-जोखा नहीं रह जाता। पशु उससे बढ़कर कोई पापपूर्ण कार्य नहीं कर सकते, जितना उनके भाग्य में बँधा है, किन्तु उनके पापपूर्ण कार्य का लेखा-जोखा नहीं रखा जाता। जिस व्यक्ति को बन्दर का शरीर प्रदान किया गया है, वह उस शरीर की कठिनाइयों को सहन करेगा। अत: उसे अपने पापों का फल मिल जायेगा। क्योंकि वह वृन्दावन में आया और उसने राधारानी की कृपा से वृन्दावन वास किया, आने वाले जीवन में वह............। यही वृन्दावन धाम की

महिमा है। नहीं तो वृन्दावन के इन कुत्तों, सुअरों तथा बन्दरों के लिए क्या स्पष्टीकरण है? यही धाम-अपराध है, *धाम* में अपराध करना। (कमरे में वा. 7 सित., 1976)

15. एक किशोर गोपी अपनी माता से बोली, "अरी माँ! देखो न विभिन्न वृक्षों की डालों पर बैठे हुए ये सारे पक्षी कितने मनोयोग से श्रीकृष्ण को वंशी बजाते हुए देख रहे हैं। उनके स्वरूपों से ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों ये अपना सबकुछ भूलकर श्रीकृष्ण की वंशी सुनने में तल्लीन हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि ये कोई सामान्य पक्षी नहीं हैं, अपितु महान् ऋषि-मुनि तथा भक्त हैं जो श्रीकृष्ण की बाँसुरी सुनने के लिए ही वृन्दावन में पक्षी रूप में अवतरित हुए हैं।" बड़े-बड़े ऋषि-मुनि तथा विद्वान् वैदिक-ज्ञान में रुचि रखते हैं, किन्तु 'भगवद्गीता' में वैदिक-ज्ञान का सार इस प्रकार बताया गया है- '*वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः*'-। वेदों के ज्ञान द्वारा श्रीकृष्ण को ही समझना होता है। इन पक्षियों के आचरण से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे वैदिक-ज्ञान के प्रकाण्ड-पंडित हों और इन्होंने वैदिक-ज्ञान की सारी शाखाओं का त्यागकर केवल श्रीकृष्ण की दिव्य ध्वनि को अंगीकार कर लिया हो। (श्रीकृष्ण-21-वंशी द्वारा मोहित गोपियाँ)

16. यह मत सोचो कि वृन्दावन में बछड़े या गाएँ श्रीकृष्ण से किसी तरह कम हैं। नहीं। एक तरह से वे श्रीकृष्ण के समान हैं। "*आनन्द-चिन्मय रस प्रतिभाविताभिस्*"। वे श्रीकृष्ण के *आनन्द चिन्मय रस* के विस्तार हैं। श्रीकृष्ण गौवों तथा बछड़ों के साथ खेलना चाहते हैं। इसलिए उनकी आध्यात्मिक शक्ति गौवों और बछड़ों के रूप में प्रकट हुई है। वे भौतिक गौवों का आलिंगन नहीं करते। भौतिकता से उनका कोई सरोकार नहीं। "*आनन्द-चिन्मय रस प्रति भाविताभिस्*"। (श्री. भा., प्रवचन, 10 सित. 1976)

17. वृन्दावन में बन्दर क्यों? वे भी भक्त हैं, परन्तु वे अच्छी तरह से आगे नहीं बढ़ सके। अतः पशु-योनि का अर्थ है - पापपूर्ण जीवन की समाप्ति और जो भी पाप फल रह गए वे एक ही जीवन में समाप्त। हमें बहुत-बहुत सावधान रहना है धाम से, धाम-अपराध से। धाम में ...। आप दूसरे स्थानों पर भी 'हरे कृष्ण' का जप करते हो, किन्तु यदि आप वृन्दावन में 'हरे कृष्ण-मंत्र' का जप करते हो तो इस जप का फल हजार गुणा बढ़ जाता है। ऐसा पाप कार्यों के साथ भी है। यदि आप वृन्दावन में पाप कार्य करते हो तो उसका फल हजार गुणा बढ़ जाता है। तो हमें बहुत

सावधान रहना चाहिए। अत: श्रीकृष्ण बड़े कृपालु हैं। '*तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणो भुञ्जानेवात्म कृतं विपाकम्*।' यदि हम अपवित्रतापूर्ण कार्य करते हैं तो हमें उसका फल भुगतना पड़ेगा, किन्तु भक्त के लिए – '*कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्ति भाजाम्*'। *कर्माणि निर्दहति*। अन्यों को अपने पापफल अनेक जीवन में भुगतने पड़ते हैं, किन्तु यदि भक्त पापकर्म करता है, एक ही जन्म में वे नष्ट हो जाते है किन्तु इस छूट का लाभ मत लो। हमें बहुत सावधान रहना है और कोई पापकार्य नहीं करना है। (श्री भा. प्रवचन, 1.7.11 वृ., 10 सि. 1976)

18. धाम में भजन। यदि कोई धाम में भक्ति करता है तो वह धाम के बाहर की गई भक्ति से सैकड़ों गुणा अच्छी है। इसी तरह धाम-अपराध भी हैं। ये अपराध जब धाम से बाहर किया जाता है अर्थात् वृन्दावन से बाहर किया जाए तो इतना घोर-अपराध नहीं माना जाता, जितना वृन्दावन में करने से माना जाता है। यही धाम-अपराध है। अत: उसकी सजा है, परन्तु उसका पुरस्कार भी है। एक ही जीवन में क्षमा मिल जाती है। "*तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणो भुञ्जानेवात्म कृतं विपाकम्*"। इसलिए भक्त अपने जीवन की विपरीत परिस्थिति में समझ जाता है "मुझे सज़ा मिल रही है। यह मेरे पूर्वजन्म के गलत कार्यों की थोड़ी-सी सजा। अत: अब मैं मुक्त हो रहा हूँ।" अत: वे भगवान् की पूजा में और अधिक उत्साहित हो जाता है, "आप मुझे मेरे पापकर्मों की थोड़ी-सी सजा दे रहे हैं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद"। ये एक भक्त का भाव है "*तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणो*" ....। (कमरे में वा., 7 सि. 1976)

19. कुत्ते या बन्दर योनि में वे अपने पापपूर्ण कार्यों में वृद्धि नहीं कर सकते। वे रुक जाते हैं और वे जो कुछ भी करते हैं उनका लेखा-जोखा नहीं रखा जाता। और इस तरह कुत्ते या बन्दर की योनि को सहन करना मानो अपने पापपूर्ण कर्मों के फल को भुगतना है; केवल एक सजा के बाद सब समाप्त। तब वह पूरी तरह से मुक्त हो जाता है। (कमरे में वा., 7 सि. 1976)

20. अत: आप सभी अत्यन्त भाग्यशाली हैं। आप वृन्दावन आए हैं। चाहे आप जीवन में पहली बार यहाँ आए हैं। यह बहुत अच्छा अवसर है। वृन्दावन-धाम अप्राकृत है, चिन्तामणि। इसी तरह से आप नवद्वीप धाम से आ रहे हैं। वह भी 'चिन्तामणि – धाम' है। ये दो धाम, साधारण स्थान नहीं हैं। इसलिए धाम-अपराध मत करो। जैसा कि पवित्र नाम जप के प्रति अपराध होते हैं, वैसे

ही धाम में अपराध होते हैं। तो हमें धाम में कोई पाप नहीं करना चाहिए। धाम में यदि आप 'हरे कृष्ण' मन्त्र का जप करते हो तो उसका फल हजार गुणा बढ़ जाता है। इसी तरह यदि हम धाम में, अपराध करते हैं तो उनका फल भी हजार गुणा बढ़ जाता है। अत: धाम में हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए कि हम कोई पाप न करें। अवैध सम्बन्ध या नशा, माँस-भक्षण और जुआ। ये पापपूर्ण कार्य हैं। अत: वृन्दावन धाम अप्राकृत धाम है। जो लोग विषयों तथा इन्द्रियतृप्ति में लिप्त हैं, वे नहीं देख सकते कि वृन्दावन क्या है? वे नहीं समझ सकते कि राधा और श्रीकृष्ण क्या हैं (वृन्दावन में प्रवचन, 14 मार्च, 1974)

21. वृन्दावन में बहुत बाबाजी हैं। वे रोटियाँ एकत्रित करते हैं और बीड़ी पीते हैं और एक या दो स्त्रियाँ रखते हैं। यही सब चलता रहता है। उनका ध्यान आकर्षित करना है, "आओ 'हरे कृष्ण' मन्त्र का जप करो और हल चलाओ।" यह नहीं कि आप केवल बीड़ी पीकर ही रूप गोस्वामी बन जाओगे। वे सोच रहे हैं कि वे रूप गोस्वामी बन गए हैं। रूप गोस्वामी भी इसी तरह रहते थे। अत: वे सोचते हैं कि केवल वस्त्र, धोती बदलने से वे रूप गोस्वामी बन गए हैं। और जो वे चाहें वह कर सकते हैं। (रुकावट).... उनको लो और इन सभी बाबाओं को किसी काम में नियोजित करो। "हरे कृष्ण मंत्र जपो तथा हल चलाओ"। तब सब ठीक हो जाएगा। (15 मार्च,1974, प्रात:कालीन सैर)

22. ये बाबा जी, वे कुछ भी प्रचार करने के विरुद्ध हैं। वे प्रचार के अत्यधिक विरोधी हैं। अत: मैं प्रचार कर रहा हूँ। बाबा जी, मायावादी संन्यासी, सबका विचार है कि मैं भजन और हिन्दू-धर्म को नष्ट कर रहा हूँ। यह उनका मेरे विरुद्ध प्रचार है। मैं जो कुछ भी लिख रहा हूँ, वह सब गलत है। वे यह सब कह रहे हैं और जितना हो सकता है मेरे शिष्यों के मन दूषित कर रहे हैं ताकि पूरी संस्था दूषित हो जाए और टूट जाए। यह उनकी साजिश है। (वृ. कमरे में वा., 26 अक्तूबर, 1976)

23. जैसे ही इन्दिरा गांधी और उसके बेटे ने वृन्दावन के लोगों को परेशान किया, जरा देखो, एक ही सप्ताह में। यह व्यवहारिक है। वे बेचारे गरीब बाबा जी उनसे भीख मांगते रहे, परन्तु उन्होंने बलपूर्वक एक बार, दो बार, सुई लगा दी। अत: तुरन्त एक सप्ताह के बाद ....

रामेश्वर ने पूछा, ''बन्ध्याकरण के लिए ?''

श्रील प्रभुपाद ने कहा, "हाँ, ऐसा बन्ध्याकरण हुआ। मैं आश्चर्यचकित हो गया हूँ कि कैसे इन्दिरा गाँधी का इतना घृणित पतन हुआ। इसमें स्पष्ट रूप से श्रीकृष्ण का हाथ है। इतिहास साक्षी है कि आज तक ऐसा पतन किसी राजनीतिज्ञ का नहीं हुआ।'' (27 मई, 1977, में वा.)

24. लगभग 1934 के आसपास मेरे गुरु महाराज राधा-कुण्ड में रह रहे थे और वे उपनिषद् पर चर्चा कर रहे थे। वे निरन्तर उपनिषद् पर चर्चा किया करते थे। और बाबा जी .... राधा-कुण्ड में बहुत से बाबा जी हैं। सबसे पहले वे सभी वहाँ आए यह सोचकर ''कि भक्ति सिद्धान्त सरस्वती पधारे हैं, जो बहुत बड़े विद्वान् है और गौड़ीय -मठ के संस्थापक हैं।" वे जिज्ञासावश वहाँ आए। और जब उन्होंने देखा कि वे उपनिषद् पर चर्चा कर रहे हैं तो धीरे-धीरे उन्होंने आना बन्द किया। अत: मेरे गुरु महाराज ने परामर्श दिया, "ये लोग राधाकुण्ड में नहीं रह रहे, अपितु नरक-कुण्ड में रह रहे हैं।" मैंने उनके मुख से व्यक्तिगत रूप से सुना। (श्री.भा. 6.3.20-23, 14 फरवरी, 1971, गोरखपुर में प्रवचन)

25. अत: वह श्रीचैतन्य महाप्रभु का जीवन-लक्ष्य है। उन्होंने संन्यास ग्रहण किया और भारत में द्वार-द्वार, गाँव-गाँव और नगर-नगर में गये। उन्होंने आदेश दिया, '*पृथिवीते आछे यत नगरादि ग्राम*'। सारे संसार में जितने नगर और गाँव हैं, यह कृष्णभावनामृत आन्दोलन वहाँ होना चाहिए। यह नहीं कि "हम बड़े-बड़े गोस्वामी हैं और बाबा जी हैं। हम वृन्दावन से बाहर नहीं जाते।" वे कहते हैं, "हम वृन्दावन से बाहर नहीं जाते।" आप उनकी नकल कर रहे हैं (दबी हँसी हँसते हैं)। श्रीचैतन्य महाप्रभु कहते हैं कि '*पृथिवीते आछे यत नगरादि ग्राम*' वे बहुत बड़े वैष्णव बन गए हैं। "नहीं, मैं वृन्दावन की सीमा से बाहर नहीं जाता हूँ।" ये क्या मूर्खता है? क्या श्रीचैतन्य महाप्रभु ने ऐसा कहा है कि तुम वृन्दावन की सीमा से पार नहीं जाओ? एक शुद्ध भक्त, वह जहाँ भी है वहीं वृन्दावन है। वही वृन्दावन तीर्थ है। '*कुर्वन्ति तीर्थानी*'। एक भक्त, एक शुद्ध भक्त तो नरक को भी एक तीर्थ स्थान बना सकता है। वह है भक्त। (अलीगढ़ पहुँचने पर प्रवचन-9 अक्तूबर, 1976)

26. जब श्रीकृष्ण कहते हैं कि महात्मा उनके धाम में प्रवेश करते हैं, वे अपने आध्यात्मिक धाम

गोलोक वृन्दावन के सम्बन्ध में कहते हैं। मैं जिस वृन्दावन से आया हूँ, उसे भौम वृंदावन कहते हैं, जिसका अर्थ है कि यह वही वृन्दावन पृथ्वी पर अवतरित हुआ है। जैसा कि श्रीकृष्ण अपनी अन्तरंगा शक्ति से इस धराधाम पर अवतरित हुए हैं, वैसे ही उनके धाम तथा निवास स्थान भी इस पृथ्वी पर अवतरित हुए। दूसरे शब्दों में जब श्रीकृष्ण इसी पृथ्वी पर अवतरित होते हैं तो वे अपने आपको उसी विशेष भूमि वृन्दावन में प्रकट करते हैं और इसलिए यह भूमि बहुत पवित्र है। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण का आध्यात्मिक आकाश में अपना निवासस्थान है और यही 'गोलोक -वृन्दावन' कहलाता है। (योग की पूर्णता, 10)

27. हमारी परम्परा में आदर्श गृहस्थ परमहंस का उदाहरण प्राप्त है - श्रील भक्ति विनोद ठाकुर के रूप में। उन्होंने अपनी पुस्तक *शरणागति* (31.6) में कहा है - '*ये दिन गृहे भजन देखि, गृहेते गोलोक भय*'। जब भी गृहस्थ अपने घर पर भगवान् की महिमा का गान करता है तो उसके सारे कार्य तुरंत गोलोक वृन्दावन में किए गए कार्यों में परिणत हो जाते हैं; ऐसे आध्यात्मिक कार्य कलाप जो श्रीकृष्ण के गोलोक वृन्दावन में सम्पन्न होते हैं। 'भौम-वृन्दावन' में श्रीकृष्ण के कार्यकलाप गोलोक वृन्दावन में उनके कार्यों से भिन्न नहीं होते। यही वृन्दावन की सही समझ है। हमने अपने कृष्णभावनामृत आन्दोलन में नव-वृन्दावन कृषिक्षेत्र की स्थापना की है, जहाँ भक्तगण सदैव श्रीकृष्ण की भक्ति में लगे रहते हैं और यह गोलोक वृन्दावन से भिन्न नहीं है। (चै. च. म. ली., 7.69, ता.)

28. फलतः वृन्दावन धाम श्रीकृष्ण की ही तरह पूज्य है। '*आराध्यो भगवान् व्रजेश तनयस्तद्धाम वृन्दावनम्*' - श्रीचैतन्य महाप्रभु के दर्शन के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण तथा उनका धाम वृन्दावन समान रूप से पूज्य हैं। कभी-कभी ऐसे भौतिकवादी भी, जिन्हें कोई आध्यात्मिक-ज्ञान नहीं होता, पर्यटकों के रूप में वृन्दावन जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को कोई अध्यात्मिक लाभ नहीं मिलता। ऐसे व्यक्ति को विश्वास ही नहीं होता कि श्रीकृष्ण तथा वृन्दावन अभिन्न हैं। चूँकि वे अभिन्न हैं, अतएव वृन्दावन श्रीकृष्ण के ही समान पूज्य है। श्रीचैतन्य महाप्रभु की दृष्टि (*मोर-मन वृन्दावन*) सामान्य भौतिकवादी व्यक्ति की दृष्टि से भिन्न है। रथयात्रा उत्सव में श्रीचैतन्य महाप्रभु श्रीमती राधारानी के भाव में निमग्न होकर श्रीकृष्ण को वृन्दावन धाम वापिस खींच लाए। (चै. च. म. ली. 16.281 ता.)

29. जब हम निष्पक्ष होकर भगवान् की अनन्त लीलाओं पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि इस धराधाम में भगवान् की मनुष्य रूप में लीलाएँ, जिनमें वे अपने हाथ में वंशी लिए गोपवेश में खेलते हैं एवं नर्तक की तरह किशोर तथा नवीन लगते हैं, ऐसी लीलायें हैं जिन पर भौतिक नियम तथा दोष लागू नहीं होते। श्रीकृष्ण का अद्‌भुत सौन्दर्य गोकुल (गोलोक वृन्दावन) नामक सर्वोच्च लोक में परिलक्षित होता है। यह स्वरूप आध्यात्मिक आकाश (वैकुंठ लोक) में कुछ कम मात्रा में परिलक्षित होता है तथा उससे कुछ कम मात्रा में उनका स्वरूप बहिरंगा शक्ति (देवी धाम) में परिलक्षित होता है। श्रीकृष्ण के माधुर्य की एक बूंद मात्र इन तीनो लोकों को, गोलोक, हरिलोक (वैकुण्ठ), देवीधाम (भौतिक जगत्) को पूरी तरह डुबा सकती है। श्रीकृष्ण की सुन्दरता सभी को दिव्य आनन्द में निमग्न कर देती है। वास्तव में *योगमाया* के कार्य आध्यात्मिक जगत् तथा वैकुण्ठ लोकों में अप्रकट रहते हैं। योगमाया केवल गोलोक वृन्दावन में कार्यशील रहती है और जब श्रीकृष्ण अपने असंख्य भक्तों को प्रसन्न करने के लिए इस जगत् में अवतरित होते हैं तो वह श्रीकृष्ण के कार्यों को प्रकट करने के लिए कार्य करती है। इस तरह गोलोक वृन्दावन धाम तथा वहाँ की लीलाओं का प्रतिबिम्ब इस लोक के एक विशेष भू-भाग भौम-वृन्दावन या वृन्दावन धाम में प्रकट होता है। (चै. च. म. ली. 21.104 ता.)

30. वहाँ दूसरी प्रकृति है और उस आध्यात्मिक प्रकृति में असंख्य लोक हैं। वे वैकुण्ठ लोक कहलाते हैं। और सबसे श्रेष्ठ वैकुण्ठ लोक 'कृष्ण लोक' या 'गोलोक वृन्दावन' कहलाता है। यह 'वृन्दावन' वास्तविक वृन्दावन का प्रतिरूप है। जब श्रीकृष्ण इस लोक में या इस सृष्टि में प्रकट होते हैं तो वे इसी वृन्दावन में आते हैं। यह 'भौम वृन्दावन' कहलाता है। वास्तव में भौम वृन्दावन और परव्योम वृन्दावन में कोई अन्तर नहीं है। अत: यदि हम श्रीकृष्ण को देखना चाहते हैं तो हमें उपाधियों से मुक्त होना होगा। यही प्रक्रिया है। केवल उपाधियों से ही नहीं अपितु सभी प्रकार की इच्छाओं से भी मुक्त होना होगा। (वृ. भ.र.सि., प्रवचन, 18 अक्तूबर, 1972)

31. यदि आप किसी की पूजा करना चाहते हो तो श्रीकृष्ण को प्रेम करो या श्रीकृष्ण की पूजा करो या उनके धाम वृन्दावन की पूजा करो, चूँकि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी स्थान से प्रेम करना चाहता है। वही अब राष्ट्रीयता है। कोई देश। कोई कहता है, "मैं इस अमरीका की भूमि से प्रेम करता हूँ।" कोई कहता है "मैं चीन से प्रेम करता हूँ।" अत: हर कोई किसी न किसी भूमि

से प्रेम करना चाहता है। "*भौम-इज्यधि*"। "*भौम-इज्यधि*"। लोग स्वभावत: किसी भौतिक भूमि से प्रेम करने की इच्छा रखते हैं, प्राय: जहाँ उनका जन्म हुआ है, वे उससे प्रेम करने का प्रयास करते हैं। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा "चूँकि आपकी रुचि किसी से प्रेम करने की है तो आप श्रीकृष्ण से प्रेम करो। चूँकि आप किसी भूमि से प्रेम करना चाहते हो तो आप वृन्दावन से प्रेम करो "*आराध्यो भगवान् व्रजेश तनयस्तद् धाम वृन्दावनम्*।" किन्तु यदि कोई कहता है "श्रीकृष्ण से कैसे प्रेम करें? मैं श्रीकृष्ण को देख नहीं सकता। श्रीकृष्ण से प्रेम कैसे करूँ?" तब श्रीचैतन्य महाप्रभु कहते हैं, "*रम्या काचिदुपासना व्रजवधू वर्गेण व कल्पिता ...*।" यदि आप श्रीकृष्ण की पूजा करने की प्रक्रिया जानना चाहते हो या श्रीकृष्ण से प्रेम करने की विधि जानना चाहते हो तो गोपियों के चरणचिह्नों का अनुसरण करने का प्रयास करो। (प्रवचन-3 सित०, 1968)

32. भगवान् श्रीकृष्ण, जो व्रजभूमि में (वृन्दावन) में व्रज के राजा (नन्द महाराज) के पुत्र रूप में प्रकट हुए, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और इसलिए सभी के द्वारा पूजनीय हैं। वृन्दावन धाम भगवान् से अभिन्न है क्योंकि उनका नाम, यश, रूप और धाम, जहाँ भगवान् प्रकट हुए, सभी भगवान् के समान हैं। यही वास्तविक ज्ञान है। अत: वृन्दावन धाम भगवान् के समान ही पूजनीय है। भगवान् की सबसे महान् उपासना तो व्रज-वधुओं के माधुर्य प्रेम के रूप में प्रदर्शित हुई है और भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु इसी उपासना-प्रक्रिया की महानतम् उपासना के रूप में संस्तुति करते हैं। (श्री. भा. की भू.)

33. अपनी असीम और अहैतुकी कृपा से पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण अपने आध्यात्मिक लोक से अवतरित होते हैं, और वृन्दावन में, जो कि उनके आध्यात्मिक जगत् कृष्ण-लोक का प्रतिभू रूप है, अपनी निजी लीलाएँ प्रकट करते हैं। (भा.क.प्र.)

34. इस अखिल ब्रह्माण्ड में वृन्दावन अत्यधिक पवित्र स्थान है, और जो लोग भगवान् के धाम में प्रवेश करके आध्यात्मिक उन्नति पाने के इच्छुक हैं, वे वृन्दावन में एक घर बनाकर उन षड्-गोस्वामियों के गम्भीर अनुयायी बन सकते हैं जिन्होंने भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु से उपदेश ग्रहण किया था। षड् गोस्वामियों में श्रील रूप गोस्वामी प्रमुख थे, और श्रील सनातन, श्रील रघुनाथदास, श्रील जीव, श्रील गोपाल भट्ट एवं श्रील रघुनाथ भट्ट उनका अनुसरण करते थे। ये

सभी पूर्ण गम्भीरता के साथ वृन्दावन धाम के रहस्यों के शोधकार्य व खुदाई कार्य में संलग्न थे।

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व वृन्दावन में अवतरित हुए थे, और समय बीतने के साथ वृन्दावन में उनके स्मृतिचिह्न दृष्टि से ओझल हो चुके थे। किन्तु भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु, जो एक महान् भक्त के रूप में साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण ही हैं, पश्चिमी बंगाल के नवद्वीप जिले में अवतरित हुए तथा उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं के पवित्र स्थानों का उत्खनन करवाया। उन्होंने उपरोक्त षड् गोस्वामियों को वृन्दावन के भक्तिमार्ग पर प्रामाणिक साहित्य की रचना करने का आदेश दिया। कोई भी गम्भीर विद्यार्थी जो परम भगवान् के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु हैं, इस अमूल्य साहित्य व प्रामाणिक विद्वानों के निर्देशों का लाभ उठा सकता है। और इस प्रकार वह वृन्दावन के स्वामी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में जान सकता हैं। (भा.क.प्र., 22)

35. समस्त उपदेशों का सार यही है कि मनुष्य अपना सम्पूर्ण समय – चौबीसों घण्टे – भगवान् के दिव्य नाम, दिव्यरूप, गुणों तथा नित्य लीलाओं का सुन्दर ढंग से कीर्तन तथा स्मरण करने में लगाए, जिससे उसकी जीभ तथा मन व्यस्त रहें। इस तरह उसे व्रज (गोलोक वृन्दावन धाम) में निवास करना चाहिए और भक्तों के मार्गदर्शन में श्रीकृष्ण की सेवा करनी चाहिए। उसे भगवान् के उन प्रिय भक्तों के पदचिह्नों का अनुगमन करना चाहिए जो उनकी भक्ति में प्रगाढ़ता से आसक्त हैं। (उ.अ. 8)

36. श्रील नरोत्तमदास ठाकुर, श्रीनिवास आचार्य, श्री जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज, श्री भगवान् दास बाबाजी महाराज, श्री गौर किशोर दास बाबाजी महाराज और इनके बाद कलकत्ता के श्रील भक्तिविनोद ठाकुर सदैव नाम-भजन में लगे रहे। वे और कहीं नहीं अपितु वृन्दावन में ही रह रहे थे। इस समय 'हरे-कृष्ण' आन्दोलन के सदस्य विश्वभर के समृद्ध नगरों में, यथा लन्दन, न्यूयॉर्क, लॉस एंजिलिस, पेरिस, मॉस्को, ज्यूरिख इत्यादि में रहते हैं, परंतु हम श्रील भक्तिविनोद ठाकुर तथा अन्य आचार्यों के पदचिह्नों का अनुसरण करने में ही तुष्ट हैं। चूँकि हम राधा-कृष्ण मन्दिरों में रहते हैं और निरन्तर हरिनाम-संकीर्तन करते रहते हैं, अतएव हम अन्य कहीं नहीं, अपितु वृन्दावन में ही रहते हैं। हम श्रीचैतन्य महाप्रभु के चरणचिह्नों पर चलते हुए विश्वभर के

अपने शिष्यों के दर्शनार्थ वृन्दावन में एक मन्दिर बनवा रहे हैं। (चै. च. म. ली. 16.281 ता.)

37. साधारण व्यक्ति को शारीरिक रूप से अवश्य काम में लगे रहना चाहिए। वह भौतिक नहीं अपितु आध्यात्मिक है। सदा कृष्णभावनामृत से संबधित कार्यों में व्यस्त रहना चाहिए। वही चाहिए, न कि 'ओह! मैं बहुत बड़ा विद्वान् बन गया हूँ, और मैं अब सीख गया हूँ कि बड़ा वैष्णव कैसे बना जाता है। मैं चौंसठ माला जप करता हूँ और अपनी पत्नी के विषय में सोचता हूँ और तब गोविन्दजी से विदाई लो और वृन्दावन छोड़ दो'। ऐसे धूर्त पूरी तरह आदेशों का पालन नहीं करतें। गोविन्दजी ऐसे धोखेबाजों को वृन्दावन से बाहर धकेल देते हैं। अत: जो वृन्दावन में रह रहा है, उसे वृन्दावनचन्द्र के गुणानुवाद को सारे विश्व में फैलाने के लिए बहुत उत्सुक होना चाहिए। इसी की आवश्यकता है। यह नहीं कि वृन्दावनचन्द्र मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति हैं और मैं एक जगह बैठा रहूँ और उन्हें चाटूँ। नहीं, यह नहीं चाहिए। मेरे गुरु महाराज ने इसकी निन्दा की है। (वृ., श्री. भा. प्रवचन, 16 सित० 1976)

38. *तप्तकाञ्चनगौरांगी राधे वृन्दावनेश्वरि।*
वृषभानुसुते देवि प्रणमामि हरिप्रिये।।

राधारानी हरिप्रिया हैं; वे श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय है। अत: यदि हम राधारानी के द्वारा श्रीकृष्ण के पास पहुँचें तो यह बहुत सरल हो जाएगा। यदि राधारानी सिफारिश करें कि, ''यह भक्त बहुत अच्छा है,'' तब श्रीकृष्ण तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं। चाहे मैं कितना भी मूर्ख क्यों न होऊँ। चूँकि इसकी सिफारिश राधारानी द्वारा हुई है, इसलिए श्रीकृष्ण उसे स्वीकार कर लेते हैं। इसलिए वृन्दावन में आप देखेंगे कि सारे भक्त श्रीकृष्ण से अधिक राधारानी का नाम जपते हैं। आप कहीं भी जायें, आप पाएगें कि भक्त सदा ''जय राधे'' पुकारते हैं। आप अभी भी वृन्दावन में देखेंगे कि वे राधारानी का गुणगान कर रहे हैं। वे राधारानी की पूजा में अधिक रुचि लेते हैं। चाहे भक्ति में मैं कितना भी निकृष्ट क्यों न होऊँ, यदि किसी भी तरह मैं राधारानी को प्रसन्न कर लूँ तो मेरे लिए श्रीकृष्ण को समझना सरल हो जाएगा। (लन्दन-प्रवचन, 18 सित०, 1969)

39. यदि हम अपने वर्तमान शरीर से, जब वह स्वस्थ अवस्था में है और हमारा मन भी स्वस्थ है, केवल हरे कृष्ण महामंत्र का जप करते हैं तो मृत्यु के समय पूरी सम्भावना होगी कि हम

श्रीकृष्ण पर अपना मन केन्द्रित कर पायेंगे। यदि हम ऐसा करें तो निस्संदेह हमारा जीवन सफल हो जाएगा। किन्तु यदि हम हमारे मन से सदा इन्द्रियतृप्ति के लिए सकाम कर्मों में लगे रहेंगे तो यह स्वाभाविक है कि मृत्यु के समय हम ऐसे ही कर्मों का विचार करेंगे और पुनः भौतिक बद्ध शरीरों में प्रवेश करने के लिए बाध्य कर दिए जाएँगे, और भौतिक संसार के तीन प्रकार के दुःख आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक भोगेंगे। इसलिए सदा श्रीकृष्ण के विचारों में लीन रहना ही वृन्दावन के वासियों का आदर्श है, जैसा कि नन्द महाराज, यशोदा तथा गोपियों ने प्रदर्शित किया है। यदि हम आंशिक रूप में ही उनके चरणचिह्नों का अनुसरण कर पायें तो हमारा जीवन अवश्य सफल होगा और हम आध्यात्मिक लोक वैकुंठ में प्रवेश कर पायेंगे। (श्रीकृष्ण-46, उद्धव जी की वृन्दावन-यात्रा)

40. एक शुद्ध भक्त भगवान् का अपराध रहित यशोगान करके कहीं भी वैकुण्ठ या वृन्दावन स्थापित कर सकता है। (श्री. भा. 4.30.33 ता.)

41. श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ने इस श्लोक की निम्न प्रकार से टीका की है : "जिसने अभी तक कृष्णभावनामृत का विकास नहीं किया उसे सारी भौतिक वासनाओं को त्याग देना चाहिए और विधि-निषेधों अर्थात् श्रीकृष्ण तथा उनके नाम, रूप, गुण तथा लीलाओं आदि के कीर्तन तथा स्मरण का पालन करते हुए अपने मन को प्रशिक्षित करना चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त विधि के लिए रुचि उत्पन्न करके मनुष्य को वृन्दावन में रहने तथा श्रीकृष्ण के नाम, यश, लीलाओं तथा गुणों का स्मरण करने में अपना समय बिताना चाहिए। भक्ति के अनुशीलन में समस्त उपदेशों का यही सारांश है।" (उ. अ.-8 ता.)

42. तब भगवान् श्रीगौरसुन्दर प्रभु ने सनातन गोस्वामी से कहा कि साधु-संग, भगवान् श्रीकृष्ण की प्रेमामयी सेवा, श्रीमद् भागवत पाठ (अध्ययन), भगवन्नाम-कीर्तन-जप, वृन्दावन या मथुरा जैसे पवित्र स्थान में वास, ये पाँच साधन दिव्य स्तर तक पहुँचने के लिए अतिशय आवश्यक है। किसी भी भक्त को इन पाँचों में दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है, इनमें से केवल एक में दक्ष होने पर निस्संदेह श्रीकृष्ण प्रेम की प्राप्ति होगी। (भ. चै. म. शि. 16, सनातन गोस्वामी को दी गई शिक्षाओं का निष्कर्ष)

43. उन्होंने गोवर्धन पूजा तथा उसकी परिक्रमा सम्पन्न की। (उस समय से स्थापित गोवर्धन पूजा का अनुसरण करते हुए आज भी वृन्दावनवासी सुन्दर वस्त्र पहनकर गोवर्धन पर्वत की पूजा करने और गौवों को आगे करके परिक्रमा करने के लिए एकत्र होते हैं।) (श्रीकृष्ण-24, गोवर्धन पर्वत की पूजा)

44. सबसे अच्छी बात है कि मुझे दवाई न दो और कृपया मुझे कुछ परिक्रमा करवा दो और मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दो - मैं केवल एक बार परिक्रमा करना चाहता हूँ। यदि परिक्रमा से बेहोशी होती है या मृत्यु भी, तो बहुत यशस्वी बात है। मैं वही चाहता हूँ। (श्री प्रभुपाद जागरण, वृ., 1 नवम्बर, 1977)

45. ''इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने ग्वालों को परामर्श दिया कि वे इन्द्र-यज्ञ बन्द कर दें और इन्द्र को दण्ड देने के लिए गोवर्धन पूजा शुरू करें, क्योंकि इन्द्र इस स्वर्गलोक का परम नियन्ता होने के कारण अत्यधिक गर्वित हो उठा है। नन्द महाराज सहित सारे सरल ग्वालों ने श्रीकृष्ण का प्रस्ताव मान लिया और श्रीकृष्ण ने जो भी कहा उसे विस्तारपूर्वक सम्पन्न किया। उन्होंने गोवर्धन की पूजा तथा प्रदक्षिणा की। नन्द महाराज तथा ग्वालों ने विद्वान् ब्राह्मणों को बुलाकर वैदिक-मन्त्रों के उच्चारण सहित प्रसाद अर्पित करके गोवर्धन की पूजा प्रारम्भ की। वृन्दावन के सारे निवासी एकत्र हुए, उन्होंने अपनी गाएँ सजाईं और उन्हें खाने के लिए घास दी और फिर गायों को आगे करके वे गोवर्धन की परिक्रमा करने लगे। (चै.च.म.ली. 4.86 ता.)

46. मैं उन्हें समझ नहीं पाता था, किन्तु मैं उनसे श्रवण करके बहुत प्रसन्न होता था। बस यही। तो यही मेरी योग्यता थी, आप कुछ भी कहो। मैं केवल यही पूछता ''गुरु महाराज कब बोलेंगे ? वे कब बोलेंगे ? कब ?'' और मैं बैठ जाता और सुनता रहता, मैं समझता या नहीं समझता; दूसरे सब उठकर चले जाते, किन्तु मैं वहाँ से नहीं जाता। उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया था। एक बार की बात है। उस समय तक मैं दीक्षित नहीं था। वहाँ सम्पूर्ण वृन्दावन की परिक्रमा का कार्यक्रम था। अत: चाहे मैं दीक्षित नहीं था, तो भी कुछ महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक था। अत: मैंने सोचा, ''मुझे जाना चाहिए। ये सभी वृंदावन की परिक्रमा कर रहे हैं।'' मैं मथुरा गया और वहाँ से वृन्दावन के आंतरिक भाग में गया, जो कोसी कहलाती थी। वहाँ कोसी में मेरे एक गुरु भाई ने

सूचना दी, "प्रभुपाद कल मथुरा वापस जा रहे हैं। अत: वे इस संध्या प्रवचन देंगे। अत: जो भी उन्हें सुनना चाहता है, वह रुक सकता है। और दूसरे चलने को तैयार हो...." बैठ जाओ। (कोलम्बस के कमरे में वा. 10 मई, 1969)

47. वृन्दावन में लगभग पाँच हजार मन्दिर हैं। निस्संदेह इन सबों का दर्शन कर पाना सम्भव नहीं है, किन्तु कम से कम एक दर्जन ऐसे बहुत बड़े और महत्वपूर्ण मन्दिर हैं, जिन्हें गोस्वामियों ने स्थापित किया था और जिनका दर्शन अवश्य करना चाहिए। हर एक भक्त को मन्दिर की कम से कम तीन परिक्रमाएँ करनी चाहिये। (हर मन्दिर में उसके चारों ओर कम से कम तीन बार परिक्रमा करने के लिए व्यवस्था रहती है। कुछ भक्त अपने व्रत के अनुसार तीन से अधिक परिक्रमाएँ करते हैं- दस बार, पंद्रह बार। गोस्वामीगण तो गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा किया करते थे।) सम्पूर्ण वृन्दावन क्षेत्र की भी परिक्रमा करनी चाहिए। (भ.र.सि.-6 प्रेमामयी सेवा कैसे की जाए)

48. यहाँ वृन्दावन में मैं अपने शिष्यों के प्रवचनों का आनन्द ले रहा हूँ। अत: प्रत्येक भक्त को प्रतिदिन दोनों बार कक्षाओं में अवश्य उपस्थित होना चाहिए। प्रात:काल और संध्या समय कोई काम नहीं होना चाहिए, केवल कीर्तन, जप, नृत्य करो और शुद्ध होओ। परमहंस मत बनो कि अब मुझे श्रीमद्‌भागवत् और भगवद्‌गीता का श्रवण नहीं करना। अपने गुरु महाराज से अच्छे परमहंस मत बनो। मैं जाता हूँ और बैठता हूँ और उनके प्रवचनों का आनन्द लेता हूँ और देखता हूँ कि वे कैसे कीर्तन कर रहे हैं। अत: जैसे मैं कर रहा हूँ तुम्हें भी वैसे ही करना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 19 सित० 1974)

49. यह वर्तमान वृन्दावन गौड़ीय वैष्णवों द्वारा स्थापित किया गया है; जब से छ: गोस्वामी यहाँ आये और उन्होंने विभिन्न मन्दिरों की स्थापना की। वृन्दावन के सभी मन्दिरों में 90% तो गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायों के हैं, जो श्रीचैतन्य महाप्रभु एवं नित्यानन्द की शिक्षाओं के अनुयायी हैं और उनमें से सात मन्दिर बहुत प्रसिद्ध हैं। व्रजवासी तो राधा और श्रीकृष्ण की पूजा के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते। (चै.च.आ.ली. 5.155 ता.)

50. जब रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी वृन्दावन आए तो वहाँ एक भी मन्दिर नहीं था। किन्तु अपने प्रचार द्वारा उन्होंने धीरे-धीरे अनेक मन्दिर बनवाए। सनातन गोस्वामी ने मदनमोहन

मन्दिर बनवाया और रूप गोस्वामी ने गोविन्दजी मन्दिर। इसी प्रकार उनके भतीजे जीव गोस्वामी ने राधा-दामोदर मन्दिर, श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी ने राधारमण मन्दिर, श्री लोकनाथ गोस्वामी ने गोकुलानन्द मन्दिर तथा श्यामानन्द गोस्वामी ने श्यामसुन्दर मन्दिर का निर्माण कराया। इस तरह धीरे-धीरे अनेक मन्दिर बने। प्रचार-कार्य के लिए मन्दिरों का निर्माण भी आवश्यक है। इन गोस्वामियों ने केवल ग्रंथ ही नहीं लिखे, अपितु मन्दिर भी बनवाए, क्योंकि प्रचार-कार्य के लिए इन दोनों की आवश्यकता होती है। श्रीचैतन्य महाप्रभु चाहते थे कि उनका संकीर्तन आन्दोलन सारे विश्व में फैल जाए। अब चूँकि अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ ने चैतन्य सम्प्रदाय के प्रचार का यह कार्य अपने हाथों में ले रखा है, अतएव इसके सदस्यों को न केवल विश्व के प्रत्येक नगर तथा ग्राम में मन्दिर बनवाने चाहिए, अपितु जो पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, उनका वितरण भी करना चाहिए और इन पुस्तकों की संख्या को और भी बढ़ाना चाहिए। पुस्तकों का वितरण तथा मन्दिरों का निर्माण कार्य साथ-साथ चलना चाहिए। (चै.च.आ.ली. 7.164 ता.)

51. भगवान् श्रीकृष्ण आदि भगवान् हैं और समस्त अवतारों के उद्‌गम हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ऐसे शुद्ध भक्तों की चिन्ताओं को दूर करने के विशिष्ट प्रयोजन से अवतार लेते हैं जो उनकी मूल वृन्दावन लीलाओं को देखने के लिए उत्सुक रहते हैं। अत: अवतार का मूल उद्देश्य अपने निष्काम भक्तों को प्रसन्न करना है। (भग. गी. 4.8 ता.)

52. संन्यास आश्रम में स्थित प्रत्येक व्यक्ति का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह मनुष्यों के लाभ के लिए कोई साहित्यिक कृति प्रदान करे, जिससे उन्हें आत्मसाक्षात्कार की अनुभूति के लिए दिशा प्राप्त हो सके। श्री सनातन, श्री रूप तथा वृन्दावन के अन्य गोस्वामियों के संन्यास काल में अन्य कर्तव्यों में से उनका सर्वप्रथम कर्तव्य वृन्दावन के सेवाकुंज जैसे स्थानों पर पारस्परिक शास्त्र चर्चा करना था। (जिस स्थान पर श्रील जीव गोस्वामी ने श्रीराधा दामोदर मन्दिर की स्थापना की, वहीं श्री रूप गोस्वामी एवं श्रील जीव गोस्वामी की समाधियाँ भी स्थित हैं।) वे मानव-समाज के कल्याण हेतु दिव्य-ज्ञान से भरे साहित्य अपने पीछे छोड़ गए। इसी प्रकार समस्त आचार्यों ने, जिन्होंने स्वेच्छा से संन्यास आश्रम ग्रहण किया, मानव समाज को लाभ पहुँचाना ही अपना लक्ष्य बनाया, न कि वे सुखपूर्ण गैर जिम्मेदार जीवन व्यतीत करके अन्यों के ऊपर भार बनकर रहे। (श्री.भा. 2.2.5 ता.)

53. भगवान् अपने नि:स्वार्थी शुद्ध भक्तों की सम्पत्ति हैं और इसीलिए केवल एक भक्त ही दूसरे भक्त को श्रीकृष्ण दे सकता है। श्रीकृष्ण को हम कभी भी सीधे प्राप्त नहीं कर सकते। अतएव भगवान् श्रीचैतन्य ने अपने आपको '*गोपी भर्तुः पदकमलयोर्दास दासानुदास*' या ऐसे भगवान् के अत्यन्त आज्ञाकारी दासों का दास कहा जो वृन्दावन में गोपियों के पालनकर्ता हैं। अत: शुद्ध भक्त कभी भी सीधे नहीं जाता, अपितु वह भगवान् के दासों के दास को प्रसन्न करने का प्रयास करता है और तब भगवान् उससे प्रसन्न हो जाते हैं और तभी भक्त भगवान् के चरणकमलों पर अर्पित तुलसीदलों का आस्वादन कर सकता है। 'ब्रह्म-संहिता' में कहा गया है कि वैदिक साहित्य का प्रकांड पंडित बनने से भगवान् नहीं मिलते, अपितु वे अपने शुद्ध भक्त के माध्यम से सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। वृन्दावन में सभी शुद्ध भक्त श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति श्रीमती राधारानी से कृपा की प्रार्थना करते हैं। श्रीमती राधारानी परम पुरुषोत्तम भगवान् की कोमल हृदया अर्धाङ्गिनी हैं, जो संसार की स्त्रीरूपा प्रकृति की सिद्धावस्था की प्रतिमूर्ति हैं। अतएव निष्कपट भक्तों को राधारानी की कृपा सरलता से प्राप्त हो जाती है और एक बार जब वे भगवान् श्रीकृष्ण से ऐसे भक्त का अनुमोदन करती हैं तो भगवान् उसे तुरन्त ही अपना नित्य पार्षद बना लेते हैं। अत: निष्कर्ष यही है कि मनुष्य को भगवान् के भक्त की कृपा प्राप्त करने के लिए अधिक गंभीर होना चाहिए न कि सीधे भगवान् की। और ऐसा करने से (भक्त की कृपा से) भगवान् की सेवा करने का स्वाभाविक आकर्षण पुन: जागृत हो उठेगा। (श्री. भा. 2.3.23 ता.)

54. इस पृथ्वी पर दिल्ली से 90 मील दक्षिण-पूर्व में स्थित वृन्दावन आध्यात्मिक आकाश में स्थित गोलोक-वृन्दावन का प्रतिरूप है। जब भगवान् श्रीकृष्ण इस धराधाम पर अवतरित हुए तो उन्होंने भारत में मथुरा जिले के चौरासी कोस वर्गमील में फैली हुए उस विशेष भूमि पर लीलाएं सम्पन्न की जो वृन्दावन कहलाता है। (भग. गी. 8.21 ता.)

55. आधुनिक दिल्ली से लेकर उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले तक लगभग एक सौ वर्गमील का भूखण्ड जिसमें हरियाणा प्रदेश के गुड़गांव जिले का कुछ अंश सम्मिलित है, सारे भारत में तीर्थयात्रा के लिए सर्वोपरि स्थान माना जाता है। यह भू-भाग पवित्र है, क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने इस भू-भाग की कई बार यात्रा की थी। उनका जन्म मथुरा में अपने मामा कंस के यहाँ हुआ और बाद में उनके पालक पिता नन्द महाराज ने उनका पालन किया। आज भी वहाँ भगवान् के

कई भक्त श्रीकृष्ण तथा उनकी बचपन की सखियों (गोपियों) की खोज में भावविभोर होकर घूमते रहते हैं। ऐसा नहीं है कि उस भू-भाग में ऐसे भक्त श्रीकृष्ण का प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं, किन्तु भक्त द्वारा उत्सुकतापूर्वक श्रीकृष्ण की खोज करते रहना उनके साक्षात् दर्शन के ही समान है। ऐसा कैसे है ? इसकी व्याख्या तो नहीं की जा सकती है, किन्तु जो भगवान् के शुद्ध भक्त हैं उनके द्वारा ऐसा अनुभव किया जाता है। दार्शनिक रूप से मनुष्य यह समझ सकता है कि भगवान् श्रीकृष्ण तथा उनका चिन्तन परम स्तर पर है और शुद्ध चेतना में उनकी खोज करने का भाव उनके साक्षात्-दर्शन करने की अपेक्षा भक्त को अधिक आनन्द प्रदान करता है। ऐसे भगवान् के शुद्ध भक्त प्रतिक्षण उनका साक्षात् दर्शन करते रहते हैं, जिसकी पुष्टि ब्रह्म-संहिता में (5.38) हुई है -

प्रेमाञ्जनच्छुरित भक्ति विलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्य गुणस्वरूपं
गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि।।

"जो स्वयं श्यामसुंदर श्रीकृष्ण हैं, जिनके अनेकानेक अचिन्त्य गुण हैं तथा जिनका शुद्ध भक्त प्रेम के अंजन से रञ्जित भक्ति के नेत्रों द्वारा अपने अन्तर्हृदय में दर्शन करते हैं, उन आदिपुरुष भगवान् गोविंद का मैं भजन करता हूँ।" विदुर तथा उद्धव दोनों ही ऐसे उच्च श्रेणी के भक्त थे, अतएव दोनों ही यमुना के तट पर आये और एक दूसरे से मिले। (श्री. भा. 3.1.24 ता.)

56. यमुना के तट पर स्थित सभी वन सुन्दर बगीचे थे, जो आम, कटहल, सेब, अमरूद, नारंगी, अंगूर, बेर, ताड़फल के पेड़ों तथा अन्य कई पौधों और सुगन्धित पुष्पों से भरे थे। चूँकि यह वन यमुना के तट पर थे, अतएव स्वाभाविक है कि यहाँ बत्तख, सारस तथा वृक्ष की शाखाओं पर मोर होते। ये सारे वृक्ष, पक्षी एवं पशु पुण्यवान जीव थे, जिन्होंने वृन्दावन के दिव्य-धाम में भगवान् एवं उनके नित्य-संगी ग्वालबालों को आनन्द प्रदान करने के लिए जन्म लिया था। (श्री. भा. 3. 2.27 ता.)

57. भगवान् के बचपन की क्रीड़ास्थली वृन्दावन की भूमि आज भी है और जो कोई भी इन स्थानों में जाता है वह वही दिव्य आनन्द पाता है, चाहे भगवान् हमारी अपूर्ण आँखों से साकार रूप में दृष्टिगोचर नहीं होते। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भगवान् की इस भूमि को भगवान् से अभिन्न बतलाया है, अतएव यह भक्तों द्वारा पूजनीय है। इस उपदेश को श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुयायी, जो गौड़ीय वैष्णव कहलाते हैं, विशेष रूप से मानते हैं। चूँकि यह भूमि भगवान् से अभिन्न है, अतएव उद्धव तथा विदुर जैसे भक्तों ने 5000 वर्ष पूर्व इन स्थानों का भ्रमण किया जिससे वे दृश्य या अदृश्य भगवान् से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित कर सकें। आज भी भगवान् के हजारों भक्त वृन्दावन के इन पवित्र स्थानों में भ्रमण करते हैं और इस तरह वे पुनः भगवद्धाम जाने की तैयारी करते हैं। (श्री. भा. 3.2.27 ता.)

58. जिस तरह लोहे का चुम्बक के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है, इसी तरह सभी जीवों का श्रीकृष्ण के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है और इसलिए भगवान् का वास्तविक नाम 'कृष्ण' है अर्थात् जो सभी जीवों को अपनी ओर आकर्षित करें। ऐसे आकर्षण के विशेष उदाहरण वृन्दावन में प्राप्त होते हैं, जहाँ सब कुछ तथा सब कोई श्रीकृष्ण से आकर्षित है। नन्द महाराज और यशोदा जैसे वरिष्ठजन श्रीदामा, सुदामा तथा अन्य गोप बालकों जैसे मित्र, राधारानी तथा उनकी सखियों जैसी गोपियाँ और यहाँ तक कि पक्षी, पशु और गाएँ भी आकर्षित होती हैं। बगीचे में फल और फूल भी श्रीकृष्ण से आकर्षित होते हैं, यमुना की लहरें आकर्षित होती हैं; पृथ्वी, आकाश, पेड़, पौधे, जानवर और अन्य जीवात्मायें भी आकर्षित होती हैं। वृन्दावन में सभी की यह स्वाभाविक स्थिति है। (श्री. भा. 5.8.26 ता.)

59. भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्य का वास्तविक उद्देश्य तो यह दिखलाना था कि मनुष्य परम पुरुष भगवान् के साथ प्रेम-व्यवहार में किस तरह भाग ले सकता है। भावावेश में प्रेम-व्यवहार का आदान-प्रदान केवल वृन्दावन में ही सम्भव है। इसलिए वसुदेव के पुत्र रूप में प्रकट होते ही उन्होंने तुरन्त वृन्दावन के लिए प्रस्थान किया। वृन्दावन में वे न केवल अपने माता-पिता, गोपों तथा गोपियों के प्रेम-व्यवहार में सम्मिलित हुए अपितु अनेक असुरों को मारकर उन्हें मोक्ष भी प्रदान किया। (श्री. भा. 9.24.66 ता.)

60. "व्रजभूमि" के अन्तर्गत मथुरा-वृन्दावन आता है और 'गौड़-मण्डल' भूमि के अन्तर्गत नवद्वीप आता है। ये दोनों स्थान अभिन्न हैं। इसलिए नवद्वीप धाम का कोई भी वासी जो श्रीकृष्ण तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु को एक रूप में जानता है, वह व्रजभूमि मथुरा-वृन्दावन में ही वास करता है। महाप्रभु ने बद्धजीव के लिए मथुरा, वृन्दावन तथा नवद्वीप में वास करना और भगवान् से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना आसान बना दिया है। इन स्थानों पर रहने मात्र से ही मनुष्य भगवान् के सम्पर्क में तुरंत आ सकता है। ऐसे अनेक भक्त हैं जो वृन्दावन तथा मथुरा छोड़कर कभी भी अन्यत्र न जाने का व्रत लेते हैं। यह अच्छी बात है, किन्तु *यदि कोई व्यक्ति भगवान् की सेवा करने के लिए वृन्दावन, मथुरा या नवद्वीप धाम छोड़ता है तो उसका सम्बन्ध भगवान् से टूटता नहीं।* जो भी हो, हमें मथुरा-वृन्दावन तथा नवद्वीप धाम के दिव्य महत्त्व को समझना चाहिए। जो इन स्थानों में रहकर भक्ति करता है वह शरीर त्यागने के बाद निश्चित् रूप से भगवद्धाम जाता है। अत: *मथुरा भगवान् यत्र नित्यं सन्निहितो हरिः* - ये शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं। भक्त को चाहिए कि यथाशक्ति इस उपदेश का लाभ उठाए। जब भी भगवान् अवतीर्ण होते हैं तो इस मथुरा क्षेत्र में ही अवतीर्ण होते हैं, क्योंकि इस स्थान से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए मथुरा तथा वृन्दावन इस धराधाम में स्थित होकर भी श्रीभगवान् के दिव्य धाम हैं। (श्री.भा. 10.1.28 ता.)

61. जहाँ तक हमारी बात हैं, हमें किसी नगर या गाँव या विदेश जाने की आवश्यकता नहीं है। नगरों में बड़े-बड़े महल हैं, किन्तु हम तो वृन्दावन के इसी जंगल में रहकर ही संतुष्ट हैं। विशेष रूप से हमारा सम्बन्ध गोवर्धन-पर्वत तथा वृन्दावन के जंगल से है, अन्य किसी से नहीं। (श्रीकृष्ण 24, गोवर्धन पर्वत की पूजा)

62. भक्ति में उन्नत एवं परिपक्व, भगवान् चैतन्य महाप्रभु के, गोस्वामी शिष्यों ने कभी नहीं कहा "मैंने श्रीकृष्ण को देखा है।" अपितु वे अनवरत विलाप करते थे, "राधारानी कहाँ है?" "ललिता कहाँ हैं, विशाखा कहाँ है? और वृन्दावन की अन्य गोपबालाएँ कहाँ हैं?" गोस्वामीगण जब अपने प्रेम की परिपक्व अवस्था में थे और वृन्दावन में रह रहे थे, तो यह कहकर भी विलाप करते थे "राधारानी आप कहाँ हो?" "आपकी सखियाँ कहाँ हैं?" "ओ! नन्द महाराज के पुत्र आप कहाँ हो?" "आप सब कहाँ हो?" इस तरह वे सदा श्रीकृष्ण की खोज करते थे, और

उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं कहा, "मैंने कल रात श्रीकृष्ण को गोपियों के साथ नृत्य करते हुए देखा"। कोई भी परिपक्व शिष्य कभी ऐसे दावे नहीं करते; ऐसे दावें केवल वे व्यक्ति करते हैं जो भगवान् कृष्ण की लीलाओं को बहुत सस्ता समझते हैं। कुछ लोग राधा और श्रीकृष्ण को इतना सस्ता समझते हैं कि मानो उन्हें हर रात देखा जा सकता है, परन्तु यह उन गोस्वामियों की शिक्षा नहीं, जो सदा विलाप करते हुए श्रीकृष्ण की खोज करते थे, "आप कहाँ हो? राधारानी आप कहाँ हो? श्रीकृष्ण आप कहाँ हो? क्या आप गोवर्धन की तलहटी पर हो? क्या आप यमुना के तट पर हो?'' इस तरह वे सम्पूर्ण वृन्दावन में मदोन्मत्त होकर विलाप करते हुए राधा और श्रीकृष्ण को खोजते थे। (कृष्णभावनामृत की प्रतीति-5, श्रीकृष्ण की शक्तियों का ज्ञान)

63. ''हे प्रभु! इन वृन्दावनवासियों के सौभाग्य को कोई भी भली-भाँति नहीं जान सकता। हम सारे देवता जीवों की विभिन्न इन्द्रियों को नियन्त्रित करते हैं और हम इसी पर गर्वित रहते हैं, किन्तु हमारी स्थिति तथा इन भाग्यवान वृन्दावनवासियों की स्थिति की कोई तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि वे अपने कार्यों से आपकी उपस्थिति तथा संगति का रसास्वादन कर रहे हैं। भले ही हमें इन्द्रियों के नियामक होने का गर्व हो, किन्तु ये वृन्दावनवासी इतने दिव्य हैं कि वे हमारे नियन्त्रण में नहीं आते। वास्तव में वे आपकी सेवा के माध्यम से इन्द्रियों का सुखोपभोग कर रहे हैं। अत: इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानूँगा कि भविष्य में मुझे वृन्दावन की इस स्थली में जन्म लेने का सुअवसर प्राप्त हो सके।''

"अत: हे प्रभु! मुझे न तो भौतिक ऐश्वर्य की कामना है न मुक्ति की ही। आपके चरण-कमलों में मेरी यही विनीत प्रार्थना है कि आप इस वृन्दावन जंगल के अंतर्गत मुझे किसी भी प्रकार का जन्म दें, जिससे मुझे वृन्दावन के कुछ भक्तों की चरणरज प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हो।'' (श्रीकृष्ण-14, ब्रह्म जी द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुतियाँ)

64. आध्यात्मिक जगत् वह स्थान है, जहाँ कोई भी कभी भी श्रीकृष्ण को नहीं भूलता। वैदिक साहित्य में आध्यात्मिक जगत् की यह भी एक परिभाषा है। इसलिए हमें अपने जीवन को इस तरह से नियोजित करना चाहिए कि हमारे लिये एक पल के लिए भी श्रीकृष्ण को भुलाना सम्भव न हो। इस तरह श्रीकृष्ण की सेवा में लिप्त रहकर हम सदा श्रीकृष्ण के निवास स्थान वैकुण्ठ या

वृन्दावन में रह सकते हैं। (श्रीकृष्णभावनामृत एक अनुपम भेंट, 7, कृष्णभावनामृत में मुक्ति)

65. श्रील रूप गोस्वामी ने कहा है, "जब मनुष्य वास्तव में भौतिक कल्मष से मुक्त हो जाता है तो वह भी एक वृन्दावनवासी भक्त का नित्य स्मरण कर उसी के समान श्रीकृष्ण से प्रेम कर सकता है। ऐसी मनोवृत्ति (भाव) विकसित हो जाने पर वह सदैव, यहाँ तक कि अपने मन के भीतर भी, वृन्दावन में वास करेगा"। तात्पर्य यह है कि यदि सम्भव हो तो मनुष्य को सशरीर व्रजभूमि अर्थात वृन्दावन में रहना चाहिए और व्रजधाम के भक्तों का अनुसरण करते हुए सदैव भगवान् की सेवा में रत होना चाहिए। किन्तु यदि सशरीर वृन्दावन में रह पाना सम्भव न हो पाये तो कहीं भी रहते हुए ऐसी स्थिति का ध्यान किया जा सकता है। व्यक्ति चाहे जहाँ भी रहे उसे ब्रजधाम में जीवन के विषय में तथा भगवद्भक्ति में लगे किसी विशेष भक्त के पदचिह्नों का अनुसरण करने के विषय में सदैव सोच-विचार करना चाहिए। (भ.र.सि.-16, स्वाभाविक प्रेम का विस्तृत वर्णन)

66. एक मोटे से अनुमान के अनुसार श्रील रूप गोस्वामी ने 'भक्तिरसामृत सिन्धु' की रचना सन् 1552 में गोकुल वृन्दावन में पूर्ण की। अपने जीवनकाल में श्रील रूप गोस्वामी वृन्दावन के विभिन्न भागों में रहे और उनका मुख्य केन्द्र वर्तमान वृन्दावन शहर का राधादामोदर मन्दिर था। श्रील रूप गोस्वामी की भजन-स्थली तथा उनके द्वारा प्रेमाभक्ति का पालन आज भी स्मरण किया जाता है। राधादामोदर मन्दिर में दो अलग-अलग गुम्बद हैं जिनमें से एक उनकी भजन-स्थली कहलाती है और दूसरे में उनकी समाधि है। इस समाधि के पीछे ही मेरी भजन-स्थली है। (भ.र. सि. उपसंहार)

67. श्रील रूप गोस्वामी आगे सलाह देते हैं - *तिष्ठन् व्रजे* - मनुष्य को वृन्दावन या व्रजभूमि के किसी स्थान में रहना चाहिए। व्रजभूमि या वृन्दावन की भूमि चौरासी कोस के क्षेत्रफल तक मानी जाती है। एक कोस दो वर्गमील के बराबर होता है। जब कोई वृन्दावन को अपना आवास बनाए तो उसे किसी समुन्नत भक्त की शरण ग्रहण करनी चाहिए। इस तरह भक्त को सदा श्रीकृष्ण और उनकी लीलाओं का चिन्तन करना चाहिए। (उ. अ.-8 ता.)

68. जिसे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हो चुका है, वह सदैव वृन्दावन अर्थात वैकुण्ठ में वास करता

है। भले ही भक्त वृन्दावन से दूर किसी स्थान में रहता प्रतीत हो, किन्तु वह सदैव वृन्दावन में रह रहा होता है, क्योंकि वह जानता है कि श्रीकृष्ण सर्वत्र विद्यमान हैं; यहाँ तक कि परमाणु में भी। परमेश्वर महानतम् से महान् और लघुतम् से लघु हैं। एक बार कृष्णभावनामृत की पूर्ण अनुभूति होने और उसमें स्थिर होने पर श्रीकृष्ण हमारी दृष्टि से कभी भी ओझल नहीं होते और हमारा आनन्द सदैव बढ़ता जाता है। यही वास्तविक योग-प्रणाली अर्थात् भक्तियोग है, जिसकी घोषणा भगवान् ने स्वयं भगवद्गीता में की है। (योग की पूर्णता-1, योग एक कार्य)

69. भक्ति के द्वारा अर्थात् श्रीकृष्ण के प्रति शुद्ध-भक्ति के माध्यम से हम माया का संग छोड़ सकते हैं और श्रीकृष्ण का नित्य संग प्राप्त कर सकते हैं। श्रीकृष्ण के कुछ ग्वाले मित्र उनके नित्य-पार्षद हैं और अन्य लोग उस नित्य पद तक प्रगति करते हैं। यदि श्रीकृष्ण के साथ केवल उनके नित्य पार्षद ही खेल सकते हैं अन्य नहीं, तो कृष्णभावनाभावित होने का क्या अर्थ है? हम भी अनेकानेक जन्मों में सम्पन्न पुण्यकर्मों के द्वारा श्रीकृष्ण के नित्य पार्षद बन सकते हैं। वास्तव में भौम-वृन्दावन (अर्थात् इस जगत् में प्रकट वृन्दावन) में श्रीकृष्ण के नित्य संगी तो वे बद्धजीव हैं, जो कृष्णभावनामृत की पूर्ण अवस्था तक प्रगति कर चुके हैं। इस तरह प्रगति प्राप्त बद्धजीवों को सर्वप्रथम श्रीकृष्ण के दर्शन ऐसे लोक में कराए जाते हैं, जहाँ श्रीकृष्ण अपनी लीलाएँ प्रकट करते हैं। इसके बाद वे आध्यात्मिक जगत् स्थित गोलोक वृन्दावन में प्रवेश प्राप्त करते हैं। (योग की पूर्णता-8, योग में सफलता और असफलता)

70. कृष्णभावनाभावित व्यक्ति किसी तरह से विचलित नहीं होता, क्योंकि उसका मन सदैव श्रीकृष्ण पर केन्द्रित रहता है। '*सततम्*' शब्द का अर्थ है कि वह सभी जगह तथा हर समय श्रीकृष्ण का चिन्तन करता रहता है। जब श्रीकृष्ण इस पृथ्वी पर अवतरित हुए वे वृन्दावन में प्रकट हुए। यद्यपि मैं इस समय अमरीका में रह रहा हूँ, किन्तु मेरा निवास स्थान वृन्दावन में हैं, चूँकि मैं सदैव श्रीकृष्ण का चिन्तन करता हूँ। भले ही मैं न्यूयॉर्क के एक मकान में होऊँ, किन्तु मेरी चेतना वहीं पर है और यह ऐसा ही है जैसा कि मैं वहीं हूँ। (योग की पूर्णता-9, मृत्यु के पश्चात् लक्ष्य)

71. शुद्ध भक्ति सभी अभिलाषाओं से मुक्त होती है; प्रेमामयी सेवा करने का एकमात्र उद्देश्य

केवल उसी सेवा को करना है। श्रील रूप गोस्वामी के जीवन में एक सुन्दर उदाहरण है। श्रील रूप गोस्वामी और उनके बड़े भाई श्रील सनातन गोस्वामी श्रीधाम वृन्दावन में अलग-अलग स्थानों पर निवास किया करते थे और अपने भजन तथा सेवा में संलग्न रहते थे। श्रील रूप वन में रहे थे और वहाँ स्वादिष्ट भोजन बनाने की या गाँव से मधुकरी (पका हुआ भोजन) लाने की कोई सुविधा नहीं थी। श्रील रूप गोस्वामी ने सोचा, "यदि कुछ सामग्री प्राप्त कर सकूँ, तो मैं मधुर भोजन बनाकर श्रीकृष्ण को भोग लगाऊँ और बड़े भाई को प्रसाद-सेवा के लिए आमंत्रित करूँ।" उनकी यह अभिलाषा थी। अगले ही पल, लगभग 12 वर्ष की एक सुन्दर बालिका वहाँ आई और उसने पर्याप्त मात्रा में दूध, आटा, घी इत्यादि उनको प्रदान किया। यह वैदिक प्रणाली है, कभी-कभी गृहस्थ लोग साधु या संन्यासियों को भोजन सामग्री देते हैं। श्रील रूप गोस्वामी अत्यन्त प्रसन्न हुए कि श्रीकृष्ण ने इतनी सारी भोजन सामग्री भेज दी और इनसे कई प्रकार के कृष्ण-प्रसाद बन सकते हैं। उन्होंने नाना प्रकार के व्यंजन बनाये और फिर अपने बड़े भाई को निमन्त्रण दिया।

जब श्रील सनातन गोस्वामी वहाँ आए, तो बड़े आश्चर्यचकित हुए। "तुमने इतनी सारी भोजन सामग्री कैसे एकत्रित की? तुमने जंगल में इतनी बढ़िया दावत तैयार की है! यह कैसे सम्भव हुआ?

श्रीरूप गोस्वामी ने बताया, "प्रात: काल मैंने सुन्दर प्रसाद बनाने की इच्छा प्रकट की और संयोगवश श्रीकृष्ण ने मुझे यह सब वस्तुएँ भेज दीं। एक सुन्दर बालिका आई और उसने यह सारी सामग्री मुझे प्रदान की।" वे उस बालिका का वर्णन कर रहे थे : "एक अत्यन्त सुन्दर बालिका।"

तो श्रील सनातन ने कहा, "वह सुन्दर बालिका श्रीमती राधारानी हैं। तुमने भगवान् की नित्य संगिनी राधारानी से सेवा ली। यह तो बहुत भारी गलती है।" यह उन लोगों की भावना है। वे भगवान् से सेवा स्वीकार नहीं करते। गोस्वामी लोग तो केवल भगवान् की सेवा करना चाहते थे, किन्तु श्रीकृष्ण इतने चतुर हैं कि वे भी अपने भक्तों की सेवा करना चाहते हैं। श्रीकृष्ण अपने भक्तों की सेवा करने का अवसर ढूँढा करते हैं। यह आध्यात्मिक प्रतिस्पर्धा है। शुद्ध भक्त श्रीकृष्ण से कुछ भी नहीं चाहते, वे केवल उनकी सेवा करना चाहते हैं और श्रीकृष्ण सदा अपने भक्तों की

सेवा करने का सुअवसर ढूँढते हैं। श्रीकृष्ण सदा ही अपने भक्तों को प्रसन्न करने के लिए उतने ही अधीर रहते हैं, जितने कि भक्त उन्हें प्रसन्न करने के लिए। (आत्मसाक्षात्कार का विज्ञान-8 सिद्धि की प्राप्ति)

72. 'श्री चैतन्य-चरितामृत' के रचयिता श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी वृन्दावनवासी परम भागवत थे। पहले वे अपने परिवार सहित बंगाल के वर्धमान जिले में कटवा जनपद में निवास करते थे। उनके परिवार में श्रीराधाकृष्ण की आराधना होती थी। एक बार परिवार में भक्ति सम्बन्धी कुछ विवाद होने पर श्रीनित्यानन्द प्रभु ने स्वप्न में उन्हें घर त्यागकर श्रीवृन्दावन धाम जाने का आदेश दिया। वयोवृद्ध होने पर भी उन्होंने उसी रात्रि श्रीवृन्दावन धाम के लिए प्रस्थान कर दिया। वहाँ पर निवास करते समय उनकी भेंट कुछ गोस्वामियों से हुई जो श्रीचैतन्य महाप्रभु के प्रधान शिष्य थे। श्रीधाम वृन्दावन के भक्तों ने उनसे श्री चैतन्य चरितामृत की रचना के लिए अनुरोध किया। यद्यपि उन्होंने यह कार्य अत्यन्त वृद्धावस्था में प्रारम्भ किया था, पर भगवान् श्री गौरसुन्दर की कृपा से वे उसे पूरा कर सके। आज यह ग्रन्थ भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु की शिक्षा और जीवन-चरित्र पर सर्वोपरि प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। (श्री. चै. म. शि. भू.)

73. जब श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी वृन्दावन में रहते थे उस समय वहाँ अधिक मन्दिर नहीं थे। उस समय श्रीमदन मोहन, श्रीगोविन्ददेव तथा श्रीगोपीनाथ ये तीन प्रधान मन्दिर थे। वृन्दावनवासी होने के कारण इन मन्दिरों में श्रीविग्रह-वन्दना कर उन्होंने भगवत्कृपा की याचना की। "प्रभो! भक्ति में मेरी प्रगति अत्यन्त मन्द है, अत: मैं आपकी कृपा की याचना कर रहा हूँ।" श्रीचैतन्य चरितामृत में वे कृष्णभक्ति के वर्धन में सहायक श्रीमदनमोहन विग्रह की वन्दना करते हैं। कृष्णभावनामृत का पालन करते समय हमारा प्रथम कर्तव्य श्रीकृष्ण तथा उनसे अपने सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त करना है। श्रीकृष्ण का ज्ञान ही आत्मज्ञान है और आत्मज्ञान का अर्थ श्रीकृष्ण से अपने सम्बन्ध का ज्ञान है। क्योंकि इस सम्बन्ध की शिक्षा श्रीमदनमोहन की आराधना से मिलती है, श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी सबसे पहले उन्हीं से सम्बन्ध जोड़ते हैं।

इस सम्बन्ध को स्थापित कर श्रील कृष्णदास कविराज अभिधेय-विग्रह श्रीगोविन्द जी की आराधना करते हैं। श्रीगोविन्द जी श्रीधाम वृन्दावन में नित्य विराजमान हैं। श्रीवृन्दावन में महल चिंतामणि से जड़ित हैं, तथा प्रचुर दुग्ध देने वाली सुरभि गायों एवं सब कामनाओं को पूर्ण करने

वाले कल्पवृक्षों से वह धाम परिपूर्ण है। श्रीधाम वृन्दावन में श्रीकृष्ण सुरभि गायों को चराते हैं तथा लक्ष्मीरूपा हजारों गोपियाँ उनकी आराधना में संलग्न रहती हैं। श्रीकृष्ण के प्राकृत-जगत् में अवतीर्ण होने पर यह श्रीधाम वृन्दावन भी ठीक उसी प्रकार अवतरित होता है, जिस प्रकार किसी विशिष्ट पुरुष के पार्षद उसका अनुगमन किया करते हैं। वृन्दावन को प्राकृत जगत् में स्थित नहीं माना जाता क्योंकि जब श्रीकृष्ण आते हैं तो उनका धाम भी साथ आता है और इसे मूल वृन्दावन का प्रतिरूप माना जाता है। भारत में भक्त इस वृन्दावन का आश्रय लेते हैं। चाहे आज कोई शंका कर सकता है कि वहाँ कोई कल्पवृक्ष नही हैं, किन्तु गोस्वामियों के निवासकाल में वहाँ कल्पवृक्ष थे। ऐसे वृक्ष के निकट जाकर केवल इच्छा करना पर्याप्त नहीं, अपितु पहले भक्त बनना होगा। गोस्वामीगण एक वृक्ष के आश्रय में एक रात्रि भर रहते थे तथा कल्पवृक्ष उनकी सम्पूर्ण अभिलाषाओं को पूरा कर देते थे। सामान्य मनुष्य के लिए यह महान् आश्चर्य हो सकता है, पर भक्ति में प्रगति करने पर इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति होती है।

श्रीधाम वृन्दावन का यथार्थ आस्वादन वही कर सकता है, जिसने भौतिक विषयों में सुख खोजना छोड़ दिया हो। एक महाभागवत के उद्‌गार हैं, "कब विषयभोग की वासना से मेरा चित्त शुद्ध होगा, जिससे मैं श्रीधाम वृन्दावन का दर्शन कर सकूँगा?" जो जितना अधिक कृष्णभावनाभावित होकर पथ पर उन्नति करेगा, उतना ही उसे सब कुछ आध्यात्मिक लगने लगेगा। अत: श्रील कृष्णदास कविराज इस वृन्दावन को परव्योम में स्थित वृन्दावन धाम के तुल्य मानते हैं और श्रीचैतन्य चरितामृत में वे वर्णन करते हैं कि श्री श्रीराधा और कृष्ण श्रीधाम वृन्दावन में कल्पवृक्ष के नीचे रत्नों से सुसज्जित सिंहासन पर विराजमान हैं। वहाँ श्रीकृष्ण के प्रिय गोप-सखा और गोपांगनाएँ नृत्य, गान, ताम्बूल, नैवेद्यार्पण तथा पुष्प सज्जा द्वारा श्रीराधा-कृष्ण की सेवा करते हैं। आज भी भारत में लोग जुलाई महीने में भगवान् के झूले को सजाकर इस दृश्य को पुनर्जीवित किया करते हैं। प्राय: उस समय लोग श्रीवृन्दावन जाकर भगवान के विग्रहों के दर्शन करते हैं।

श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी यह दावा करते हैं कि श्री श्रीराधा-गोविन्द विग्रह हमें श्री राधाकृष्ण सेवा की शिक्षा देते हैं। श्रीमदनमोहन विग्रह से केवल यही स्थापित होता है कि "प्रभो! मैं आपका नित्य दास हूँ।" किन्तु श्रीगोविन्द देव जी द्वारा सेवा की वास्तविक स्वीकृति

होती है, इसलिए वे अभिधेय विग्रह हैं। श्रीगोपीनाथ, जो गोपीबल्लभ हैं, श्रीकृष्ण का स्वामीरूप में प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने वेणुनाद से उन्होंने गोपियों को अपनी ओर आकृष्ट किया और जब वे उनके पास आईं तो उन्होंने उनके साथ रासनृत्य किया। श्रीमद् भागवतम् के दशम स्कन्ध में इन सभी लीलाओं का वर्णन है। (चै.च. आ.ली.-भू., भ.चै.म.शि.भू.)

74. श्रीधाम वृन्दावन के वासी भक्ति के जीवन्त प्रतीक हैं। उनकी भक्ति सर्वोच्च आदर्शस्वरूपा शुद्ध रागमयी भक्ति है, यह रागात्मिका भक्ति केवल वृन्दावनवासियों में ही विराजमान है। केवल व्रजवासियों के अनुगमन से ही यह रागमार्ग भक्ति की प्राप्ति होती है। श्रीभक्तिरसामृत सिन्धु (1-2-270) के अनुसार - "भक्त में किसी विशेष सेवा के प्रति स्वाभाविक रूप में पाई जाने वाली दिव्य आसक्ति का नाम राग या आध्यात्मिक आसक्ति है। इस प्रगाढ़ आसक्ति से सम्पन्न की गई भक्ति को रागात्मिका-भक्ति कहते हैं और प्रेमी के प्रति गहन तल्लीनता के साथ-साथ गहरी आसक्ति को रागात्मिका कहते हैं। इनके प्रत्यक्ष उदाहरण व्रजवासी हैं। उक्त राग का वर्णन सुनकर जो श्रीकृष्ण के प्रति आकृष्ट हो जाता है, वह वास्तव में अतिशय भाग्यशाली है। जब कोई व्रजवासियों की गाढ़-श्रद्धा से पूर्ण रूप से प्रभावित हो जाता है, और उनके चरणचिह्नों का अनुसरण करता है तो वह शास्त्रों के विधि-निषेध की परवाह नहीं करता। रागभक्ति के भक्त का यही प्रमुख लक्षण होता है। (भ. चै. म. शि. 13, रागानुगा भक्ति)

75. राधारानी श्रीकृष्ण की अंतरंगा शक्ति हैं और वे निरन्तर श्रीकृष्ण के आनन्द को बढ़ाती रहती हैं। निर्विशेषवादी इसे तब तक नहीं समझ सकते जब तक वे किसी महाभागवत की सहायता न लें। 'राधा' नाम ही बतलाता है कि वे श्रीकृष्ण के विलास की सर्वोच्च स्वामिनी हैं। इस तरह वे श्रीकृष्ण तक जीव की सेवा पहुँचाने की माध्यम भी हैं। इसलिए वृन्दावन के भक्त श्रीमती राधारानी की कृपा चाहते हैं जिससे वे श्रीकृष्ण के प्रिय सेवक माने जा सकें। (चै.च. आ.ली. 4. 56 ता.)

76. श्रील भक्तिविनोद ठाकुर *ब्रह्मभूत* अवस्था के दो भाग मानते हैं - *स्वरूपगत* तथा *वस्तुगत*। जब कोई श्रीकृष्ण को वास्तव में समझ जाता है किन्तु फिर भी अपने भौतिक सम्बन्ध बनाए रहता है, तो उसे अपने *स्वरूप* (मूल चेतना) में स्थित बतलाया जाता है। और जब यह स्वरूप (मूल चेतना) पूर्णतया आध्यात्मिक हो जाती है, तो इसे कृष्णभावनामृत कहा जाता है। जो ऐसी

चेतना को प्राप्त होता है वह वास्तव में वृन्दावन रहता है। वह चाहे जहाँ भी रहे, उस पर भौतिक स्थान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जब श्रीकृष्ण की कृपा से कोई मनुष्य शरीर तथा मन से पूर्णत: कल्मषरहित हो जाता है तो वह वास्तव में वृन्दावन में रहता है। यह अवस्था '*वस्तुगत*' कहलाती है। (चै.च. म.ली. 8.139 ता.)

77. शुद्ध भक्त तीव्र प्रेम के कारण भगवान् श्रीकृष्ण को सदैव अपने हृदय में ही विद्यमान देखता है। आदि भगवान् श्रीगोविन्द देव की जय हो। जब वृन्दावनवासियों के समक्ष श्रीकृष्ण प्रकट नहीं होते तो वे लोग उनके विचारों में लीन रहते हैं। इसलिए यद्यपि उस समय श्रीकृष्ण द्वारका में रह रहे थे, साथ ही साथ वे समस्त वृन्दावनवासियों के समक्ष भी उपस्थित रहते थे। यह उनकी अप्रकट लीला थी। जो भक्त श्रीकृष्ण के विचारों में सदैव लीन रहते हैं, वे शीघ्र ही श्रीकृष्ण का दर्शन पाएँगे। जो भक्तगण सदैव कृष्णभावनामृत में लीन रहते हैं और श्रीकृष्ण के विचारों में पूरी तरह मग्न रहते हैं, वे अवश्यमेव भगवद्धाम को प्राप्त होते हैं। फिर वे श्रीकृष्ण को प्रत्यक्ष देखते हैं, उनके साथ प्रसाद ग्रहण करते हैं और उनकी संगति का आनन्द लूटते हैं। इसकी पुष्टि भगवद्गीता में (4.9) में हुई है - *त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।* (चै.च.म. 13.155 ता.ली.)

78. आप पापपूर्ण जीवन को अपनाकर श्रीकृष्ण तक नहीं पहुँच सकते। जो यह विचार करते हैं कि "मैं सब तरह से पाप कार्य कर सकता हूँ, क्योंकि मैं वृन्दावन में रह रहा हूँ, वृन्दावन-रज मुझे शुद्ध कर देगी।" यह सत्य है। हाँ! परन्तु आप यदि पाप कार्यों में लिप्त रहोगे तो आपको वृन्दावन में सुअरों और बन्दरों की तरह रहना होगा। कम से कम आपको एक जीवन इसी तरह से व्यतीत करना होगा। तब आप शुद्ध हो जाओगे। अत: आप इस तरह से अपना समय व्यर्थ क्यों गँवाते हैं? धाम-अपराध। यदि कोई धाम अर्थात वृन्दावन धाम में पाप कार्य करता है तो यह बहुत बड़ा अपराध हैं; "*नाम्नो बलाद् यस्य: हि पापबुद्धि:*"। ये शास्त्रों के आदेश हैं। (श्री. भा. प्रवचन, 29 अक्टू. 1972, वृ.)

79. आजकल बहुत से लोग वृन्दावन तीर्थ आते हैं, परन्तु वे क्या सोचते हैं? वे सोचते हैं "मुझे यमुना नदी में स्नान करने दो। तब मेरा लक्ष्य पूरा हो जायेगा।" परन्तु नहीं, शास्त्रों के अनुसार हमें किसी महान् भागवत् अर्थात *भक्त* की शरण में जाना चाहिए। हमें ऐसे भक्त की शरण में जाना

चाहिए, जो शुद्ध हो और वृन्दावन में रहता हो। यही तीर्थयात्रा है। (श्री भा. प्रवचन, 16 मार्च, 1974, वृ.)

80. श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा है कि वृन्दावन श्रीकृष्ण के समान है। यह मेरे द्वारा निर्मित नहीं है। "*आराध्यो भगवान् व्रजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावनम्*" जैसे श्रीकृष्ण, ब्रजेन्द्रनन्दन हरि, पूजनीय हैं, वैसे ही उनका धाम भी पूजनीय है। हमें वृन्दावन धाम का बहुत सम्मान करना चाहिए, नहीं तो हम अपराधी हो जाएगें। धाम अपराध। यदि हम वृन्दावन में रह रहे हैं तो हमें समझना चाहिए कि हम श्रीकृष्ण के साथ रह रहे हैं। और हम कितने सतर्क होंगे, हम कितने सावधान होंगे, यदि हम वास्तव में समझेंगे कि धाम क्या है? धाम ही श्रीकृष्ण हैं। यदि हम धाम में रह कर पाप कार्य करते हैं तो हम मानों आत्महत्या कर रहे हैं। यह सत्य है। आप यमलार्जुन की कथा जानते होंगे। अत: उन्हें धाम में, अर्थात वृन्दावन धाम में एक वृक्ष के रूप में वास दिया गया, परन्तु उन्हें सैकड़ों वर्ष व्यर्थ गँवाने पड़े।

चाहे यह बात निश्चित् है कि जो भी धाम में रह रहा है उसे भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों का आश्रय मिलेगा, लेकिन नहीं.... क्यों हम पेड़, बन्दर, सुअर या कुत्ता बनकर अपना समय व्यर्थ गँवाए। आपको बहुत सावधान रहना होगा। धाम में कोई अपराध मत करो। तब एक ही जीवन भगवान् के धाम लौट जाने के लिए पर्याप्त है। यदि आप वास्तव रूप से सतर्क होकर वृन्दावन में रहें, बिना कोई पाप कार्य के और पापपूर्ण जीवन के बिना, तो इसी जीवन काल में आप श्रीकृष्ण के पास चले जायेंगे। (भ. र. सि., प्रवचन, 30 अक्टू, 1972, वृ.)

81. सेवानिवृत्त होकर मैं केशीघाट के राधाकृष्ण मन्दिर में रह रहा था। परन्तु मुझे गौरचन्द गोसाईं जी ने कहा, ''तुम यहाँ क्यों नहीं आ जाते''? अत: मैंने वह स्थान छोड़ दिया। मैं यहाँ आ गया। कुछ प्रबन्ध करके मैंने यह कमरा ले लिया। परन्तु मैं सदा सोचता रहता कि "मेरे गुरु-महाराज ने मुझे तथा मेरे अन्य गुरु भाइयों को कुछ आदेश दिये हैं, परन्तु अभी तक उनपर कोई काम नहीं हुआ। अत: मुझे कम से कम इस वृद्धावस्था में कुछ प्रयास करना चाहिए।" यह सोचकर मैं 1970 में वृन्दावन छोड़कर न्यूयॉर्क गया। ओह! नहीं। 1965 में 70 वर्ष की अवस्था में। (वृ. के कमरे में वा., 15 अक्टू, 1972)

82. लोकनाथ : श्रील प्रभुपाद, जो आजकल वृन्दावन में रह रहे हैं, उन व्रजवासियों का क्या स्तर है? उनका अगला जीवन कैसा होगा?

श्रील प्रभुपाद : "हाँ, केवल वृन्दावन में रहने से तथा कोई अपराध न करने से वे भगवद्धाम वापस लौट जाएँगे। बिना कोई अपराध किए केवल यहाँ निवास करने से। सदा श्रीकृष्ण का स्मरण करो। यह श्रीकृष्ण की भूमि है "*मन्मना भव मद्भक्तो,*" यह वृन्दावन वास उन्हें मुक्त कर देगा।

मधुद्विष : क्या उन्हें आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता नहीं ?

प्रभुपाद : हाँ! आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता सदा रहती है। "*छाड़िया वैष्णव सेवा, निस्तार पायछे केबा*"। आध्यात्मिक गुरु की आज्ञा पालन के बिना, उनकी सेवा किए बिना कोई पार नहीं हो सकता।"

हरिशौरि : अत: ये सभी व्रजवासी, ये सभी स्वीकारते हैं....

प्रभुपाद : नहीं, *व्रजवासी,* वे सभी प्राय: तथा स्वाभाविक रूप से कृष्णभावनाभावित हैं। नहीं तो यह कैसे सम्भव है कि निरक्षर (अनपढ़) किसान भगवान् को भोग लगा रहे हैं। यह स्वाभाविक है।

पञ्चद्रविड़ : परन्तु उनका कोई गुरु नहीं है।

श्रील प्रभुपाद : नहीं, नहीं, उनका गुरु है। हाँ। और बिना गुरु के भी वे कृष्णभावनाभावित हैं।

पञ्चद्रविड़ : तो क्या वे भगवद्धाम लौट जाएँगे?

प्रभुपाद : ओह! हाँ - अवश्य, क्योंकि गुरु तो उनके हृदय में *चैत्य-गुरु* के रूप में है। (प्रात:कालीन सैर, 8 अप्रैल, 1976, वृ.)

83. समय बचाओ और कृष्णभावना में प्रगति करने में उसका प्रयोग करो। यही आदर्श जीवन है। जैसा कि वृन्दावन में होता है। वृन्दावन जीवन का अर्थ, कृषक-जीवन, गोप-बालक, और

अशिक्षित बालिकाएँ, गाएँ तथा बछड़े और वृक्ष, फल। यही वृन्दावन है। उनके केंद्र में श्रीकृष्ण हैं।

योगेश्वर : सादा जीवन ।

प्रभुपाद : परन्तु वे उच्चकोटि के भक्त हैं। ये (मंद हँसी) अशिक्षित, बिना शहरी जीवन के ये ग्वाले श्रीकृष्ण के सबसे अच्छे मित्र हैं। उनमें कोई कृत्रिमता नहीं, कोई शिक्षा नहीं, परन्तु गूढ़-प्रेम, यही पूर्णता है। यही श्रीकृष्ण को अधिक आकर्षित करता है। '*वृन्दावनं परित्यज्य: न पदं एकं गच्छति*.... श्रीकृष्ण वृन्दावन से इतने आसक्त हैं कि वे और कहीं नहीं जाते। (भुवनेश्वर-कमरे में वा., 31 जनवरी, 1977)

84. श्री श्रीराधादामोदर मन्दिर की व्यवस्था के विषय में मैं आपसे अनुनय प्रार्थना करता हूँ कि मेरे अकेले के लिए तो दो कमरे और सामने बरामदा ही पर्याप्त है, परंतु चूँकि मेरे हजारों की संख्या में शिष्य हैं, तो यह स्वाभाविक है कि जब मैं वहाँ हूँ तो कम से कम 25 से 50 शिष्य मेरे साथ रहेंगे। अतः कृपया मुझे, मेरे शिष्यों के साथ, यहाँ रहने के लिए पूर्ण सुविधाएँ प्रदान करें। मैं उसके लिए यथोचित किराया देने के लिए तैयार हूँ।

मैं श्री राधादामोदर मन्दिर की पूजा के लिए उचित प्रबन्ध कर सकता हूँ, जैसा कि कम से कम पचास भक्तों को रोज प्रसाद प्रदान करना, दो समय का जलपान और दो बार भोजन। मेरे शिष्य मेरे साथ ही रहेंगे। वे प्रतिदिन जप करेंगे और अच्छी तरह से शास्त्रों का पाठ करेंगे, जिससे सैकड़ों लोग आकर्षित होंगे।

आप जानते हैं कि पिछली बार जब मैं वृन्दावन में था तो मेरे शिष्यों ने कितना आकर्षक और शुद्ध संकीर्तन किया था। आजकल 50 व्यक्तियों के प्रसाद के लिए प्रतिदिन 100 रुपये अर्थात् 3000 रुपये प्रति माह से कम नहीं होगा।

मैं श्री राधादामोदर मन्दिर के सेवकों की सेवा में बाधा नहीं पहुँचाना चाहता, किन्तु यदि मुझे अपने शिष्यों के साथ वहाँ रहने की सुविधा दी जाती है तो अपनी पूर्ण सामर्थ्य अनुसार भगवान् श्री श्रीराधादामोदर की सेवा करना मेरे लिए बहुत प्रसन्नता का विषय होगा। अब आप सब सेवकों

पर निर्भर करता है कि इस पर कैसे निर्णय लें। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 17 मई, 1968)

85. बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की इच्छा से श्रीकृष्ण की सेवा करना कितना अच्छा है। यही वृन्दावन है। गोपियों ने अपनी प्रतिष्ठा, सम्मान तथा गौरव, सब कुछ श्रीकृष्ण के लिए त्याग दिया। तो इसी प्रकार सेवा करो। जब तुम श्रीकृष्ण के लिए कठिन परिश्रम करते हो तो मैं अत्यन्त प्रसन्न होता हूँ। मुझे इससे बहुत सुख मिलता है। (भुवनेश्वर के कमरे में वा., 2 फरवरी, 1977)

86. मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आप मुकुट का कारोबार बढ़ा रहे हैं। अब भक्तों को यह अवश्य सीख लेना चाहिए जिससे भविष्य में पेशावरों की आवश्यकता न रहे। (श्री प्रभुपाद द्वारा पत्र, 29 जनवरी, 1976)

87. 'ब्रह्म-संहिता' में कहा गया है कि वैदिक साहित्य के महान् पंडित बनने से भगवान् कभी नहीं मिलते, अपितु वे अपने शुद्ध भक्तों के माध्यम से सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। अत: वृन्दावन में सभी शुद्ध भक्त श्रीमती राधारानी की कृपा के लिए प्रार्थना करते हैं। (श्री. भा. 2.3.23 ता.)

88. 'कृष्ण' शब्द का अर्थ है सर्वाकर्षक, परन्तु राधारानी इतनी महान् है कि वे श्रीकृष्ण को भी आकर्षित कर लेती हैं। यदि श्रीकृष्ण सदैव सभी को आकर्षक लगते हैं और राधारानी श्रीकृष्ण को आकर्षक लगती हैं, तो हम श्रीमती राधारानी की स्थिति का अनुमान कैसे लगा सकते हैं? हमें बड़ी विनम्रता से यह समझने का प्रयास करना चाहिए और उन्हें यह कहते हुए आदरपूर्वक प्रणाम करना चाहिए, "राधारानी आप तो श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रिय हैं। आप महाराज वृषभानु की पुत्री हैं और आप श्रीकृष्ण की प्रियतमा हैं। हम आपको सादर प्रणाम करते हैं।" राधारानी श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय हैं और यदि हम राधारानी के माध्यम से श्रीकृष्ण तक पहुँचने का प्रयास करें तो हम सरलता से श्रीकृष्ण को प्राप्त कर सकते हैं। यदि राधारानी किसी भक्त की संस्तुति करें, तो श्रीकृष्ण तुरन्त उसे स्वीकार कर लेंगे, चाहे वह कितना भी मूर्ख क्यों न हो। फलस्वरूप हम वृन्दावन में देखते हैं कि भक्त श्रीकृष्ण से अधिक राधारानी का नाम जपते हैं। जब भी हम भारत में जाते हैं हम देखते हैं कि भक्त, "जय राधे" पुकारते हैं। हमें श्रीमती राधारानी की सेवा के लिए अधिक लालायित होना चाहिए क्योंकि चाहे हम कितने भी निकृष्ट क्यों न हो, यदि हम किसी न किसी तरह से उन्हें प्रसन्न कर सकें तो हम बड़ी आसानी से श्रीकृष्ण को समझ सकते हैं। यदि हम

अपनी मनोकल्पना से श्रीकृष्ण को समझने का प्रयास करेंगे तो हमे कई जीवन व्यतीत करने होंगे, किन्तु यदि हम भक्ति का मार्ग अपनाएँ और श्रीमती राधारानी को प्रसन्न करने का प्रयास करें तो श्रीकृष्ण अत्यन्त शीघ्रता से समझे जा सकते हैं। श्रीमती राधारानी इतनी महान् भक्त हैं कि वे बहुत सरलता से हमें श्रीकृष्ण प्रदान कर सकती हैं।

श्रीमती राधारानी इतनी महान् हैं कि श्रीकृष्ण भी उनके गुणों का अनुमान नहीं लगा सकते। वास्तव में राधारानी को समझने के लिए श्रीकृष्ण ने उनका पद स्वीकार किया। (कृष्णभावनामृत की प्राप्ति 5, श्रीकृष्ण की शक्तियों की जानकारी)

89. ऐसा कहा जाता है कि जो भक्त राधाकुण्ड में एक बार स्नान कर लेता है तो वह तुरन्त श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों जैसा प्रेमभाव उत्पन्न कर लेता है। श्रील रूप गोस्वामी संस्तुति करते हैं कि यदि कोई राधाकुण्ड में स्थायी रूप से न भी रह पाये तो भी कम से कम जितनी बार हो सके इस सरोवर में स्नान तो कर ही ले। भक्तिमय सेवा का यह सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इस प्रसंग में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर लिखते हैं कि जो लोग सखियों के रूप में अपनी भक्ति विकसित करने तथा श्रीमती राधारानी की विश्वासपात्र दासियाँ, मञ्जरियाँ, बनने के इच्छुक हैं उनके लिए राधाकुण्ड सर्वश्रेष्ठ स्थान है। जो लोग अपने आध्यात्मिक शरीरों से (*सिद्ध-देह* से) भगवान् के दिव्य-धाम गोलोक वृन्दावन लौट जाने के इच्छुक हैं उन्हें राधाकुण्ड में रहना चाहिए, उन्हें श्री राधा की विश्वासपात्र दासियों की शरण ग्रहण करनी चाहिए और उन्हीं के निर्देशन में निरन्तर श्रीमती राधारानी की सेवा करनी चाहिए। जो लोग श्रीचैतन्य महाप्रभु के संरक्षण में भक्ति करते हैं उनके लिए यह सर्वश्रेष्ठ विधि है। (उ. अ., 11 ता.)

90. श्रीमती राधारानी की निजी सखियाँ अर्थात व्रजबालायें उनके शरीर की प्रत्यक्ष अंश हैं। उनके शरीर के अंश होने से वे श्रीमती राधारानी के परम निर्देशन के अंतर्गत भगवान् कृष्ण की लीलाओं में विविध प्रकार के प्रेम के आदान-प्रदान के लिए उत्तरदायी हैं। आध्यात्मिक जगत् में आनन्द में विविधता होती है। राधारानी जैसी अनेक नारियों, जिन्हें गोपियाँ या सखियाँ कहा जाता है, के संग से दिव्य रस की तीव्रता बढ़ जाती है। नाना प्रकार की नायिकाएँ श्रीकृष्ण के लिए आस्वादन का स्रोत हैं। अतएव श्रीमती राधारानी के ये अंश श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति को बढ़ाने के लिए

आवश्यक हैं। उनके दिव्यप्रेम-विनिमय वृन्दावन लीलाओं के उत्कृष्ट कार्य हैं। श्रीमती राधारानी अपने शरीर के इन विस्तारों के द्वारा श्रीकृष्ण को रासनृत्य तथा अन्य लीलाओं का आस्वादन कराने में सहायता करती हैं। (चै.च.आ. ली. 4.81 ता.)

91. श्रीमती राधारानी इतनी निपुण हैं कि वे सदा अपनी सेवा से श्रीकृष्ण को आकर्षित कर लेती हैं। यही राधारानी की स्थिति है। श्रीकृष्ण मदनमोहन कहलाते हैं। यहाँ वृन्दावन में श्री मदनमोहन जी हैं और राधारानी मदनमोहन-मोहिनी कहलाती हैं। कामदेव इतने सुन्दर हैं कि वे हमें आकर्षित कर लेते हैं और श्रीकृष्ण तो कामदेव को भी आकर्षित कर लेते हैं। इसलिए उनका नाम मदनमोहन है। और राधारानी इतनी महान् हैं कि वे श्रीकृष्ण को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। अत: वे महानतम् हैं। इसलिए वृन्दावन में लोग श्रीकृष्ण से अधिक राधारानी का नाम जपने में अभ्यस्त हैं। "जय राधे"। हाँ, यदि आप श्रीकृष्ण की कृपादृष्टि चाहते हो, तो केवल राधारानी को प्रसन्न करने का प्रयास करो। (वृ., श्री. भा. प्रवचन, 29 अगस्त, 1975)

92. श्रीमान् बोइड ने पूछा : - क्या वृन्दावन का गुरुकुल यही है? मुझे लगता है कि वह इसी अहाते में हैं, जिसे वे साफ कर रहे हैं। आपके विचार से यह कब तक बन जाएगा?

श्रील प्रभुपाद : जब वे जमीन को साफ कर लेंगे, हम इस पर गुरुकुल के लिए एक सुन्दर भवन बनाएँगें। जैसे ही यह भवन तैयार हो जाएगा हम उसकी स्थापना करेंगे। *कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान्भागवतान्* .... इस जीवन के प्रारम्भ से ही बच्चे भागवत सिद्धान्त के अनुसार प्रशिक्षित होंगे। यही पूर्णता है। "*ब्रह्मचारी गुरुकुले वसन्दान्तो गुरोर्हितम्*"। उनको प्रशिक्षित किया जाएगा कि गुरु के घर पर रह कर कैसे पढ़ा जाता है। उन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा कि कैसे अपनी इन्द्रियों को वश में किया जाए। '*दान्त*' का अर्थ है इन्द्रियों को वश में करने का अभ्यास। यही मनुष्य में और जानवर में अन्तर है। पशुओं को इन्द्रियों को वश में करने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता। यह सम्भव नहीं। किन्तु मनुष्य को अपनी इन्द्रियों को वश में करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। (वाशिंगटन डी.सी. संध्या दर्शन, 8 जुलाई, 1976)

93. हम अपने शिष्यों को दो कारणों से हिन्दी और संस्कृत सिखाने का कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं। पहला, यदि हम प्रामाणिक भाषा-विद्यालय स्थापित कर सकें तो हमारे अमरीकी और यूरोपियन

शिष्यों को भारत आने के लिए विद्यार्थी-प्रवेश-पत्र (student visas) मिल सकता है। इससे हमारी प्रवेश-पत्र पाने की समस्या का हल हो जाएगा। दूसरा, यदि हमारे शिष्य वास्तव में हिन्दी में प्रचार कर सकें और समय-समय पर संस्कृत श्लोकों का प्रमाण दें तो यह हमारे लिए बहुत श्रेयस्कर होगा और भारतीय लोग इसे बहुत सम्मानपूर्वक ग्रहण करेंगे। मैंने वृन्दावन में डा. कपूर तथा नरसिंह वल्लभ नामक पंडित से पूछा था कि यदि वे हमारे विद्यार्थियों को हिन्दी और संस्कृत पढ़ा दें। पाठ्यक्रम दो घंटे प्रात: और 2 घंटे संध्या का होगा और पंडितजी को 200 रुपये प्रति माह वेतन दिया जा सकता है। परन्तु हमारे विद्यार्थी प्रवेश पाने के लिए तथा भाषा सीखने के लिए तैयार होने चाहिए। बम्बई से हमारे आजीवन सदस्य श्रीमान बी. आर. मोहाता आज लॉस एन्जिलिस में मेरे पास आए थे और हमने भाषा-स्कूल के विषय में चर्चा की। उन्होंने मुझे सलाह दी है कि हमें अपने स्कूल के लिए भारतीय सरकार के विभिन्न विभागों से, जैसे कि शिक्षा-विभाग, समाज-कल्याण विभाग और सांस्कृतिक-विभाग से स्वीकृति अवश्य ले लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें इस बात को लेकर उनके सामने अपने स्कूल का प्रस्ताव रखना चाहिए कि हम इसको शैक्षिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए स्थापित कर रहे हैं, धार्मिक आधार पर नहीं, तो हमें सरकार से सब प्रकार का समर्थन मिलेगा। उन्होंने वर्णन किया कि किस प्रकार रामकृष्ण मिशन को स्कूलों और चिकित्सालयों के बहाने ही सरकार से इतना समर्थन मिल रहा है। वास्तव में उनके विद्यालय और औषधालय अधिकतर उनके सिद्धान्तों का ही प्रचार करने के लिए हैं। अत: इस तरह हमें भी ठोस और सुव्यवस्थित प्रस्ताव देकर बड़ी व्यवहार-कुशलता से सरकार से बात करनी चाहिए। मेरी बहुत इच्छा है कि हम इस योजना को शीघ्र ही आवश्यक सावधानी और प्रयास से शुरू कर दें। अब मैंने आपको कुछ संकेत दे दिए हैं और मैं अब इस विषय को कार्यान्वित करने के लिए आप पर छोड़ता हूँ। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 21 दिस., 1973)

94. हाँ, वृन्दावन में स्कूल शुरू करने के लिए हरि गोस्वामी को थोड़ा समय परीक्षण के लिए ले लेना चाहिए। उन्हें हिन्दी और संस्कृत सिखाने के लिए नियुक्त कर लेना चाहिए और यदि वे इस कार्य को कुशलता से करते हैं तो इनका स्थानान्तरण डलास गुरुकुल में कर देना चाहिए। अभी तो उनके एक सहायक को प्रशिक्षित करना चाहिए। अभी हम बम्बई और वृन्दावन में कक्षाएँ शुरू कर सकते हैं। मेरी इन विषयों को पढ़ाने की इच्छा प्रवेश-पत्र (Visas) लेने के लिए है, कोई

महान् विद्वान बनाने के लिए नहीं है। यही राय मैंने न्यूयॉर्क के वाणिज्यदूत को भी दी थी और वे इस संबंध में हमारी सहायता कर रहे हैं। डा. कपूर ने पहले ही भाषा सिखाने के लिए इन्कार कर दिया है। वे सिद्धान्त सिखाने में रुचि रखते हैं, लेकिन हमें उसकी आवश्यकता नहीं थी। हमें जो कुछ भी चाहिए वह श्रीमद्‌भागवतम् में है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 11 जन. 1974)

95. श्रील प्रभुपाद : पिछली बार तुम्हें परिक्रमा मार्ग में वह कोने की भूमि याद है? वह उपलब्ध है....

गोपालकृष्ण : वास्तव में वह अच्छी रहेगी, यदि वह हमें मिल जाती है। यह हमारे मन्दिर के बिल्कुल समीप है।

श्रील प्रभुपाद : तो उसके लिए प्रयास क्यों न किया जाए? मेरा विश्वास है कि तुम उसे प्राप्त कर सकते हो।

गोपालकृष्ण : ठीक है! मैं दस दिन बाद वृन्दावन जा रहा हूँ।

श्रील प्रभुपाद : अत: यदि हमें वह भूमि मिल जाती है तो हम अपनी गन्दे पानी की नालियाँ उधर मोड़ सकते हैं और उसे खेती के लिए प्रयोग कर सकते हैं। अत: लाखों रूपये नगरपालिका पर खर्चने के बजाय क्यों न हम इस भूमि को खरीद लें?

गोपालकृष्ण : हाँ! यह तो बहुत अच्छा विचार है। किन्तु हमें बाहर जाने वाली नाली को जमीन के नीचे करना होगा।

श्रील प्रभुपाद : वह कुछ अधिक नहीं है, केवल कुछ गज ही। और यह करके इस पानी को सब जगह बाँट दो, इससे हमें अच्छी फसल मिलेगी, बहुत अच्छी! इससे अच्छा व्यापार हो सकता है।

हरिशौरि : क्या उसका खेती के लिए प्रयोग कर सकते है?

श्रील प्रभुपाद : ओह हाँ, हाँ। यह पानी कृषि करने के लिए बहुत उपयोगी है। प्रकृति के नियम ऐसे ही हैं। सारा गंदा पानी तुम कृषि के लिए प्रयोग कर सकते हो।

हरिशौरि : मेरे विचार से पश्चिमी देशों में ऐसा कानून है जिसके अनुसार आप मानवीय-मलमूत्र का प्रयोग नहीं कर सकते।

श्रील प्रभुपाद : पश्चिम को ठोकर मारो। हम तो इसे भारत में कर रहे हैं। वृन्दावन में नगरपालिका भी यही कर रही है। हर जगह यही है। कलकत्ता में इसे '*धापरा-मथा*' कहते हैं। "*धापरा मथा*"। पहले कुछ भी '*धापरा-मथा*' में उगाई गई कोई भी चीज अर्चा-विग्रह की पूजा में प्रयुक्त नहीं होती थी। ये सब अन्धविश्वास ''ये सब्जियाँ गन्दे पानी में उगाई गई हैं, गन्दा...'' किन्तु सब्जियाँ जैसे फूल गोभी, वे इतनी बड़ी-बड़ी उगतीं हैं। सभी सब्जियाँ अत्यन्त स्वादिष्ट और बड़ी-बड़ी उगतीं। *धापरा मथा* (बंगाली) वे सब लेते थे। बंगाल में भूमि सब्जियों के लिए बहुत उपजाऊ है। किन्तु जितना अधिक शहर का गन्द वहाँ फेंका जाता, किसान उतनी अधिक अच्छी फसल करते। यह गन्दे जल का प्रयोग है। किसान गाँव में जितना अधिक पानी खेतों की ओर मोड़ते, उतनी अधिक अच्छी फसल उनको मिलती। साधारणत: वे खेतों में मलमूत्र त्यागते। गायों का गोबर, मनुष्य का मल और दूसरों का मल, सब वर्षा-ऋतु में एक हो जाता है। और भूमि उपजाऊ बन जाती है।

96. श्रीमद्भागवतम् के अनुसार कुछ वृक्ष सैकड़ों और हजारों वर्षों तक जीवित रहते हैं। वृन्दावन में एक इमली का पेड़ है। (वह स्थान जो इमलीतला कहलाता है) कहा जाता है कि यह भगवान् कृष्ण के समय से है। (श्री. भा. 2.3.18 ता.)

97. श्रील सनातन, श्रील रूप तथा वृन्दावन के अन्य गोस्वामियों के संन्यास काल में उनके अन्य कर्तव्यों में से सर्वप्रथम कर्तव्य था वृन्दावन में सेवाकुंज में विद्वतापूर्ण चर्चा (गोष्ठी) करना। इस स्थान पर श्री श्रीराधा-दामोदर मन्दिर की स्थापना श्रील जीव गोस्वामी ने की तथा श्रील रूप गोस्वामी तथा श्रील जीव गोस्वामी की समाधियाँ यही स्थित हैं। वे मानव समाज के आध्यात्मिक लाभ हेतु दिव्य महत्ता वाला प्रचुर साहित्य अपने पीछे छोड़ गए। (श्री. भा. 2.2.5 ता.)

98. अत: जो *सहजिया* होते हैं, वे केवल भगवान् श्रीकृष्ण की गोपियों के साथ लीलाओं की चर्चा करते हैं। दूसरी बातें - "ओह नहीं, नहीं वे सब श्रीकृष्ण की लीलाएँ नहीं हैं।" इसका अर्थ है वे पूर्ण पुरुष की पूर्ण लीलाओं में अन्तर करते हैं, यह सहजिया कहलाता है। वे कभी भी

भगवद्गीता नहीं पढ़ेंगे। कभी नहीं (व्यंग्यपूर्ण) क्योंकि वे माधुर्य रस तक पहुँच गए हैं। इसलिए उनकी भगवद्गीता में कोई रुचि नहीं है। (श्री. भा. 6.3.20-23 प्रवचन, गोरखपुर, 14 फरवरी 1971)

99. '*ब्रह्मसंहिता*' में भगवान् श्रीकृष्ण के परमधाम को चिन्तामणि-धाम कहा गया है, ऐसा स्थान जहाँ सारी इच्छाएँ पूरी होती हैं। भगवान् श्रीकृष्ण का परमधाम गोलोक-वृन्दावन कहलाता है और वह पारसमणि से निर्मित प्रासादों से युक्त है। वहाँ पर वृक्ष भी हैं, जिन्हें कल्पतरू कहा जाता है, जो इच्छा होने पर किसी भी तरह का खाद्य-पदार्थ प्रदान करने वाले हैं। वहाँ गौएँ भी हैं, जिन्हें सुरभि गायें कहा जाता है और वे असीमित दुग्ध देने वाली हैं। इस धाम में भगवान् की सेवा के लिए लाखों लक्ष्मियाँ हैं। वे आदि भगवान् है जो समस्त कारणों के कारण गोविन्द कहलाते हैं। भगवान् वंशी बजाते रहते हैं (*वेणुं क्वणन्तम्*)। उनका दिव्य स्वरूप समस्त लोकों में सर्वाधिक आकर्षक है, उनके नेत्र कमल की पंखुड़ियों के समान हैं और उनके शरीर का रंग मेघों के वर्ण जैसा है। वे इतने रूपवान् हैं कि उनका सौन्दर्य हजारों कामदेवों को मात करता है। वे पीत वस्त्र धारण करते हैं, उनके गले में माला रहती है और केशों में मोरपंख लगे रहते है। भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण अपने निजी धाम गोलोक वृन्दावन का संकेत मात्र करते हैं, जो आध्यात्मिक जगत् में सर्वश्रेष्ठ लोक हैं। इसका विशद वृतान्त 'ब्रह्मसंहिता' में मिलता है। वैदिक ग्रंथ (*कठोपनिषद्* 1.3.11) में बताया गया हैं कि भगवान् का धाम सर्वश्रेष्ठ है और यही परमधाम है। (*पुरुषान्न परं किञ्चत्सा काष्ठा परमा गतिः*)। एक बार वहाँ पहुँचकर फिर से भौतिक संसार में लौटकर नहीं आना होता। (भ. ग. गी. 8.21 ता.)

100. यदि सम्भव हो तो मनुष्य को गंगा या यमुना के जल में स्नान करना चाहिए या गंगा-यमुना की अनुपस्थिति में उसे समुद्र के जल में स्नान करना चाहिए। यह तपस्या का एक अंग है। इसलिए हमारे कृष्णाभावनामृत आंदोलन ने दो अत्यन्त विशाल केन्द्रों की स्थापना की है- एक वृन्दावन में और दूसरा मायापुर, नवद्वीप में। वहाँ पर भक्त गंगा में या यमुना में स्नान कर सकता है, 'हरे-कृष्ण', का कीर्तन कर सकता है और इस तरह सिद्धावस्था प्राप्त कर भगवद्धाम वापस जा सकता है। (श्री. भा. 6.5.27-28 ता.)

101. सूर्यदेव विवस्वान् की पत्नी संज्ञा ने श्राद्धदेव नामक मनु को जन्म दिया, और उसी भाग्यवती पत्नी ने यमराज तथा यमुना नदी रूपी जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। (श्री.भा. 6.6. 40)

102. गंगा की अपेक्षा यमुना नदी श्रीकृष्ण से अधिक प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं। भगवान् ने इस जगत् में अपनी दिव्य लीलाओं के प्रारम्भ से ही यमुना नदी को पवित्र बनाया। जब उनके पिता वसुदेव उन्हें लेकर यमुना पारकर मथुरा से गोकुल जा रहे थे तो भगवान् इस नदी में गिर पड़े थे और भगवान् के चरणकमलों की धूलि का स्पर्श पाकर वह तुरन्त ही पवित्र हो गई। (श्री. भा. 1.19.6 ता.)

103. भगवान् ने गंगा की अपेक्षा यमुना को अधिक स्पर्श किया। '*वराह-पुराण*' के अनुसार, जैसा कि श्रील जीव गोस्वामी ने उद्धृत किया है, गंगा तथा यमुना नदियों में कोई अंतर नहीं है, किन्तु जब गंगा का जल एक सौ गुणा पवित्र हो जाता है तो वह यमुना कहलाती है। इस तरह शास्त्रों में कहा गया है कि विष्णु के एक हजार नाम श्रीराम के एक नाम के बराबर हैं और श्रीराम के तीन नाम श्रीकृष्ण के एक नाम के तुल्य हैं। (श्री. भा. 1.19.6 ता.)

104. वृन्दावन क्षेत्र में बारह वन हैं और मधुवन उनमें से एक है। भारत के सभी क्षेत्रों से यात्री एकत्र होते हैं और इन बारह वनों की यात्रा करते हैं। यमुना के पूर्वी तट पर पाँच वन हैं - भद्रवन, बिल्ववन, लौहवन, भाण्डीरवन और महावन। तट के पश्चिमी ओर सात वन हैं : मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलावन, काम्यवन, खादीरवन और वृन्दावन। इन बारह वनों में विभिन्न घाट या स्नान करने के स्थान हैं। उनकी सूची इस प्रकार है : (1) अविमुक्ता (2) अधिरूढ़ (3) गुह्यातीर्थ (4) प्रयाग तीर्थ (5) कनखल (6) तिन्दक का तीर्थ (7) सूर्य-तीर्थ (8) वटस्वामी (9) ध्रुव घाट (ध्रुवघाट, जहाँ पर बहुत अच्छे फलों और फूलों के पेड़ हैं, इसलिए प्रसिद्ध हैं क्योंकि इस पवित्र स्थान पर ध्रुव महाराज ने कड़ी तपस्या की थी) (10) ऋषि तीर्थ (11) मोक्ष तीर्थ (12) बुद्ध तीर्थ (13) गौकर्ण (14) कृष्ण गंगा (15) वैकुण्ठ (16) असि कुण्ड (17) चतुः समुद्रिका कूप (18) अक्रूर-तीर्थ जब श्रीकृष्ण और बलराम अक्रूर द्वारा चलाये जा रहे रथ पर मथुरा जा रहे थे, सब ने इस घाट पर स्नान किया था (19) याज्ञिक

विप्रस्थान (20) कुब्जा कूप (21) रंगस्थल (22) मंचस्थल (23) मल्लयुद्ध स्थान और (24) दशाश्वमेध। (श्री. भा. 4.8.42 ता.)

105. वृन्दावन में ऐसे बहुत से भक्त हैं जो नियमित रूप से यमुना में स्नान करते हैं और भौतिक-जगत् के कल्मष से मुक्त हो जाते हैं। निरन्तर भगवान् के नामों का जप तथा उनकी लीलाओं के विषय में सुनने से मनुष्य निश्चित् रूप से शुद्ध हो जाता है और मोक्ष प्राप्ति के लिए एक योग्य पात्र बन जाता है। (श्री. भा. 5.8.31 ता.)

106. श्रीधाम वृन्दावन के निवासी (व्रजवासी) रागात्मिका भक्ति के ज्वलन्त प्रतीक हैं। उनकी भक्ति सर्वोच्च आदर्शस्वरूपा शुद्ध रागामयी है और यह रागात्मिका भक्ति केवल वृन्दवनवासियों में ही रहती है। (भ. चै. म. शि.-13)

107. बाह्य दृष्टि से भगवान् श्रीकृष्ण के धाम वृन्दावन के निवासी सीधे-सादे गृहस्थ हैं जो गौओं को पालने, भोजन बनाने, बच्चों का पालन-पोषण करने तथा धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने जैसे सामान्य कार्यकलापों में लगे रहते हैं, किन्तु ये सारे कार्यकलाप भगवान् कृष्ण की प्रेमाभक्ति में सम्पन्न होते हैं। वृन्दावन के निवासी अपने सारे कार्यकलाप शुद्ध कृष्णभावनामृत में करते हैं इसलिए वे मुक्त जीवन के सर्वोच्च पद पर स्थित रहते हैं। अतएव वृन्दावनवासियों के उच्च पद के बारे में किसी प्रकार की भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार वृन्दावनवासियों की असाधारण स्थिति का अध्ययन करके हम यह देख सकते हैं कि उनके जीवन का आवश्यक गुण शुद्ध कृष्णभावनामृत है, जिसमें भौतिक इच्छा या मनोकल्पना के बिना प्रेमाभक्ति सम्पन्न की जाती है। (श्री. भा. 10.14.36 ता.)

108. वृन्दावन तथा मथुरा के निवासी वात्सल्य रस में श्रीकृष्ण की भक्ति करते हैं और उनके भाव स्मार्त ब्राह्मणों से सदैव विपरीत होते हैं। जो भक्त श्रीकृष्ण की ऐश्वर्य भाव में पूजा करते हैं, वे मथुरा तथा वृन्दावनवासियों के वात्सल्य-भक्ति के भावों को नहीं समझ सकते, जो रागानुगा प्रेममार्ग के अनुयायी हैं। विधि-मार्ग के पद पर स्थित भक्त रागमार्ग पर स्थित भक्तों के कार्यों का गलत अर्थ लगा सकते हैं। इसलिए महाप्रभु ने जगदानन्द पंडित को वृन्दावनवासियों से दूर रहने की सलाह दी, क्योंकि वे रागानुग भक्त हैं और कहीं वे उनका अनादर न कर बैठें। (चै.च.

अ.ली., 13.37 ता.)

109. श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने '*अमृत-प्रवाह-भाष्य*' में सलाह दी है कि यदि सम्भव हो तो वृन्दावन में दीर्घकाल तक नहीं रहना चाहिए, क्योंकि कहावत है "मान घटे नित घर के जाये"। यदि कोई अनेक दिनों तक वृन्दावन में रह जाता है वह वहाँ के निवासियों का उचित आदर नहीं कर पाता। इसलिए जिन्होंने श्रीकृष्ण के प्रति रागानुग प्रेम प्राप्त नहीं किया है उन्हें दीर्घकाल तक वृन्दावन में नहीं रहना चाहिए। (चै.च. अ.ली., 13.39 ता.)

110. भगवान् गोपाल के अर्चाविग्रह का दर्शन करने के लिए भी गोवर्धन पर्वत पर चढ़ने से बचना चाहिए। चूँकि गोवर्धन पर्वत गोपाल से अभिन्न है, इसलिए पर्वत पर पाँव नहीं रखना चाहिए। जब गोपाल कहीं अन्यत्र चले जायँ तो उनका दर्शन करना चाहिए। (चै.च. अ.ली., 13. 39 ता.)

111. वृन्दावन उस वन का नाम है जहाँ श्रीमती वृन्दादेवी (तुलसी देवी) प्रचुर-मात्रा में उगती हैं। 'वन' शब्द का अर्थ है जंगल। वास्तव में यह वैसा वन नहीं है जैसा हम अत्यधिक हरी-भरी वनस्पतियों से परिपूर्ण गहन होने के कारण साधारणतया सोचते हैं, वृन्दावन में ऐसे बारह *वन* हैं। उनमें से कुछ यमुना के पश्चिमी-तट पर स्थित हैं और कुछ पूर्वी तट पर। पूर्वी तट पर स्थित वन हैं - भद्रवन, बिल्ववन, लौहवन, भांडीरवन और महावन। पश्चिमी तट पर हैं - मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बाहुलावन, काम्यवन, खादीरवन और वृन्दावन। ये वृन्दावन क्षेत्र के बारह वन हैं। (मायापुर में चै.च. आ.ली. 1.16 प्रवचन, 9 अप्रैल, 1975)

112. इन वनों में तुलसी के पौधे और दूसरे वृक्ष भी हैं, परन्तु सभी वृक्ष दिव्य, चेतन तथा इच्छित फल देने वाले हैं। वे जिस तरह भी चाहे श्रीकृष्ण की सेवा कर सकते हैं। वे अपनी स्वेच्छा से पेड़ बने हैं। वे सभी आध्यात्मिक जीव हैं। प्रत्येक वृक्ष की श्रीकृष्ण की सेवा करने की विभिन्न प्रवृत्ति है। वृन्दावन में वृक्ष और पौधे भी जीवात्माएँ हैं, परन्तु वे साधारण जीव नहीं है। उन्होंने निश्चय किया कि वे फूल और फलों द्वारा श्रीकृष्ण की सेवा करेंगे। वे वहीं सेवा चाहते हैं। (चै.च. आ. ली. 1.16, प्रवचन, 9 अप्रैल, 1975, मायापुर)

113. वृन्दावन में श्रीकृष्ण की सेवा करने की हर प्राणी की अपनी एक विशेष प्रवृत्ति होती है।

कुछ धरती के रुप में वहाँ सेवा कर रहे है; कुछ सिंहासन के रूप में सेवा कर रहे हैं; कुछ फल और फूलों को प्रदान करने वाले प्रतिनिधि के रूप में सेवा कर रहे हैं; और कुछ गोपियों के रूप में उनकी सेवा में वचनबद्ध है, जो उनकी विश्वासपात्र सेविकाएँ है। गाएँ, बछड़े और सभी अलग-अलग जीवात्माएं हैं। वे भौतिक तत्वों से बने भौतिक शरीर नहीं हैं।

आनन्द-चिन्मयरस प्रतिभाविताभिस्,
तार्भिय एव निजरूपतया कलाभिः।
गोलोक एवं निवसत्यखिलात्मभूतो,
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

"जो अपने धाम गोलोक में अपनी स्वरूप-शक्ति चौंसठ कलायुक्त ह्लादिनीरूपा श्रीराधा तथा उनकी सखियों के साथ, जो उनके नित्य आनन्द चिन्मय रस में स्फूर्त एवं पूरित रहती हैं, निवास करते हैं, उन आदिपुरुष भगवान् गोविन्द का मैं भजन करता हूँ।''(चै.च. आ.ली., 1.16 मायापुर प्र. 9 अप्रैल, 1975)

सभी व्रजवासी भी श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति का विस्तार हैं। एक तरह से वे श्रीकृष्ण हैं। वे श्रीकृष्ण से भिन्न नहीं हैं... *'शक्ति शक्तिमतो अभेद'*। शक्ति और शक्तिमान वे दोनों भिन्न नहीं, अपितु अभिन्न हैं। जैसा कि सूर्य और सूर्य का प्रकाश; उनमें ऊष्मा और प्रकाश है। अत: जहाँ तक ऊष्मा (गर्मी) और प्रकाश की बात है दोनों एक जैसे हैं। उसी तरह श्रीकृष्ण और उनकी आनन्द देने वाली शक्ति, *आनन्द चिन्मय, ह्लादिनी* कहलाती है। "*राधाकृष्ण प्रणयविकृतिर्ह्लादिनी शक्तिरस्मात्*"। वृन्दावन का जो कुछ भी विवरण है, वह श्रीकृष्ण की आनन्दमयी शक्ति का विस्तार है। वे भिन्न नहीं है। (मायापुर में चै.च. आदिलीला 1.16 प्रवचन, 9 अप्रैल, 1975)

114. हमें वृन्दावन को कोई साधारण वन नहीं समझना चाहिए। यहाँ इस लोक में भी हमारे पास वृन्दावन है। वह साधारण वन नहीं है। वह हू-बहू गोलोक-वृन्दावन के समान ही वृन्दावन है। उनमें कोई अन्तर नहीं है। इसलिए नरोत्तमदास ठाकुर कहते हैं :

विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन,
कबे हाम हेरिबो श्रीवृन्दावन।

''कब मेरा मन संसार की चिन्ताओं और इच्छाओं से मुक्त होकर पूरी तरह से शुद्ध होगा? केवल तभी मैं वृन्दावन को समझ सकूँगा और राधा-कृष्ण के माधुर्य प्रेम को जान सकूँगा और तब मेरा आध्यात्मिक जीवन सफल होगा।''

विषय छाड़िया : हमारी वर्तमान स्थिति यह है कि हम भौतिक रोग से पीड़ित है। हमें भवरोग से मुक्त होना होगा। भवरोग का अर्थ है- इन्द्रियतृप्ति और अत्यन्त दुर्जेयरोग - यौनाकर्षण। यह भवरोग कहलाता है। हमें विषयों के संदूषण अर्थात् भौतिक सुखों से मुक्त होना होगा। यह श्रील नरोत्तमदास ठाकुर का कथन है। "जब मेरा मन भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जाएगा, तभी मैं समझ सकूँगा कि वृन्दावन क्या है?" भौतिक इच्छाओं के रहते हुए वृन्दावन को जानना बहुत कठिन है। भौतिक इच्छाओं से मुक्त होना, यह पहली योग्यता है। भक्ति अर्थात् भगवान् की प्रेमामयी सेवा। तब हम वृन्दावन को समझने में समर्थ हो सकेंगे। (मायापुर में चै.च. आ.ली. 1.16 प्र., 9 अप्रैल, 1975)

115. अक्षयानन्द : श्रील प्रभुपाद, यह हमारा 24 घंटे का कीर्तन है। मैंने सबसे प्रार्थना की कि जो भी आए वह दिन में कम से कम एक घंटा कीर्तन करे।

श्रील प्रभुपाद : किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। यही शर्त है। यदि स्वीकार है तो यहाँ रुको, नहीं तो राधा-कुण्ड जाओ।

अक्षयानन्द : दर्शनार्थी भक्तों को भी कीर्तन करना चाहिए। जो भी आये सभी को करना चाहिए।

गोपालकृष्ण : सभी को।

श्रील प्रभुपाद : तुम्हें यह नियम बनाना चाहिए।

अक्षयानन्द : कम से कम एक घंटा मन्दिर में।

श्रील प्रभुपाद : एक घंटा क्यों? चार घंटे। चार घंटे। चार बार । प्रातः, संध्या, रात्रि, फिर प्रातः।

अक्षयानन्द : नियम पहले से ही बना है.....

श्रील प्रभुपाद : नहीं, नहीं, पहले से नियम है...... हम कीर्तन निरन्तर चलाना चाहते हैं। इसके लिए चार ग्रुप (टोलियाँ) आवश्यक हैं।

अक्षयानन्द : हाँ! मेरे पास चार व्यक्ति हैं.....

श्रील प्रभुपाद : चार टोलियाँ (ग्रुप), अर्थात् चार ग्रुप और छः घंटे। तीन घंटे नहीं चार घंटे। अतः एक ग्रुप चार घंटे। प्रातः छः बजे से 9 बजे तक। दूसरा ग्रुप 9 बजे से 12 बजे तक। अगला ग्रुप 12 बजे से 3 बजे तक। अगला ग्रुप 3 बजे से 6 बजे तक। पुनः प्रातः वाला ग्रुप 6 बजे से...

अक्षयानन्द : आठ अलग ग्रुप, इससे कुल 32 व्यक्ति।

श्रील प्रभुपाद : यही सब। 32 क्यों? एक ग्रुप दिन में दो बार। एक ग्रुप एक बार प्रातः और एक बार संध्या समय।

एक भारतीय व्यक्ति : 16 व्यक्ति।

116. श्रील प्रभुपाद : अतः इस तरह 50 व्यक्ति 5 हजार। कोई 25 हजार नहीं। भूल जाओ। कोई 25 नहीं।

हरिकेश : यह प्रतिदिन 3 रुपये हुए।

श्रील प्रभुपाद : यह क्या है?

हंसदूत : यदि यह 3 रुपये 30 पैसे प्रतिदिन खाने, साबुन और टुथपेस्ट के लिए...

श्रील प्रभुपाद : कोई साबुन नहीं। यह राधाकुण्ड की मिट्टी लो, साबुन क्यों? तुम तो राधाकुण्ड के भक्त हो। तुम्हें साबुन क्यों चाहिए? यह मूर्खता है। तुम राधाकुण्ड या वृन्दावन से मिट्टी लो। वृन्दावन-रज। तुम्हें साबुन क्यों चाहिए? (यदि किसी के पास वृन्दावन की रज या राधाकुण्ड की मिट्टी है तो साबुन की कोई आवश्यकता नहीं।) (वृ.-कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

117. श्रील रूप गोस्वामी के उपदेशों को अपनाये बिना कोई श्रीराधा-कृष्ण के प्रेम-सम्बन्धों को कैसे समझ सकता है? श्रीराधा-कृष्ण के प्रेम-सम्बन्धों को समझना इतना सरल नहीं। राधाकुण्ड भी इतना सरल नहीं है कि कोई बलपूर्वक वहाँ जाए और उसका योग्य पात्र बन जाए।

रूप-रघुनाथ पदे होइबे आकुति,
कबे हाम बुझबो से युगल पीरिति।

श्रील नरोत्तमदास ठाकुर उत्कण्ठित हैं, "कब मैं राधाकुण्ड तथा श्रीराधा-कृष्ण के प्रेम को समझूँगा?" इतने मुक्त और महान् आचार्य भी लालायित हो रहे हैं कि *रूप-रघुनाथ पदे होइबे आकुति, कबे हाम बुझबो* "मैं कब समझूँगा?" इन बातों को इतना आसान मत समझो। यह सब बातें इतनी सरल नहीं है। ये सब बड़े गंभीर विषय हैं। इसलिए हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा। इसीलिये श्रील नरोत्तम दास ठाकुर ने कहा, "*ताँदेर संगे*"। लक्ष्य होना चाहिए श्रीरूप-रघुनाथ की सेवा कैसे करें? और '*भक्त सने वास*' उन शुद्ध-भक्तों का संग करना जो निष्काम हैं। '*अन्याभिलाषिता शून्यम्*' यह प्रक्रिया है। अत: सतर्कता से करो। बस। (वृ.-कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

118. तो राधाकुण्ड, कौन रहेगा राधाकुण्ड पर? एक उच्चकोटि का भक्त है और यदि वह निम्नकोटि के भक्त के साथ संग करता है तो भला कैसे वह राधाकुण्ड पर रहने का अधिकारी है? राधाकुण्ड और राधारानी में कोई अन्तर नहीं है। अत: आप राधारानी पर कैसे कूद सकते हो? राधाकुण्ड और राधारानी अभिन्न हैं। आप राधाकुण्ड में तैरने का आनन्द कैसे ले सकते हो? आप राधाकुण्ड को पाँव से भी नहीं छू सकते। आप थोड़ा जल लो और अपने सिर पर डालो। यह राधाकुण्ड के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार होगा। चाहे इसी तरह से हो रहा होगा, परन्तु तथ्य तो यह है कि राधा-कुण्ड का सम्मान राधारानी की तरह होना चाहिए। यही राधाकुण्ड की भावना को सही रूप में समझना है। उच्चतम राधाकुण्ड भावना। (वृ.-कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

119. श्रील प्रभुपाद : *निताइयेर करुणा हबे ब्रजे राधा-कृष्ण पाबे*। ये धूर्त नहीं जानते। "*निताइ, बलराम होइलो निताइ*" अत: बलराम की कृपा के बिना कोई वृन्दावनवास का रसास्वादन नहीं कर सकता। '*जय*' (वृ.-कमरे में वा., 3 सित०, 1976)

120. श्रील प्रभुपाद : वे विचारों को गढ़ते हैं और पैसा खर्चते हैं। यही मुश्किल है। सभी कोई न कोई विचार निर्मित करते हैं। और तोड़ते हैं, करते हैं, खोदते हैं। पैसा आ रहा है और वे ख़र्च कर रहे हैं। वे जो उपलब्ध है उसके साथ निर्वाह नहीं कर सकते। बड़े-बड़े विचार, बड़े-बड़े पेट। और पैसे हमें अमरीका से लाने पड़ते हैं। "मुझे एक लाख दो, मुझे एक लाख दो, 15,000 दो। मैं विचार गढ़ता हूँ तुम पैसे दो"। बहुत कमरे हैं, तुम प्रदर्शन-कक्ष बना सकते हो। यह कमरा क्यों तोड़ना? वह दरवाजा क्यों तोड़ना? बहुत सारे रसोइये मिलकर शोरबा बिगाड़ते ही हैं। और मरम्मत और क्या कहते हैं - बढ़ाना, बदलाव करना, जो कभी समाप्त नहीं हो सकेगा। मैं नहीं जानता कि इसे कैसे रोका जा सकता है - हर कोई परामर्श देगा 'और पैसा खर्चो।' आप कोई मित्र लाते हो। वह कुछ राय देगा ताकि आप खर्च कर सको। पैसा कहाँ से आयेगा? ओह! यह तुम्हें सोचना है। मैं तुम्हारा मित्र हूँ। मैं तुम्हें अच्छी सलाह दे रहा हूँ। तोड़ो। करो। मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम अपना सिर तोड़ो। (हँसी) (वृ.-कमरे में वा., 4 सित०, 1976)

121. श्रील प्रभुपाद : वे जैसा जप करना चाहते हैं उन्हें करने दो। हम तो इसी तरह जप करेंगे, पंचतत्व मंत्र- "श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द श्रीअद्वैत गदाधर, श्रीवासादि गौरभक्त वृन्द।" मैंने यह समझा दिया है। भगवान् चैतन्य के पाँच रूप।

122. भगवान् की कृपा से प्रत्येक योनि में जीव अपनी आध्यात्मिक चेतना का उचित स्थान ग्रहण कर सकता है, और इन योनियों के जीव भगवान् के प्रति अपने आध्यात्मिक प्रेम को *शान्त* रस के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं, जैसा कि परम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण की उपस्थिति के समय वृन्दावन के फूलों, फलों, वृक्षों, पर्वतों, जल व भूमि द्वारा प्रदर्शित किया गया था। (भा. क. प्र.-24)

123. यहाँ पर व्रजभूमि वृन्दावन की युवतियों (गोपियों) का उदाहरण इसलिए दिया गया है कि भगवान् की इन सनातन सहचरियों ने उस समय भगवान् श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति की तीव्र वेदना को झेला जब भगवान् गायों को जंगल में चराने ले जाने के कार्य में व्यस्त होने के कारण उनकी आँखों से ओझल हो जाते थे। श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति के समय पूरा दिन गोपियों के लिए ग्रीष्म ऋतु के तप्त दिवस के समान असहनीय हो जाता। श्रीकृष्ण ने गोपियों के उस उत्कट प्रेम की

स्वाभाविक अनुभूति की इतनी प्रशंसा की कि उन्हें घोषित करना पड़ा कि वे गोपियों के इस प्रेम का ऋण चुका पाने में असमर्थ हैं। भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु ने गोपियों की इस अनुभूति को भगवान् के प्रति की जाने वाली भक्ति की सर्वोत्तम पद्धति माना है। निष्कर्ष यह है कि भक्तियोग का अनवरत अभ्यास भक्त को भगवान् के प्रति तीव्र प्रेम के स्तर पर उठा लाएगा और बद्धात्माओं के लिए यही एकमात्र योग्यता है जिसके द्वारा उन्हें ईश्वर के धाम के आनन्दमय जीवन में पुनः प्रवेश करने की अनुमति मिल सकती है। भौतिक जगत् के त्रिविध ताप, ईश्वर के प्रेम के प्रति उत्कट प्रेम से शीघ्र निष्प्रभाव हो जाते हैं और यही ईश-प्रेम मानवीय भावनाओं को विकसित करने का चरम लक्ष्य है। (भा. क. प्र.-39)

124. मुझे भोजनालय में *कर्मी* नहीं चाहिए (किराये के रसोइये)। मैं चाहता हूँ कि ये सब तुम करो। क्या तुम मेरे लिए यह कर सकते हो? भक्तों के लिए पकाओ, भोजनालय के लिए पकाओ और अर्चाविग्रह के लिए पकाओ।

मैं चाहता हूँ कि मन्दिर के सामने प्रतिदिन खिचड़ी बाँटें। प्रतिदिन वहाँ गरीबों के लिए प्रसाद बँटना चाहिए। आप इतने धनी हो। (किशोरी देवी दासी के संस्मरण)

125. मंदिर में रहने वाले सभी भक्त 'मंगल-आरती' में अवश्य उपस्थित हों अथवा भूखे रहें। (श्री ल. प्रभुपाद द्वारा पत्र, 11 सित०, 1975)

126. यदि हम मन्दिर साफ रखते हैं तो हमारा मन भी साफ रहेगा। यही विधि है। (रुकावट)। उन्हें फूलों के काम में लगाओ, पोशाक के काम में, जो कि हल्का है तथा उनको इसमें रूचि होगी। उन्हें कोई भारी काम नहीं दिया जाना चाहिए। खाना पकाना, खाना पकाने में सहायता करना, सब्जियाँ काटना (रुकावट) - स्त्रियों को किसी काम में अवश्य लगाना चाहिए। यह जरूरी है। और इन पट्टियों को रंग करना भी।

हँसदूत : हाँ! बाहर। इन पर रंग किया जाएगा। ये सजावटें। ओह यहाँ की पट्टी?

श्रील प्रभुपाद : हाँ।

हँसदूत : आपका मतलब पट्टियाँ, हाँ अन्दर और बाहर।

श्रील प्रभुपाद : वहाँ बहुत सी तस्वीरें हैं। और वह लड़का कौन है?

हरिशौरी : विष्णु दास।

श्रील प्रभुपाद : वह हर एक पट्टी को तीन दिन में कर सकता है।

हँसदूत : मैंने उसे लिखा है कि श्रील प्रभुपाद ने परामर्श दिया है। हो सकता है वह आए और करे।

श्रील प्रभुपाद : वह इसकी कला जानता है कि कैसे किया जाए (रुकावट) विशेष, अमरीकी। यह अमरीकी क्या है? मैं नहीं पहुँच सकता? (रुकावट) अनुकूलित, हवा अनुकूलित करने के लिए वहाँ था। (अस्पष्ट)

हँसदूत : बहुत से मन्दिरों में, जिनमें ऐसे आँगन बने हैं, वे ऊपर एक जाला लगाते हैं जिससे पक्षी अंदर न आ सके। क्या हम वह कर सकते हैं या क्योंकि.....

श्रील प्रभुपाद : नहीं! बन्दर।

हँसदूत : ओह! बन्दरों के लिए। यह पक्षियों को भी नहीं आने देंगे। बहुत पक्षी हैं जो अन्दर आते हैं। वे वृक्षों पर सोते हैं और सब जगह मल त्याग करते हैं।

हरिशौरी : कबूतर भी।

हँसदूत : हाँ! कबूतर और छोटे पक्षी। वे लैम्प में है, पंखों में हैं।

श्रील प्रभुपाद : कबूतर आएँगे (हँसते हैं) वे सब इसके साथ आएंगे।

भक्त : जाली से।

हँसदूत : हाँ। किन्तु यहाँ भी एक परदा लगाया जा सकता है।

भक्त : प्रति वर्ष हमें परदा बदलना होगा।

हँसदूत : यह बहुत प्रयास होगा।

प्रभुपाद : व्यर्थ की बातें हैं (वृ. में प्रात:कालीन सैर, 2 अक्तू., 1976)

127. कृष्णभावनामृत के अनुयायियों को आदर्श गोस्वामी होना चाहिए। वैष्णवजन सामान्यतया गोस्वामी कहे जाते हैं। वृन्दावन में तो प्रत्येक मन्दिर के संचालक इसी पदवी से जाने जाते है। जो कोई श्रीकृष्ण का परम भक्त बनना चाहता है उसे गोस्वामी होना चाहिए। 'गो' का अर्थ है इन्द्रियाँ और स्वामी का अर्थ हैं प्रभु या मालिक। जब तक कोई मन तथा इन्द्रियों को वश में नहीं कर लेता तब तक वह गोस्वामी नहीं बन सकता। पहले गोस्वामी तथा बाद में श्रीकृष्ण का शुद्ध भक्त बनकर जीवन की सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य को उपदेशामृत नामक उपदेशों का पालन करना चाहिए, जिन्हें श्रील रूप गोस्वामी ने हमें प्रदान किया है। (उ. अ. भू.)

128. भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु तथा श्रीनित्यानन्द प्रभु की कृपा हुए बिना वृन्दावन जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यदि मनुष्य का चित्त शुद्ध नहीं है तो वृन्दावन जाकर भी वह वृन्दावन के दर्शन नहीं कर सकता। वास्तव में वृन्दावन जाने का अर्थ है भक्तिरसामृत सिन्धु, विदग्धमाधव, ललितमाधव तथा महान् गोस्वामियों द्वारा लिखित अन्य पुस्तकों को पढ़कर इन गोस्वामियों की शरण ग्रहण करना और इस तरह से ही राधाकृष्ण के दिव्य प्रेमभाव को समझा जा सकता है। "*कबे हाम बुझवो से युगल-पिरीति*"। राधाकृष्ण का माधुर्य-प्रेम सामान्य मानवीय व्यवहार नहीं है, यह पूर्णतया दिव्य है। राधाकृष्ण को समझने के लिए, उनकी पूजा करने तथा उनकी प्रेमाभक्ति में लगने के लिए मनुष्य को श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु के प्रत्यक्ष शिष्यगण षड्गोस्वामियों से मार्गदर्शन ग्रहण करना चाहिए। (चै.च.आ.ली. 8.31 ता.)

129. हृषिकेशानन्द दास : गुरुदेव, नित्यलीला के बारे में।

श्रील प्रभुपाद : और?

हृषिकेशानन्द दास : सिद्ध प्रणाली, अष्टकालीय-लीला-स्मरण, भजन। गुरुदेव क्या यह सच है?

श्रील प्रभुपाद : हाँ, लेकिन सिद्ध कौन?

हृषिकेशानन्द दास : करोड़ों जिज्ञासुओं में कोई एक, "*मनुष्यानाम् सहस्त्रेषु*" किन्तु गुरुदेव, यह (*नित्य लीला*) हमारा लक्ष्य है?

श्रील प्रभुपाद : हाँ, हम श्रीरूप-रघुनाथ के अनुयायी हैं। यह सबसे ऊँचा ज्ञान है। राधा-कृष्ण की लीला में दासानुदास बनना।

हृषिकेशानन्द दास : किन्तु सिद्ध-प्रणाली के विषय क्या है? कैसे योग्यता प्राप्त की जाए? कौन देगा?

श्रील प्रभुपाद : गुरु प्रदान करेंगे। तुम केवल 'हरे-कृष्ण' जप करो।

हृषिकेशानन्द दास : मैंने छोटा कृष्णदास की कहानी का विवरण दिया जिसने मानसी गंगा में कूद कर अपने को मारना चाहा, जब उसने सुना कि केवल उसके गुरु, जो दिवंगत हो चुके थे, उसे सिद्ध प्रणाली दे सकते थे। गुरुदेव यह स्थाई भाव कैसे प्राप्त करें?

श्रील प्रभुपाद : गुरु देंगे। यह कोई भौतिक विचार नहीं कि गुरु यहाँ है या वहाँ। जब तुम उस स्तर पर पहुँचोगे, गुरु तुम्हें देंगे।

हृषिकेशानन्द दास : लेकिन मानस-सेवा क्या है? उस ब्राह्मण की तरह, जिसने ध्यान में अपनी अँगुली जला ली। क्या वह भजन है?

श्रील प्रभुपाद : श्रीकृष्ण कोई भेद नहीं करते। किन्तु यदि आप मन से श्रीकृष्ण की सेवा करो तो वे स्वीकार करेंगे। यह सच है।

हृषिकेशानन्द दास : गुरुदेव। जब भी मैं रूपानुगा भक्ति के बारे में बात करता हूँ, मेरे कई गुरुभाई

क्रोधित हो जाते हैं और कहते हैं कि यह गौड़ीय-मठ की एक मूर्खता भरी बातें हैं और आपने यह कभी नहीं सिखाया।

श्रील प्रभुपाद : धीरे-धीरे सब कुछ आ रहा है। वे सब समझ जाएँगें।

हृषिकेशानन्द दास : क्या यह कविराज गोस्वामी द्वारा वर्णित अष्टकालीय लीला ही *नित्य लीला* का विस्तार है?

श्रील प्रभुपाद : हाँ।

हृषिकेशानन्द दास : मैं इस श्लोक 10 (उपदेशामृत) में *अष्टकालीय लीला* का वर्णन करना चाहता हूँ। अत: हम आपसे उच्चतम लक्ष्य को जान सकते हैं। आप क्या सोचते हैं?

श्रील प्रभुपाद : हाँ, तुम लिख दो।

हृषिकेशानन्द दास : भक्तिरसामृत सिन्धु के इन दो श्लोकों के विषय में क्या राय है (*कृष्ण स्मरण*)। *सेवा साधक रूपेण*.... मैं सोचता हूँ कि इससे तात्पर्य में बढ़ावा होगा। (उ. अ. 8) क्या यह ठीक है?

श्रील प्रभुपाद : हाँ

हृषिकेशानन्द दास : गुरुदेव, रूपानुगा भक्ति के विषय में आपकी क्या राय है? हमारे (शिष्यों) और आपके बीच नित्य सम्बन्ध क्या है?

श्रील प्रभुपाद : (प्रभुपाद *गुर्वाष्टकम्* के छठे *श्लोक* का विवरण देते हैं) गुरु अपने गुरु की अध्यक्षता में सेवा कर रहा है। तुम सब भी वैसा ही कर सकते हो। 'नित्य-लीला' में हर भक्त इसी तरह सोचता है कि मेरे गुरु राधा-कृष्ण को अत्यन्त प्रिय है।

हृषिकेशानन्द दास : अत: इसका अर्थ है कि आपका और मेरा सम्बन्ध नित्य है, यह नित्यलीला में भी रहेगा।

श्रील प्रभुपाद : हाँ।

हृषिकेशानन्द दास : मन्जरी की भाँति ?

श्रील प्रभुपाद : साख्य भाव तक ।

हृषिकेशानन्द दास : परन्तु रूपानुगा के बारे में, क्या यह सदा मञ्जरी-भाव नहीं है ?

श्रील प्रभुपाद : हाँ। यही सबसे महान् भाव है, परन्तु आध्यात्मिक जगत् में कोई ऐसा अन्तर नहीं। सभी कृष्णभावनाभावित हैं, यहाँ तक.. (फूल और बादल भी शांत रस का उदाहरण हैं)

हृषिकेशानन्द दास : गुरुदेव, क्या यह सच है कि श्रील भक्तिविनोद का आध्यात्मिक नाम ''..... ..'' मञ्जरी है ? और आपके गुरु भी, क्या उनका नाम भी ''....'' नहीं है ?

श्रील प्रभुपाद : (हँसते हुए) ओह! तुमने बहुत कुछ सीख लिया है ?

हृषिकेशानन्द दास : मैं कुछ नहीं जानता, गुरुदेव, मैंने इसके विषय में सुना है। गौड़ीय-मठ के भक्तों में यह विशेष विचारणीय बात है। मुझे बड़ा दु:ख होता है कि मेरे गुरुभाई आपके गुरु भाइयों की निन्दा करते हैं।

श्रील प्रभुपाद : ऐसा कौन कहता है ?

हृषिकेशानन्द दास : बहुत से लोग, गुरुदेव। वे कहते हैं कि केवल वे ही प्रचार करते हैं। लेकिन श्रील प्रभुपाद (श्री श्रीमद् श्रील भक्ति सिद्धान्त ठाकुर) के बारे में क्या ? मैंने सुना है वे भजनानन्दी थे और उनका कोई शिष्य नहीं था। कुंज बिहारी दास (श्रीपाद बी.वी. भक्ति तीर्थ महाराज) ने उन्हें ढूँढा और उन्हें बाहर लाए प्रचार के लिए। क्या ऐसा नहीं है ?

श्रील प्रभुपाद : हाँ। मेरे गुरु प्रचार के लिए बाहर आए।

हृषिकेशानन्द दास : क्या वे पहले से नित्य लीला में नहीं थे ? श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी के बारे में क्या है, क्या उनका केवल एक ही शिष्य नहीं था ?

श्रील प्रभुपाद : हाँ, लेकिन वे एक शिष्य हजारों शिष्यों से अच्छे थे। वे मेरे गुरु महाराज थे। वे वहाँ थे (*नित्य लीला* में) परन्तु कृपा करके वे प्रचार के लिए नीचे स्तर पर आए।

हृषिकेशानन्द दास : आपके गुरुभाई कृष्णदास बाबा जी के विषय में आपका क्या विचार है? उनका भी कोई शिष्य नहीं है?

श्रील प्रभुपाद : अकिंचन कृष्णदास?

हृषिकेशानन्द दास : हाँ। गुरुदेव।

श्रील प्रभुपाद : दो प्रकार के शिष्य होते हैं, भजनानन्दी और गोष्ठानन्दी। बाबा जी महाराज भजन में हैं।

हृषिकेशानन्द दास : वे निरन्तर 'हरे-कृष्ण' का जप करते हैं।

श्रील प्रभुपाद : हाँ। उनका केवल यही काम है। वे अकिंचन हैं।

हृषिकेशानन्द दास : "*बोधयन् आत्मानात्मानाम्।*" का क्या अर्थ है (BS V/59), क्या इसका यह अर्थ है कि हम परमात्मा और अपने स्वरूप को साथ-साथ समझे?

श्रील प्रभुपाद : हाँ।

हृषिकेशानन्द दास : गुरुदेव! आपके स्वरूप को कैसे जाना जाये?

श्रील प्रभुपाद : उसी प्रकार से।

(मायापुर में हृषिकेशानन्द दास और श्रील प्रभुपाद के मध्य दो/तीन सप्ताह तक बंगाली में वा. 1973)

130. अत: माँ यशोदा क्या कर रही है? वे श्रीकृष्ण से आसक्त हैं और वही वृन्दावन है। यही बात दूसरी तरह भी है। वृन्दावन का अर्थ है, 'श्रीकृष्ण से आसक्ति।' नन्द महाराज कृष्ण से

आसक्त हैं; गोपबाल श्रीकृष्ण से आसक्त हैं; गाएँ और बछड़े श्रीकृष्ण से आसक्त हैं; फूल श्रीकृष्ण से आसक्त हैं; जल श्रीकृष्ण से आसक्त है। यही वृन्दावन है। वृन्दावन का अर्थ है जहाँ आसक्ति के केन्द्रबिन्दु श्रीकृष्ण हों। यही वृन्दावन है।

अतः यदि आप प्रमुख आसक्ति श्रीकृष्ण के प्रति उत्पन्न कर सकते हैं तो वह वृन्दावन है। तब तुम कहीं भी वृन्दावन स्थापित कर सकते हो। कोई परिवार, कोई समाज, कोई भी देश, यदि केवल श्रीकृष्ण के प्रति आसक्ति उत्पन्न कर सकता है, तो वही वृन्दावन है। इसी बात की आवश्यकता है। यही कृष्णभावनामृत आन्दोलन है। (वृ. में श्री. भा. पर प्रवचन 7.6.8-10 दिस०, 1975)

131. (यह एक प्रातः काठीय सैर का समय था। प्रायः जब शिष्य वृन्दावन के विषय में बात करते, श्रील प्रभुपाद वृन्दावन के कुछ बाबा-लोगों की आलोचना करते और वृन्दावन में भ्रष्टाचार के विषय में बातें करते।) एक शिष्य ने श्रील प्रभुपाद से पूछा कि, "यदि इतने सारे व्रजवासी पतित आत्माएँ हैं तो इस कथन का क्या अर्थ है कि जो वृन्दावन में जन्म लेता है वह मुक्त आत्मा है। और *श्रीकृष्ण* पुस्तक में कहा गया है कि वृन्दावन के निवासियों को गुरु की आवश्यकता नहीं है। श्रीकृष्ण ही उनके गुरु हैं।''

''हाँ'', श्रील प्रभुपाद ने उत्तर दिया, "उनके पास एक उत्कृष्ट गुरु है। परन्तु यदि किसी के पास गुरु है और वह उसकी आज्ञा का पालन नहीं करता। तब उसकी क्या स्थिति है? अतः वे पतित लोग हैं जो वृन्दावन में गलत काम करते हैं। परन्तु वे भाग्यशाली भी है कि वृन्दावन में उनका जन्म हुआ। परन्तु वे अपने भाग्य का दुरुपयोग करते हैं।'' (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, अ० 5, पृष्ठ 197)

132. अर्चाविग्रहों के लिए भोग बनाने की सेवा करने वाली भक्तिन किशोरी देवी दासी ने श्रील प्रभुपाद से अपनी सेवा के विषय में कुछ पूछा। उन्होंने राय दी, श्रीकृष्ण को इस प्रकार भोग लगाओ मानो वे एक नवयुवक हैं तथा बहुत भूखे हैं। श्रीकृष्ण के लिए दस पूरियाँ, चार चपातियाँ, बहुत सारा चावल, दो समोसे, दो कचोरियाँ, दो वड़े तथा हर मिठाई दो-दो हो। पकाया भोजन गर्म-गर्म भोग लगाया जाए। उन्होंने कहा, कि अब आप सबको सिखाओ कि कैसे

श्रीकृष्ण के लिए भोजन पकाया जाए। जो कुछ आपके पास है, सबको बाँटो। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग-6, पृष्ठ 144-5)

133. मेरे विचार में आपको अर्चाविग्रह का अधिक फूलों से शृंगार करना चाहिये। श्रीकृष्ण वृन्दावन के ग्रामीण वातावरण से जुड़े हैं इसलिए फूल उन्हें बहुत पसन्द है। मेरे विचार से जर्मनी में फूल बहुत महँगे हैं, अतः जितना सम्भव हो फूलों की संख्या में वृद्धि करो। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 13 जून, 1970)

134. इस प्रातःकालीय सैर के दौरान हम एक छोटे कात्यायानी दुर्गा देवी के मन्दिर के पास से गुजरे। श्रील प्रभुपाद ने हमें समझाया कि हम दुर्गा देवी की पूजा श्रीकृष्ण के पास जाने के लिए कर सकते हैं। यही कारण है कि वृन्दावन में इनके अर्चाविग्रह हैं। उन्होंने ब्रह्मसंहिता के (5.44) श्लोक का ऊँचे स्वर में उद्धरण करते हुए अपना सम्मान व्यक्त किया तथा दुर्गा देवी को राधारानी की छाया शक्ति कहकर विवरण दिया। (एक आध्यात्मिक डायरी, पृ० 315)

135. लोग यहाँ क्यों आते हैं? जब तुम चल रहे थे तो तुमने एक भक्त को देखा। वह रमणरेती से रज लेकर अपने सिर पर डाल रहा था। यह वृन्दावन की रज है। व्रज-रज भी श्रीकृष्ण ही हैं। अतः "*आराध्यो भगवान् व्रजेशतनय तद्धाम वृन्दावनम्*"। यह आचार्यों का कथन है। सभी जानते हैं कि व्रजेन्द्रनन्दन, हरि, श्रीकृष्ण पूजनीय हैं। परन्तु उनका धाम वृन्दावन भी उन्हीं के समान पूजनीय है। (वृ. में श्री. भा. 7.9.48, 3 अप्रैल 1976)

136. लोकनाथ ने बताया कि कैसे अपनी यात्रा के समय वे बद्रीनाथ तथा भीम के पुल तीर्थ भी गए। श्रील प्रभुपाद यह सुनकर प्रसन्न हो गए और तब उन्होंने एक बैलगाड़ी पर बैठकर वृन्दावन परिक्रमा करने की अपनी दिव्य इच्छा प्रकट की। तमालकृष्ण और भवानन्द ने, जो बहुत आत्मीयता से श्रील प्रभुपाद की सेवा कर रहे थे, श्रील प्रभुपाद की इस इच्छा का पालन करने में स्वयं को असमर्थ पाया, क्योंकि उनका मानना था कि श्रील प्रभुपाद का कमजोर शरीर सड़क के झटकों को सहन नहीं कर पाएगा।

परन्तु श्रील प्रभुपाद ने तर्क दिया कि "परिक्रमा करते हुए शरीर त्यागना बहुत प्रसंशनीय

होगा,'' और उन्होंने उन्हें ले जाने के लिए कहा। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत भाग 6, पृष्ठ 416-7)

137. मन्दिर के कमाण्डर होने के नाते हरिशौरी ने एक वृद्ध व्यक्ति को मन्दिर में अर्चाविग्रह के सामने खाने से मना किया। वह वृद्ध व्यक्ति इस बात का बुरा मान गया और एक बंगाली युवक ने उसका समर्थन किया और हरिशौरी पर चिल्लाते हुए कहा कि उसे मन्दिर में किसी की आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं है। हरिशौरी ने उसकी बात की उपेक्षा करने का प्रयास किया परन्तु बंगाली युवक हरिशौरी पर लगातार चिल्लाता रहा और उसे मन्दिर से बाहर निकालने तथा शिखा काटने की धमकी दी। अन्त में हरिशौरी ने उस युवक की बाजू मोड़ दी और चौकीदार को उसे बाहर निकालने के लिए कहा। श्रील प्रभुपाद ने शीघ्र इस घटना के बारे में सुना और हरिशौरी को बुला भेजा। श्रील प्रभुपाद ने अपने शिष्य पर गहरी दृष्टि डाली। "मंदिर-कमाण्डर का अर्थ सैनिक-कमाण्डर नहीं। तुमने अर्चाविग्रह के सामने न खाने के बारे में कहाँ से सुना।" हरिशौरी को सही प्रसंग स्मरण नहीं हो रहा था और वे बहुत लज्जित हुए। उन्होंने कहा, "श्रील प्रभुपाद, शायद मैंने आपकी किसी एक पुस्तक में पढ़ा था।" प्रभुपाद ने पुन: उनकी ओर देखा। वे अपने शिष्य की अनजान गलती समझ गए। किन्तु भारत में अनुभवहीनता के कारण हरिशौरी इस घटना की गम्भीरता को समझ नहीं सके। वास्तव में इस्कॉन के भक्तों के और व्रजवासियों में संवेदनशील सम्बन्ध का विचार करते हुए उसे इस दुर्व्यवहार को सहन कर जाना चाहिए था। यह उसकी एक अनभिज्ञ गलती थी, परन्तु अनभिज्ञता कोई बहाना नहीं है। श्रील प्रभुपाद ने कहा, "यह एक महान् अपराध है। वह बाहर जाएगा और बहुत सारे लोगों को बतायेगा कि विदेशियों ने मुझे मन्दिर से बाहर फेंक दिया। यह बहुत बुरी बात है।" श्रील प्रभुपाद ने हरिशौरी की ओर बहुत गंभीरता से देखा। उन्होंने कहा, "अब तुम ढूँढ़ो कि वह आदमी कहाँ रह रहा है और तुम उसे यहाँ वापस लाओ। उसे यहाँ आने के लिए आमंत्रित करो। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6, पृष्ठ 143-4)

138. श्रील प्रभुपाद ने कहा, "वृन्दावन श्रील रूप गोस्वामी तथा श्रील सनातन गोस्वामी का उपहार है। उन्होंने बहुत-सी पुस्तकें लिखीं जिससे दुर्भागे लोग उनका लाभ उठा सकें और कृष्णभावनाभावित बन सकें। आज हमें वृन्दावन में श्रील रूप गोस्वामी की नकल करने वाले

बहुत-से मिल जाएँगे। उन्हें तब तक श्रील रूप गोस्वामी का वेश धारण नहीं करना चाहिए जब तक कम से कम वे सिगरेट पीना नहीं छोड़ते। ये श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती की सलाह थी कि हमें शीघ्र छलांग नहीं लगानी चाहिए और एकदम अपनी वेशभूषा नहीं बदलनी चाहिए। हमें सिद्ध पुरुषों से पूर्ण सत्य के विषय में श्रवण करने का प्रयास करना चाहिए। श्रील प्रभुपाद ने कहा कि विशेषकर वृन्दावन में रहने वाले उनके शिष्यों को गोस्वामी बनना चाहिए। चाहे गृहस्थ हों या ब्रह्मचारी उन्हें सादगी तथा संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए और 24 घंटे श्रीकृष्ण की सेवा में रत होना चाहिए।" (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 5, अध्याय 7, पृष्ठ 187)

139. श्रील प्रभुपाद ने कहा, "अन्य मन्दिर घर से दूर, घर हैं परन्तु वृन्दावन तो वास्तविक घर है। जो भक्त वहाँ उनके साथ रहना चाहते हैं, उन्हें निरन्तर समीक्षा और कड़ी आलोचना की परीक्षा से गुजरना होगा। उन्हें कड़ा परिश्रम और तपस्या सहन करनी होगी। विशेष तपस्या अर्थात् विशेष आशीर्वाद। जब एक शिष्य ने वृन्दावन की सेवाएँ छोड़कर पश्चिम में एक कृषि फार्म चलाने के लिए श्रील प्रभुपाद से पूछा तो प्रभुपाद ने कहा कि 20 फार्म भी चलाने इतने महत्वपूर्ण नहीं जितना कि वृन्दावनवास। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6, पृष्ठ 145)

140. वृन्दावन दिल्लगी का स्थान नहीं है – उन्हें वृन्दावन में श्रीकृष्ण के लिए गंभीर होना जरूरी है। और मैं उन्हें सब कुछ प्रदान करूँगा। पैसे की चिन्ता मत करो, अपितु प्रबन्धन करो। पैसे की कोई कमी नहीं। वहाँ केवल प्रबन्धन की कमी है। मन्दिर में इतने बच्चे क्यों हैं? ये केवल विधवा स्त्रियों के लिए स्थान नहीं है? बच्चों को निरन्तर व्यस्त रखना होगा, जिससे वे चारों ओर उत्पात न मचाएँ। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6, पृष्ठ 166)

141. एक शुद्ध भक्त कभी भी इस भौतिक जगत् में किन्हीं ऊँचे पदों के प्रति आकर्षित नहीं होता। वह व्रजवासियों की तरह केवल पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के साथ, श्रीमती राधारानी, गोपियों की तरह, श्रीकृष्ण के माता-पिता (नन्द महाराज और यशोदा) की तरह, श्रीकृष्ण के गोप-सखाओं की तरह और श्रीकृष्ण के दासों की तरह सम्पर्क में रहना चाहता है। वह श्रीकृष्ण के वृन्दावन के सुन्दर वातावरण के साथ अपना सान्निध्य चाहता है। ये श्रीकृष्ण के भक्त के ऊँचे लक्ष्य हैं। भगवान् विष्णु के भक्त भले ही अपने लिए वैकुण्ठ लोक की प्राप्ति की कामना करते हों, किन्तु

श्रीकृष्ण के भक्त कभी ऐसी इच्छा नहीं रखते। वे तो गोलोक वृन्दावन वापस जाना चाहते हैं, जहाँ वे श्रीकृष्ण की नित्य लीलाओं में भाग ले सकें। (श्री. भा. 6.12.22 ता.)

142. श्रील प्रभुपाद के एक शिष्य की बेटी की वृन्दावन में मृत्यु हो गई और जब श्रील प्रभुपाद से पूछा गया कि क्या वह भगवान् कृष्ण की व्यक्तिगत सेवा के लिये भगवद्धाम गई है? तो उन्होंने कहा, "हाँ, जो कोई भी वृन्दावन में अपना शरीर छोड़ता है, अवश्य मुक्त होता है।" (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6, पृष्ठ 419)

143. हरिशौरी को दिल्ली से श्रील प्रभुपाद पर एक और विस्तृत ज्योतिषी-चार्ट प्राप्त हुआ। इस ज्योतिषी ने शिव जी का एक मंत्र 21 दिन तक 10 ब्राह्मणों द्वारा जपने का परामर्श दिया।

श्रील प्रभुपाद ने इस परामर्श को नकारते हुए कहा, "हमारे पास महामंत्र है। हमें किसी और मंत्र की आवश्यकता नहीं है।"

हरिशौरी ने कहा -"श्रील प्रभुपाद! क्या ये ज्योतिषी-चार्ट भक्तों पर लागू होते हैं?"

"नहीं" प्रभुपाद ने कहा, "ज्योतिष पर व्यर्थ पैसे खराब मत करो।"

श्रील प्रभुपाद का विश्वास केवल कीर्तन पर था। तमालकृष्ण ने सुझाव दिया कि वे पुन: निरन्तर कीर्तन करेंगे और प्रभुपाद ने कहा, "यही वास्तविक कार्य है। ये ज्योतिषी कर्मी हैं। कर्मियों से हमें कोई सरोकार नहीं है।" (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6 पृष्ठ 391)

144. श्रील प्रभुपाद ने कहा ''यदि माताएँ गैर-जिम्मेदार हैं और केवल अपने बच्चों का ही ध्यान रखना चाहतीं हैं तो वे वृन्दावन से दूर भेज दी जानी चाहिए। दो स्त्रियाँ शिशु-पाठशाला (नर्सरी) चला सकती हैं और बहुत-से बच्चों की देखभाल कर सकती हैं और दूसरी स्त्रियाँ काम कर सकती हैं। श्रील प्रभुपाद ने कहा, "वे छत पर जाकर प्रेम-प्रलाप न करें, और फिर योजना बनाकर भाग जाएँ।'' उन्होंने जोर दिया कि क्योंकि सारा भारत वृन्दावन आता है, इस्कॉन का केन्द्र एक आदर्श स्थान होना चाहिए। नहीं तो सभी लोग सोचेंगे कि उनके शिष्य हिप्पी हैं और कोई यहाँ नहीं आएगा। बच्चों की देखभाल का अच्छा उदाहरण मायापुर में था, जहाँ एक गुरुकुल की

पहले से व्यवस्था हो चुकी थी। प्रभुपाद ने कहा, ''बच्चों का स्वागत है, परन्तु उन्हें हीरा बनाओ, बिगाड़ो मत। *वर्ण-संकर,* हिप्पी नहीं।'' (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6, पृष्ठ 166)

145. उन्होंने कहा कि 'कृष्ण-बलराम' मन्दिर संसार में सबसे उत्तम है। उन्होंने कहा कि वहाँ रहने से युवक ब्रह्मचारी-जीवन की सारी साधनाओं का अनुसरण कर पायेंगे और बहुत आनन्दमय हो जाएँगे। वहाँ और बहुत से लाभ भी हैं। तथ्य यह है कि भारत में रहना बहुत सस्ता है और इस तरह अभिभावकों पर कम बोझ पड़ेगा। इसलिए हर तरह से यह स्पष्ट है कि गुरुकुल बनाने का सबसे उत्तम स्थान वृन्दावन है। (ट्रान्सन्डेंन्टल डायरी, पृष्ठ 281)

146. श्रील प्रभुपाद ने कहा कि वृन्दावन में तपस्वी ठंड में भी नग्न रहते हैं। वे भौतिक जगत् में पुन: जन्म न लेने के लिए दृढ़ हैं। अत: यह जीवन तपस्या के लिए है, परन्तु हम इस युग में इतनी कड़ी तपस्या नहीं कर सकते। अत: हमारी तपस्या दुर्भागे पागल लोगों के सुधार करने के प्रयास में होनी चाहिए। सभी को श्रीकृष्ण के लिए स्वेच्छा से कष्ट सहना चाहिए। श्रीकृष्ण पतित आत्माओं के उद्धार के लिए अवतरित होते हैं, यदि तुम इसमें थोड़ा सहयोग दो तो वे अत्यन्त प्रसन्न होंगे। श्रीकृष्ण स्वयं प्रकट होते हैं और वे अपने प्रतिनिधि को भेजते हैं और वे कुछ शास्त्र छोड़ जाते हैं और हम फिर भी इन्द्रियतृप्ति के पीछे पागल रहते हैं। इसलिए हमारी तपस्या है कि हम पतित-आत्माओं के सुधार का प्रयास करें। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 5, पृष्ठ 193)

147. जो व्यक्ति वृन्दावन में भौतिक अभिप्राय से आता है वह वृन्दावन में पुन: एक कुत्ते या एक बन्दर के रूप में जन्म लेगा। यही उसका दण्ड है, परन्तु यहाँ कुत्ते भी वैष्णव हैं। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 5, पृष्ठ 194)

148. भूमि बहुत शुष्क थी। श्रील प्रभुपाद ने कहा कि वृन्दावन तो रेगिस्तान की तरह होता जा रहा है और भविष्य में और ऐसा होता जाएगा। उन्होंने कहा कि ये अधर्म के कारण था। उन्होंने कहा, "मैं पश्चिम के अमरीका और जर्मनी देशों में देखता हूँ चारों ओर बहुत हरियाली है, परन्तु यहाँ नहीं है।''

भक्तों ने श्रील प्रभुपाद से पूछा "क्या पश्चिमी देश वृन्दावन से अधिक धर्महीन (श्रद्धाहीन) नहीं हैं?"

श्रील प्रभुपाद ने कहा, "हाँ, मैं तुम्हारे पास पश्चिम में आया और तुम श्रीकृष्ण के बारे में कुछ नहीं जानते थे। तुम नहीं जानते थे कि माँस खाना और अवैध सम्बन्ध बुरी चीजें हैं, परन्तु जब मैंने तुमसे बन्द करने के लिए कहा तो तुमने उन्हें बन्द कर दिया। परन्तु यह वृन्दावन श्रीकृष्ण की धरती है और ये लोग यही चीजें यहाँ कर रहे हैं। अत: यह और भी खराब है। और ये लोग स्वयं श्रीकृष्ण द्वारा दण्डित हो रहे हैं।'' (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 5, पृष्ठ 197)

149. श्रील प्रभुपाद ने कहा, प्रत्येक को मंगल-आरती में अवश्य उपस्थित होना चाहिए। सबको अवश्य उपस्थित होना चाहिए नहीं तो प्रसाद नहीं। यदि आप बहुत बीमार हैं तो आपको खाना भी नहीं खाना चाहिए। मंगल-आरती के समय सोना मना है, क्योंकि वह कहता है कि वह बीमार है, परन्तु प्रसाद के समय वह पेटू की तरह खाता है। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 6, पृष्ठ 163)

150. वृन्दावन श्रील प्रभुपाद का घर है। भारत के धार्मिक लोग तथा पश्चिम के धार्मिक विद्वान् श्रील प्रभुपाद को वृन्दावन का वैष्णव साधु की तरह देखते है। जब उन्होंने न्यूयॉर्क से प्रचार कार्य आरम्भ किया तो प्राय: वे अपना परिचय देते "मैं वृन्दावन से आया हूँ।" एक बार उन्होंने कहा, "मैं यहाँ अब न्यूयॉर्क में बैठा हूँ, जो संसार का सबसे बड़ा शहर है, परन्तु मेरा मन सदा वृन्दावन के प्रति लालायित रहता है। मैं पवित्र वृन्दावन लौटकर अत्यन्त प्रसन्न होऊँगा। व्रजवासी भी श्रील प्रभुपाद को अपने नगर की सफलता समझते हैं। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 5, पृष्ठ 249)

151. (यह घटना तब घटी जब श्रील प्रभुपाद ने अपना निवास स्थान श्रीकृष्ण-बलराम मंदिर के नए बने हुए कमरों को बनाया, जबकि उनके शिष्यों को पास स्थित फोगला-आश्रम में रहना पड़ा।) यह देखकर कि उनके बहुत से शिष्य उनके कमरे में होने वाली पहली संध्या सभा में सम्मिलित नहीं हुए, श्रील प्रभुपाद ने पूछताछ की और पाया कि उनमें से बहुत शिष्य वृन्दावन के पुराने मन्दिरों और दर्शनीय स्थानों को देखने गए हैं, जबकि कुछ बाजार में खरीदारी करने और शेष अभी भी सो रहे हैं। श्रील प्रभुपाद ने गुस्से में कहा, "उन सबको वापस लाओ। धाम में आने का अर्थ है वहाँ जाना जहाँ साधु हैं। मैं यहाँ हूँ, अत: हर कोई दूसरी जगह क्यों जा रहा है?" यह सुनकर श्रील प्रभुपाद के कमरे में इतने शिष्य आ गए कि वे कमरे में पूरे नहीं समा रहे थे। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग 5, पृष्ठ 193)

152. अतः जो विधि-विधानों (*गृहस्थ-आश्रम* के) का पालन नहीं करते वे *अजितातमन:* अनियंत्रित-इन्द्रियों के शिकार, इन्द्रियों द्वारा उत्पीड़ित *अजितातमन:* कहलाते हैं। अतः उनका एक ही कार्य होता है जितना हो सके अधिक से अधिक सोना। उनको प्रातः जल्दी उठने का अभ्यास नहीं होता.... अतः सब *निष्फल*।'*अजितातमन:*' का अर्थ है कि वे अपने जीवन के दिन व्यर्थ गँवा रहे है। वैदिक-सभ्यता के अनुसार *निद्रा* बहुत खतरनाक है। यह व्यर्थ में समय गँवाना है। यदि कोई मनुष्य-योनि के विषय में गंभीर नहीं है तो अपना जीवन सो कर गँवा सकता है। यदि हम अपने पूर्व आचार्यों, हमारे गोस्वामियों का जो मंत्री थे, उनका अनुसरण करते हैं........ परन्तु वे तो वृन्दावन में साधना करने आए थे....... कौन-सी? *निद्राहार-विहाराकादि विजितौ,* वे निद्रा पर, खाने पर और संभोग पर विजय पाने आए थे। और यदि वृन्दावन आकर भी हम इन्हीं बातों में मग्न रहते हैं तो वृन्दावन आने का क्या लाभ? नरक जाओ और वहीं रहो। तो यह है वृन्दावन का जीवन। तुम्हें *निद्राहार विहाराकादि विजितौ* का अभ्यास करना होगा। यही वांछनीय है। (वृ. में प्रवचन श्री. भा. 7.6.6, 8 दिस०, 1975)

153. किसी तरह से भी हो अतिथि-गृह को हर तरह की समस्याओं से मुक्त होना चाहिए। यह केवल अतिथियों द्वारा ही प्रयुक्त होना चाहिए। मुझे विश्वसनीय सूत्रों से सूचना मिली है कि भक्तों के वहाँ रहने के कारण कुछ अतिथियों को कभी-कभी अतिथि-गृह में इसलिए स्थान नहीं मिला क्योंकि वहाँ सभी कमरे भक्तों द्वारा ले लिए गए थे। सच्चाई यह भी है कि मुकुट का व्यापार 8-10 कमरों में चल रहा है, जो बहुत बुरी बात है। अतिथि-गृह और किसी काम के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए। ये पहले ही खराब हो चुका है और उन्हें अवश्य यहाँ से चले जाना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 9 जून, 1976)

154. वृन्दावन में इतनी स्त्रियाँ क्यों हैं? वृन्दावन सेवानिवृत्त लोगों के लिए है, कृष्णभावनामृत में वृद्ध लोग अपना सारा समय प्रेमाभक्ति में लगा सकते हैं। ऐसे लोगों की वृन्दावन में आवश्यकता है; न कि स्त्रियों और बच्चों की। यही सत्य है, पवित्र-*धाम* संन्यासियों और विशेषकर *ब्रह्मचारियों* के लिए हैं। अगर आवश्यक हो तो प्रबंधन संन्यासियों तथा *ब्रह्मचारियों* द्वारा किया जाना चाहिए न कि *गृहस्थों* के द्वारा। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 9 जून, 1976)

155. आपने अतिथि-गृह में आकर रहने के लिये अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित करने की चर्चा की.... हाँ, लेकिन ऐसा आकर्षण कब पैदा किया जाएगा? पहला कदम तो है कि अतिथिगृह से बच्चों को निकाला जाये, नहीं तो कोई भी यहाँ नहीं आएगा। यह बहुत अधिक कष्टप्रद है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 24 जून, 1976)

156. आज किसी सज्जन व्यक्ति के लिए जंगल में रहना संभव नहीं है। यह संभव नहीं। तब यहाँ एक स्थान है; वृन्दावन, पवित्र-स्थान। हमने यह भवन बनवाया है, लोग वानप्रस्थ ले या सेवानिवृत्त हों और यहाँ आएँ और शांतिपूर्वक यहाँ रहें और आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाएँ। (कमरे में वा., 26 सित०, 1976)

157. वृन्दावन में रहना जीवन की पूर्णता है और वृन्दावन में बड़े होना तो उत्तम सौभाग्य की बात है। पश्चिम की घृणित सभ्यता के साथ वृन्दावन की तुलना कौन कर सकता है? यहाँ तक कि मथुरा-मण्डल में 15 दिन तक रहना भी मुक्ति का विश्वस्त मार्ग है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 20 जनवरी, 1976)

158. प्राय: हेपाटाइटिस (Hepatitis) रोग अत्यधिक वसा वाले और मसालेदार भोजन खाने से होता है। अत: हमें सदा सादे-भोजन और थोड़े से दूध का प्रयोग करना चाहिए। हमें अत्यधिक *पूरी*, हलवा, लड्डू, खीर आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 15 सित०, 1971)

159. प्रभुपाद ने हेपाटाइटिस (Hepatitis) के लिए गुड़ (सिरके में पिघलाकर, यदि चूस नहीं सकता) और हरे पपीते से बने अलग-अलग व्यंजन खाने का आदेश दिया। (ट्रान्सन्डैन्टल डायरी, भाग 2, पृष्ठ 105)

160. एक बार प्रभुपाद ने देखा कि उनके पुरुष शिष्य अपने बाल बड़े कर रहे हैं। बाल-बढ़ाने के लिए अलग-अलग लोगों के अलग-अलग कारण थे, अत: प्रभुपाद ने कुछ नहीं कहा, परन्तु एक दिन अपने सेवक, हरिशौरी और भागवत दास के सामने उन्होंने कहा, ''तुम बाल रखने से सुन्दर लगते हो। तुम्हारे पास इसका क्या कारण है?''

भागवत दास ने कहा, ''ओह! क्योंकि मैं यूरोपीय देशों को जा रहा था, इसलिए मुझे बड़े बाल रखने की राय दी गई।''

श्रील प्रभुपाद ने न्यूयॉर्क में हुए न्यायालय के मामले की चर्चा करते हुए कहा, "किन्तु न्यायालय में हमने सिर के बाल-काटने के कारण विजय प्राप्त की थी।

"मैंने उनकी राय मांगी थी," भागवत दास ने कहा "क्या मुझे बाल काटने चाहिए या बाल रखने चाहिए?" भागवत् कुछ और कहना चाहते थे कि श्रील प्रभुपाद ने बीच में ही उसे रोका।

"यह क्या मूर्खों वाली राय है? वह कौन मूर्ख है? बाल रखने से तुम सुन्दर बन जाते हो, यह राय..... ? यह घने बाल रखने वाली कौन-सी मनोवृत्ति है? हमारा पूरा समाज मुँडे-सिर वालों के रूप में जाना जाता है"।

हरिशौरी ने अपने बारे में सफाई देने की कोशिश की और कहा, ''मुझे केवल तीन सप्ताह हुए हैं...." परन्तु श्रील प्रभुपाद ने उसे बीच में रोका।

प्रभुपाद ने कहा, "कम से कम हर 15 दिन में'' और पुनः वे भागवत की ओर मुड़े, "आज से छः वर्ष पूर्व यूरोप जाने से पहले तुमने इसी तरह के बाल रखे हुए थे। मैंने वह देखा था। तुम्हें बाल रखना अच्छा लगता है। हिप्पियों की मनोवृत्ति अभी भी चल रही है।" (श्रील प्रभुपाद रसामृत, पृष्ठ 25-6)

161. सुरभि के पास वृन्दावन में होने वाले निर्माण कार्य के लिए सभी आवश्यक वस्तुओं की क्रमानुसार सूची थी। ध्यानपूर्वक सुनने पर श्रील प्रभुपाद ने कहा, "यह कुल कितना हुआ?

''ढाई लाख श्रील प्रभुपाद"

प्रभुपाद तब अपने सचिव की ओर मुड़े और कहा कि ढाई लाख (25,000 $ or Rs) लगभग डालर का चैक बनाया जाए। सौरभ कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़े थे कि प्रभुपाद ने उन्हें वापस बुलाया और पूछा

"वृन्दावन में हमारे मन्दिर से रिक्शा पर पंजाब नैशनल बैंक जाने और आने के कितने पैसे लगते हैं।"

सुरभि ने कहा, "लगभग 1 रु 25 पै."

तब श्रील प्रभुपाद ने अपने सचिव से पूछा, "ब्रह्मानन्द। बम्बई से वृन्दावन के लिए पंजीकृत – पत्र भेजने के कितने पैसे लगेंगे।" उत्तर था – "75 पैसे"। श्रील प्रभुपाद ने तब सुरभि से चैक वापिस ले लिया और कहा "हम चैक डाक द्वारा भेज देंगे।"

दो लाख पचास हजार रुपयों में से केवल 50 पैसे बचाने के लिए श्रील प्रभुपाद ने चैक सौरभ के हाथ भेजने की बजाय डाक द्वारा अपने बैंक खाते में भेजना उचित समझा। (श्रील प्रभुपाद रसामृत, पृष्ठ 156)

162. यदि तुम ठीक तरह से व्यवस्था करो तो तुम्हें बहुत अच्छे अतिथि मिलेंगे और वे दान भी देंगे। सब कुछ बहुत साफ-सुथरा और शांत हो तो लोग आएंगे। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 5 जुलाई, 1976)

163. भक्तों को मन्दिर में मंगल-आरती में अवश्य उपस्थित होना चाहिए नहीं तो यह घरेलू मामला हो जाएगा। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 20 मई, 1976)

164. "*वैष्णवानां यथा शम्भुः*", कहा जाता है कि सभी वैष्णवों में शिवजी सबसे उत्तम वैष्णव हैं। इसलिए भगवान् कृष्ण के सभी अनुयायी शिवजी के भी भक्त हैं। वृन्दावन में गोपीश्वर नामक भगवान् शिव का मन्दिर है। गोपियाँ केवल भगवान् शिव की ही पूजा नहीं करती थीं, अपितु कात्यायनी या दुर्गा की भी पूजा किया करती थीं, परन्तु उनका लक्ष्य केवल भगवान् कृष्ण की कृपा की प्राप्ति ही होता था। श्रीकृष्ण का भक्त भगवान् शिव का अनादर नहीं करता, परन्तु वह भगवान् शिवजी की पूजा श्रीकृष्ण के एक उन्नत भक्त के रूप में करता है। परिणामस्वरूप जहाँ भी भक्त भगवान् शिवजी की पूजा करता है, वह भगवान् शिवजी से केवल श्रीकृष्ण की कृपा-दृष्टि पाने के लिए ही प्रार्थना करता है और वह कभी भी भौतिक-लाभ के लिए प्रार्थना नहीं करता। (श्री. भा. 4.24.30 ता.)

165. गोपियों का अनुकरण करते हुए भक्त कभी-कभी कात्यायनी देवी की पूजा करते हैं, परन्तु वे जानते हैं कि कात्यायनी योगमाया का अवतार हैं। गोपियाँ कात्यायनी, योगमाया की पूजा श्रीकृष्ण को अपने पति-रूप में पाने के लिए करती थी। (चै.च.म.ली. 8.90 ता.)

166. वह दुर्गा कौन है ? दुर्गा भौतिक-प्रकृति है, बहुत शक्तिशाली। "*सृष्टि स्थिति प्रलय: साधन शक्तिरेका*" उनके पास सृष्टि करने की, पालन करने की तथा प्रलय करने की शक्ति है। वे बहुत शक्तिशाली हैं। आपने दुर्गा की तस्वीर देखी है। उनकी दस भुजाएँ हैं, किन्तु वे सर्वोच्च नहीं हैं। "*सृष्टि स्थिति प्रलय साधन शक्तिरेका छायेव*।" वे केवल छाया की तरह कार्य करती हैं। छाया वैसे ही घूमती है जैसे मूल-पदार्थ घूमता है। इसी तरह वे केवल श्रीकृष्ण की अध्यक्षता में ही कार्य करती हैं। बस। वे श्रीकृष्ण की बहिरंगा शक्ति हैं। (लॉस ऐन्जलस-प्रवचन, 16 जुलाई, 1969)

167. श्रीमती राधारानी भी माया हैं; योगमाया और दुर्गा भी माया है; राधारानी का विस्तार, किन्तु दुर्गा का कार्य राधारानी से भिन्न है। दुर्गा का कार्य है "यया सम्मोहिता जीव:", जीव आत्माओं को आच्छादित रखना ताकि वे कृष्णभावनामृत की ओर जागरूक न हो सकें। (वृ. में श्री.भा. 1. 7.6 का प्रवचन, 18 अप्रैल, 1975)

168. राधारानी नाम 'आराधना' शब्द से आया है। आराधना, आराधना का अर्थ है पूजा करना। अत: सभी इसी कार्य के लिए हैं, राधारानी से प्रारम्भ होकर और उनके विस्तार वैकुण्ठ में लक्ष्मियाँ (*लक्ष्मीसहस्र शतसम्भ्रम सेव्यमानम्, गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि*)। यहाँ हम माता लक्ष्मी, भाग्य की देवी, की पूजा उनकी कुछ कृपा पाने के लिए करते हैं, परन्तु वैकुण्ठ जगत् में सैकड़ों-हजारों लक्ष्मियाँ हैं, 'लक्ष्मीसहस्र शत्' और वे 'सम्भ्रम सेव्यमानम्' बहुत सम्मानपूर्वक पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की सेवा में लगी हुई हैं। अत: लक्ष्मी या राधारानी का विस्तार होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम राधारानी की सेवा करें और राधारानी के माध्यम से श्रीकृष्ण की सेवा करें। यही कृष्णभावनामृत आन्दोलन है। (बम्बई में प्रवचन, 17 दिस०, 1975)

169. वृन्दावन भगवान् का आध्यात्मिक निवास स्थान है, जहाँ भूख, क्रोध या प्यास नहीं होती। वहाँ स्वाभाविक रूप से विरोधी-प्रवृत्ति होते हुए भी सभी मनुष्य और खूंखार जानवर, आध्यात्मिक मित्रता के साथ मिलजुल कर रहते हैं। (श्री. भा. 10.13.60)

170. यमुना नदी के पूर्वी तट पर स्थित पाँच वन हैं, भद्र, बिल्व, लोह, भाण्डीर और महावन। यमुना नदी के पश्चिमी-तट पर स्थित सात वन हैं, मधु, ताल, कुमुद, बहुला, काम्य, खदीर और वृन्दावन। ये यात्री इन सभी वनों की यात्रा करने के पश्चात् पंचकोसी वृन्दावन गए। इन सभी बारह वनों में से 'वृन्दावन' नामक वन वृन्दावन शहर से नन्दगाँव और बरसाना तक 32 मील की दूरी तक फैला है जिसमें 'पंचकोसी-वृंदावन गाँव' स्थित है। (चै. च. म. ली. 5.12 ता.)

171. राधाकुण्ड इतना पूज्य क्यों हैं? यह सरोवर इसलिए पूज्य है क्योंकि यह श्रीमती राधारानी का है, जो श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रिय हैं। समस्त गोपियों में राधारानी उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं। इस प्रकार उनका सरोवर श्रीराधाकुण्ड भी बड़े-बड़े मुनियों द्वारा ऐसे सरोवर के रूप में वर्णित किया गया है, जो श्रीकृष्ण को साक्षात् राधा के ही समान प्रिय है। निस्संदेह राधाकुण्ड तथा श्रीमती राधारानी के लिए श्रीकृष्ण का प्रेम सभी तरह से समान है। यह राधाकुण्ड भक्ति में संलग्न बड़े-बड़े महात्माओं तक के लिए दुर्लभ है, तो फिर उन सामान्य भक्तों के लिए क्या कहा जाये जो केवल वैधी भक्ति के अभ्यास में लगे रहते हैं। (उ. अ.-11 ता.)

172. 'वन' शब्द का अर्थ है जंगल। हम जंगल से डर कर वहाँ नहीं जाना चाहते, किन्तु वृन्दावन के जंगली जीव देवताओं के समान हैं, क्योंकि वे वैर नहीं रखते। इस भौतिक जगत् में भी जंगल में पशु एक-साथ रहते हैं और जब वे पानी पीने जाते हैं तो किसी पर आक्रमण नहीं करते। ईर्ष्या उपजने का कारण इन्द्रियभोग है, लेकिन वृन्दावन में इन्द्रियभोग है ही नहीं, क्योंकि वहाँ तो श्रीकृष्ण की तृप्ति ही सभी का एकमात्र लक्ष्य रहता है। इस भौतिक जगत् में भी वृन्दावन के पशु जंगल में रहने वाले साधुओं से ईर्ष्या नहीं रखते। साधुगण गौवों को पालते हैं और सिंहों को दूध पिलाते हैं और उनसे कहते हैं कि 'यहाँ आओ और थोड़ा-सा दूध पी लो।' इस तरह वृन्दावन में वैर तथा ईर्ष्या का लेशमात्र नहीं है। वृन्दावन तथा सामान्य जगत् में यही अन्तर है। हम वन का नाम सुनकर डर जाते हैं, किन्तु वृन्दावन में ऐसा भय नहीं है। वहाँ प्रत्येक जीव श्रीकृष्ण को प्रसन्न करके सुखी है। 'कृष्णोत्कीर्तनगान नर्तनपरौ'। चाहे वह गोस्वामी हो, अथवा सिंह या कोई अन्य हिरन पशु, प्रत्येक का कार्य एक ही है- श्रीकृष्ण को तृप्त रखना। सिंह भी भक्त हैं। वृन्दावन की यह विशेषता है। वृन्दावन में हर व्यक्ति सुखी है। बिल्ली तथा कुत्ता सुखी है और मनुष्य भी सुखी है। हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार श्रीकृष्ण की सेवा करना चाहता है, अत: वैर का

नामोनिशान नहीं रहता। कभी-कभी कोई यह सोच सकता है कि वृन्दावन के बन्दर वैर रखते हैं, क्योंकि वे भोजन छीन लेते हैं और उत्पात मचाते हैं। किन्तु हम देखते हैं कि वहाँ बन्दरों कों भी मक्खन खाने दिया जाता है, जैसे कि श्रीकृष्ण स्वयं करते हैं। श्रीकृष्ण ने स्वयं दिखाया है कि हर प्राणी को जीवित रहने का अधिकार है। यह वृन्दावन का जीवन है। मैं जीवित रहूँ और तुम मरो? नहीं। यह तो भौतिक जीवन है। व्रजवासी सोचते हैं कि "श्रीकृष्ण ने जो कुछ दिया है उसे हम प्रसाद रूप में बाँटकर खाएं।" यह मनोवृत्ति एकाएक नहीं पनप सकती, अपितु इसका विकास कृष्णभावनामृत के साथ धीरे-धीरे होगा। साधना द्वारा इस स्तर तक पहुँचा जा सकता है।

इस भौतिक जगत् में नि:शुल्क भोजन वितरण के लिए सारे विश्व से धन एकत्र किया जा सकता है, किन्तु जिनको यह भोजन दिया जाता है, हो सकता है वे इसकी सराहना न करें। किन्तु कृष्णभावनामृत के महत्व को धीरे-धीरे पसंद किया जाएगा। उदाहरणार्थ, डर्बन, दक्षिण अफ्रीका 'हरे-कृष्ण-आन्दोलन' मन्दिर के विषय में *डर्बन पोस्ट* समाचार-पत्र ने एक समाचार में छापा है, "यहाँ सारे भक्त भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा में तत्पर हैं, जिसके परिणाम सुस्पष्ट हैं - सुख, उत्तम स्वास्थ्य, मन की शांति तथा सभी सद्गुणों का विकास"। वृन्दावन की प्रकृति ऐसी ही है। हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा: - कृष्णभावनामृत के बिना सुख असम्भव है। भले ही कोई संघर्ष करे किन्तु वह सुख नहीं पा सकता। अतएव हम कृष्णभावनामृत के माध्यम से मानव समाज को सुखी जीवन, उत्तम स्वास्थ्य, मानसिक शांति तथा समस्त सद्गुण प्राप्त करने के लिए अवसर देने का प्रयास कर रहे हैं। (श्री. भा. 10.13.60 ता.)

173. कभी-कभी व्यापारिक दृष्टि से लोगों की टोली विभिन्न तीर्थस्थलों को ले जाई जाती है और उनसे धन एकत्र किया जाता है। यह बहुत ही लाभप्रद व्यापार है, किन्तु श्रील रूप तथा सनातन गोस्वामियों ने श्रीचैतन्य महाप्रभु की उपस्थिति में यह मत व्यक्त किया कि भीड़ के साथ तीर्थयात्रा ठीक नहीं होती। वास्तव में जब श्रीचैतन्य महाप्रभु वृन्दावन गये थे तो वे अकेले थे और अपने भक्तों के अनुरोध पर केवल एक सेवक ले गए थे। वे कभी भी व्यापारिक उद्देश्य से भीड़ लेकर वृन्दावन नहीं गये। (चै.च.म.ली. 1.224 ता.)

174. भारत में सैकड़ों पवित्र तीर्थस्थान हैं जिनमें प्रयाग, हरिद्वार, वृन्दावन और रामेश्वरम् प्रमुख

हैं। राजनीति तथा कूटनीति से भरे अपने घर को त्यागने के बाद विदुर समस्त तीर्थों की यात्रा करके पवित्र होना चाहते थे, क्योंकि ये तीर्थ इस प्रकार स्थित हैं कि जो कोई वहाँ जाता है वह स्वत: पवित्र हो जाता है। वृन्दावन के लिए तो यह विशेष रूप से सत्य है। जो कोई भी व्यक्ति वहाँ जाता है, यदि वह पापी भी है, तो भी तुरन्त वहाँ उसे आध्यात्मिक जीवन का अनुभव होने लगता है और वह स्वत: श्रीकृष्ण और राधा के नामों का जप करने लगता है। इसका हमें प्रत्यक्ष अनुभव है। (श्री. भा. 3.20.4 ता.)

175. श्रीकृष्ण की माधुर्य लीलाओं में श्रीकृष्ण नायक होते हैं और राधिका नायिका। सखियों का पहला कार्य है नायक तथा नायिका दोनों की महिमाओं का गुणगान करना। दूसरा काम है ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करना कि नायक नायिका के प्रति और नायिका नायक के प्रति आकृष्ट हो। उनका तीसरा काम उन्हें इस तरह प्रेरित करना है कि वे एक-दूसरे के निकट आयें। उनका चौथा कार्य श्रीकृष्ण की शरण में जाना, पाँचवा हर्षमय वातावरण की सृष्टि करना, छठा उन्हें लीलाओं का भोग करते रहने का आश्वासन देना, सातवाँ नायक तथा नायिका को सजाना-सँवारना, आठवाँ उनको इच्छाएँ व्यक्त करने में दक्षता दिखाना, नौवाँ नायिका के दोषों को छिपाना, दसवाँ अपने पतियों तथा परिवार वालों को धोखा देना, ग्यारहवाँ शिक्षा देना, बारहवाँ उचित समय पर नायक-नायिका का मिलन करवाना, तेरहवाँ नायक-नायिका को पंखा झलना, चौदहवाँ नायक-नायिका को कभी-कभी डाँटना (तिरस्कार), पंद्रहवाँ बातें आरम्भ कराना और सोलहवाँ कार्य है सभी प्रकार से नायिका की रक्षा करना।

भौतिक सहजिया लोग राधा तथा श्रीकृष्ण की लीलाओं को ठीक से न समझ सकने के कारण किसी प्रमाण के बिना अपनी निजी जीवन-शैली ढालते हैं। ऐसे सहजिया सखी-भेकी या कभी-कभी *गौर-नागरी* कहलाते हैं। उनका विश्वास है कि भौतिक शरीर, जो कुत्तों तथा सियारों द्वारा भक्ष्य है, श्रीकृष्ण द्वारा भोग्य है। फलत: वे श्रीकृष्ण को आकृष्ट करने के लिए स्वयं को सखियाँ मानकर अपना शरीर सजाते-सँवारते हैं। किन्तु श्रीकृष्ण कभी इस तरह बनावटी सजने-सँवरने से आकृष्ट नहीं होते। जहाँ तक राधारानी और उनकी गोपियों का सम्बन्ध है, उनका घर, वस्त्र, आभूषण, प्रयत्न तथा कार्य-सभी आध्यात्मिक हैं। ये सभी श्रीकृष्ण की आध्यात्मिक इन्द्रियों को तृप्त करने के निमित्त हैं। निस्संदेह यह सब श्रीकृष्ण को इतना प्रसन्न

करने वाले तथा प्रिय है कि वे स्वयं श्रीमती राधारानी तथा उनकी सखियों के वश में हो जाते हैं। उन्हें ब्रह्माण्ड के चौदह भुवनों में किसी संसारी वस्तु से कोई सरोकार नहीं रहता। यद्यपि श्रीकृष्ण सर्वाकर्षक हैं, किन्तु इतने पर भी वे गोपियों तथा श्रीमती राधारानी के द्वारा आकृष्ट होते हैं।

किसी को यह भ्रांति नहीं होनी चाहिए कि उसका भौतिक शरीर पूर्ण है, और इसलिए वह सखी बन सकता है। यह अहंग्रहोपासना अर्थात् यह मायावादियों द्वारा अपने शरीर की पूजा ब्रह्म मानकर करनी जैसी बात होगी। श्रील जीव गोस्वामी ने संसारियों की ऐसी धारणा से बचे रहने के लिए सतर्क किया है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी है कि गोपियों के पदचिह्नों पर चले बिना स्वयं को भगवान् का संगी सोचना वैसा ही अपराध है जैसा कि स्वयं को भगवान् मानना। ऐसा सोचना अपराध है। मनुष्य को चाहिए कि वह श्रीकृष्ण के साथ गोपियों की लीलाओं को सुनते हुए वृन्दावन में रहने का अभ्यास करे। किन्तु वह स्वयं को गोपी न मानें, क्योंकि ऐसा सोचना अपराध है। (चै.च.म.ली. 8.204-205)

176. जंगल जाकर पशुओं के साथ रहना और भगवान् का ध्यान करना ही कामवासनाओं से मुक्ति का एकमात्र उपाय है। जब तक मनुष्य इन कामवासनाओं को त्याग नहीं देता तब तक उसका मन भौतिक कल्मष से मुक्त नहीं हो सकता। अतएव यदि कोई जन्म, मरण, जरा तथा व्याधि के बन्धन से लेशमात्र भी छूटना चाहता है तो उसे एक निश्चित् आयु के बाद वन में चले जाना चाहिए। *पञ्चशोर्ध्वं वनं व्रजेत्*। पचास वर्ष की आयु के बाद मनुष्य को स्वेच्छा से पारिवारिक जीवन त्याग कर वन चले जाना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ वन वृन्दावन है, जहाँ उसे पशुओं के साथ रहने की आवश्यकता नहीं। अपितु वहाँ वह भगवान् के साथ रह सकता है, जो कभी वृन्दावन छोड़ते नहीं। वृन्दावन में कृष्णभावनामृत का अनुशीलन करना भौतिक बन्धन से मुक्त होने का सर्वोत्तम उपाय है, क्योंकि वृन्दावन में मनुष्य स्वत: श्रीकृष्ण का ध्यान कर सकता है। वृन्दावन में अनेक मन्दिर हैं और इनमें से किसी एक या एक से अधिक मन्दिरों में राधा-कृष्ण या कृष्ण-बलराम के रूप में भगवान् के स्वरूप का दर्शन किया जा सकता है तथा उनके विग्रह पर ध्यान लगाया जा सकता है। जैसा कि यहाँ '*ब्राह्मण्यध्याय*' शब्दों द्वारा व्यक्त किया गया है, मनुष्य को अपना मन परब्रह्म पर केन्द्रित करना चाहिए। यह परब्रह्म श्रीकृष्ण हैं, जिसकी पुष्टि भगवद्गीता में अर्जुन द्वारा की गई है। (*परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्*)। श्रीकृष्ण तथा

उनका धाम वृन्दावन उनसे पृथक नहीं है। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा है, '*आराध्यो भगवान् व्रजेशतनयस्तद् धाम वृन्दावनम्*'। वृंदावन श्रीकृष्ण के समान ही है। इसीलिए यदि किसी को वृन्दावन में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो और यदि वह कपटी न हो अपितु वृंदावन में सादगी से रहते हुए केवल अपना मन श्रीकृष्ण में एकाग्र करे तो वह भवबन्धन से छूट सकता है। किन्तु यदि वह कामेच्छाओं से विचलित हो तो उसका मन वृन्दावन में भी शुद्ध नहीं हो सकता। मनुष्य को वृन्दावन में रहते हुए अपराध नहीं करना चाहिए, क्योंकि वृन्दावन में अपराधी जीवन बन्दरों तथा सुअरों के जीवन के तुल्य होगा। वृन्दावन में अनेक बन्दर तथा सुअर रहते हैं और उनमें संभोग की इच्छा बनी रहती है। जो वृन्दावन जाकर भी संभोग के लिए लालायित रहते हैं उन्हें तुरन्त ही वृन्दावन छोड़ देना चाहिए और भगवान् के चरणकमलों पर किये जाने वाले गम्भीर अपराधों को रोक देना चाहिए। ऐसे अनेक दिग्भ्रमित व्यक्ति हैं जो कामेच्छा की पूर्ति के लिए वृन्दावन में रहते हैं, अत: वे निश्चित् रूप से बन्दरों तथा सुअरों के ही समान है। जो लोग माया के अधीन हैं और विशेषतया कामेच्छाओं के वशीभूत हैं वे *मायामृग* कहलाते हैं। निस्संदेह, सभी लोग भौतिक जीवन की बद्ध अवस्था में *मायामृग* ही होते हैं। कहा गया है - *मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्* - श्रीचैतन्य महाप्रभु ने इस संसार के *मायामृगों* अर्थात् उन मनुष्यों पर जो कामेच्छाओं के कारण कष्ट पा रहे हैं, अपनी अहैतुकी कृपा दिखाने के लिए संन्यास ग्रहण किया। लोगों को श्रीचैतन्य महाप्रभु के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए और पूर्ण कृष्णभावनामृत में श्रीकृष्ण का सदैव चिन्तन करना चाहिए। तभी वे वृन्दावन रहने के योग्य होंगे और उनका जीवन सफल हो सकेगा। (श्री. भा० 9.19.19 ता.)

177. हमें वृन्दावन में तथाकथित *बाबाओं* द्वारा दिए जाने वाले परामर्श का व्यावहारिक अनुभव है कि प्रचार करने की कोई आवश्यकता नहीं और इससे अच्छा है कि वृन्दावन में एकान्त-स्थान पर रहो और नाम जप करो। ऐसे बाबाजी यह नहीं जानते कि यदि कोई प्रचार-कार्य में या भगवान् के गुणानुवर्णन में लगा हुआ है तो प्रचारक का सुयश उसका अवश्य पीछा करता है। इसलिए किसी को अपरिपक्व अवस्था में एक धर्मपरायण गृहस्थ जीवन का त्याग वृन्दावन में विलासितापूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करने के लिए नहीं करना चाहिए। श्रीशुकदेव गोस्वामी के परामर्शानुसार घर का त्याग और श्रीकृष्ण की खोज में वृन्दावन जाना अपरिपक्व व्यक्तियों के लिए नहीं है। (श्रीकृष्ण पुस्तक 90, श्रीकृष्ण की लीलाओं का सारांश वर्णन)

178. सर्वश्रेष्ठ है सदा भगवान् के गुणानुवाद में लीन रहना, किन्तु प्रारम्भ में नहीं। शुरू में आपको अवश्य कड़ी मेहनत करनी चाहिए, आपको शुद्ध प्रेमाभक्ति के स्तर तक पहुँचना चाहिए। तब आप स्वयं को पूर्णतया ध्यान में और मंत्र-जप में लगा सकते हो। शुरू में नहीं। शुरू में आपको अत्यंत दक्ष तथा सक्रिय होना चाहिये। इसी की आवश्यकता है। यही श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा - *उदिलो,* प्रात:काल से सक्रिय, "आओ, जप करो। मेरे साथ आओ ताकि दूसरे देखेंगे।" यदि हम 'हरे कृष्ण कीर्तन' करने वाली मण्डली बना ले, तो प्रारम्भ में उनकी नींद में बाधा आएगी, क्योंकि वे प्रात: 9 बजे तक सोने के आदी हैं, परन्तु जैसे ही वे श्रवण करेंगे, वे धीरे-धीरे शुद्ध हो जाएंगे। वे उसे स्वीकार करेंगे।

अत: यही श्रीचैतन्य महाप्रभु का आन्दोलन है। उन्होंने ऐसा व्यवहारिक रूप से करके दिखाया और सबको इसे करने के लिए प्रेरित किया। "*आमार आज्ञा गुरु हया तार एइ देश*"। "यह मेरा आदेश है।" महाप्रभु अपने घर पर रहकर बहुत बड़े भक्त बन सकते थे। जब वे केवल 24 वर्ष के थे वे नवद्वीप में बहुत लोकप्रिय थे, परन्तु फिर भी उन्होंने संन्यास-ग्रहण किया और भारत के द्वार-द्वार, ग्राम-ग्राम, नगर-नगर तक गए और उन्होंने अपना आदेश दिया, *पृथ्वीते आछे यत नगरादि ग्राम*। "सारे संसार में जितने भी नगर और ग्राम है, वहाँ यह कृष्णभवनामृत आन्दोलन हो".... यह नहीं "हम बड़े-बड़े गोस्वामी और बाबाजी हैं, हम वृन्दावन की सीमा से बाहर नहीं जाते"। आप उनकी नकल कर रहे हो। (हंसी) श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा है "*पृथ्वीते आछे यत नगरादि ग्राम*"। और वे बहुत बड़े वैष्णव बन गये है। "मैं वृंदावन की सीमा से बाहर नहीं जाता"। यह क्या मूर्खता है? क्या श्रीचैतन्य महाप्रभु ऐसा कहते हैं कि, "तुम वृन्दावन की सीमा से बाहर मत जाओ?" भक्त जहाँ भी है, वही वृन्दावन है। वही वृन्दावन *तीर्थ* है। *कुर्वंती तीर्थानी*। एक भक्त, एक शुद्ध भक्त, किसी नरक को तीर्थस्थान बना सकता है। वही भक्त है। (अलीगढ़ पहुँचने पर वा., 9 अक्तू०, 1976)

179. जिस किसी ने श्रीकृष्ण का साक्षात्कार कर लिया है, वह सदा वृन्दावन में या वैकुण्ठ में निवास करता है। चाहे वह भक्त वृन्दावन से किसी दूर स्थान में रह रहा लगता है परन्तु वास्तव में वह सदा वृन्दावन में रह रहा होता है, क्योंकि वह जानता है कि श्रीकृष्ण सब जगह विराजमान हैं, यहाँ तक कि एक अणु में भी। (योग की पूर्णता, 1 योग कार्य है)

180. श्रील प्रभुपाद–कोई भी उन्हें (भगवान् को) हानि नहीं पहुँचा सकता और न कोई आध्यात्मिक जगत् में हानिकारक है। वहाँ सभी उन्नत भक्त हैं। यहाँ तक कि बाघ भी वहाँ पर भक्त है।

हरिकेश – बाघ ?

श्रील प्रभुपाद – वहाँ पर विभिन्नता है।

हरिशौरी – वहाँ पर यहाँ की ही तरह बाघ और साँप इत्यादि हैं ?

श्रील प्रभुपाद – सभी कुछ। वे सभी भक्त हैं।

हरिकेश – वहाँ कुत्ते और सुअर नहीं होंगे।

श्रील प्रभुपाद – हाँ। सुअर वहाँ हो सकते हैं।

हरिशौरी – वहाँ सुअर भी हैं ?

श्रील प्रभुपाद – परन्तु वे सुअर नहीं हैं। जैसा कि श्रीकृष्ण सुअर–रूप (वराह–रूप) में अवतरित हुए, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि श्रीकृष्ण सुअर हैं। श्रीकृष्ण मछली–रूप में अवतरित हुए, उसका अर्थ यह नहीं कि वे मछली हैं। हरे कृष्ण । (वृ. के कमरे में वा., 7 सित०, 1976)

181. हरिकेश : निताई ने जन्माष्टमी पर यहाँ राधा और श्रीकृष्ण के बड़े विग्रहों का अभिषेक किया।

धनञ्जय : और बलराम जी के आर्विभाव दिवस पर कृष्ण–बलराम के बड़े विग्रहों का अभिषेक किया गया।

हरिकेश : भयंकर – मनोकल्पना।

धनञ्जय : वास्तव में जन्माष्टमी उत्सव बहुत खराब हुआ और यह बड़ा....

श्रील प्रभुपाद : इसलिए उसका रंग फीका हो गया है? वह धूर्त है।

हरिकेश : मुझे याद है जब ये विग्रह ....। उन्हें कभी धोना नहीं चाहिए। कभी पानी छूना नहीं चाहिए था। यदि आपको बड़े विग्रह छूने हैं तो विग्रहों पर प्लास्टिक की थैली लगाई जानी चाहिए। आपको उन्हें प्लास्टिक की थैली से ढकना चाहिए।

श्रील प्रभुपाद : आपने आज्ञा क्यों दी? जरा देखो, यही बीमारी है। मूर्ख यह नहीं जानते। और यद्यपि मैं था.....

धनञ्जय : नहीं, किन्तु सभी उसे सुन रहे थे। वह अर्चाविग्रह की पूजा में अपने आपको बहुत सिद्धस्त मान रहा था।

श्रील प्रभुपाद : वह सब उसे अच्छा लगता है।

धनञ्जय : वह '*हरिभक्ति विलास*' को उद्धृत कर रहा था।

हरिकेश : किन्तु '*हरिभक्ति विलास*' में यह नहीं कहा गया है कि आप संगमरमर के विग्रहों को पानी से नहला दो। उसके अनुसार नहलाने के लिए छोटे विग्रह रखो। यह '*हरिभक्ति विलास*' में है।

धनञ्जय : उसका विचार था कि वृन्दावन में बड़े अर्चाविग्रहों के अभिषेक करने से हमारा मंदिर सबसे प्रसिद्ध हो जायेगा। उसका यह विचार था।

श्रील प्रभुपाद : वह अभिषेक सिंहासन पर नहीं करवाया जाना चाहिए। विग्रह बाहर लाये जाते हैं। तब अभिषेक किया जाता है। परन्तु यह बड़े जोखिम का काम है। आप यह नहीं कर सकते। (वृ. कमरे में वा., 11 सित०, 1976)

182. जब श्रीकृष्ण कहते हैं कि महात्मा मेरे धाम में प्रवेश करता है, वे अपने आध्यात्मिक धाम गोलोक-वृन्दावन का संकेत कर रहे हैं। वृन्दावन, जहाँ से मैं आया हूँ, भौम-वृन्दावन कहलाता है, जिसका अर्थ है कि यह वही वृन्दावन है जो इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ था। जैसा कि

श्रीकृष्ण अपनी अन्तरंगा शक्ति के द्वारा इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं, उसी तरह से उनका धाम, उनका निवास स्थान भी अवतरित होता है। दूसरे शब्दों में जब श्रीकृष्ण इस धराधाम पर अवतरित होते हैं, वे एक विशेष भूभाग वृन्दावन में अवतरित होते हैं और इसलिए वह भूमि भी पवित्र है। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण का अपना निजी निवासस्थान आध्यात्मिक जगत् में भी है और वह गोलोक-वृन्दावन कहलाता है। (योग की पूर्णता, 10)

183. हाँ, तुम्हारी योजना, कि लोग वृन्दावन के अतिथि-गृह में कमरे के लिये कुछ धन दें, अच्छी बात है। यह विचार कि वे कमरे के लिए धन दें और जीवन-भर के लिए वहाँ आ जाएँ। यह प्रथा *'भेंट-नाम'* कहलाती है, जिसमें कमरा दानी के जीवन-काल तक उसके लिए सुरक्षित रख दिया जाता है। इस तरह आप काफी धन एकत्रित कर लेंगे क्योंकि बहुत से सज्जन वृन्दावन आना चाहेंगे। अतः आप नए मन्दिर में उनके ठहरने का प्रबन्ध करें। आपको मायापुर के भवन में भी ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 20 जु० 1973)

184. आजीवन-सदस्यों को तीन दिन के लिए कमरे दिए जाने के अलावा किसी को भी मुफ्त में 'अतिथि-गृह' के कमरे नहीं दिए जाने चाहिए। जब कोई अतिथि आए तो वह रजिस्टर में हस्ताक्षर करें कि उसे कितने दिन के लिए कमरा चाहिए और पेशगी पैसे जमा करवाए। उनके लिए छोटे-छोटे रसोईघरों का प्रबंध किया जा सकता है, जहाँ वे अपने लिए चाय बना सकें। धूम्रपान सख्त मना है। सभी पुरुष, जो भक्तों के कमरे में रहें, मंगल-आरती में अवश्य उपस्थित हों, नहीं तो भूखे रहें। वृन्दावन के अतिथि-गृह में दो व्यक्तियों वाले कमरे का 'भेंटनामा' है-60,000 रूपये और एक व्यक्ति वाले कमरे का 50,000 रूपये। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, सित० 1975)

185. संकीर्तन न करके व्यापार करना बुरी बात है -

विषय छाड़िया कबे, शुद्ध हबे मन,
कबे हाम हेरबो श्रीवृन्दावन।

"जब मेरा मन पूरी तरह से शुद्ध हो जाएगा और भौतिक चिन्ताओं एवं इच्छाओं से मुक्त हो

जाएगा, तभी मैं वृन्दावन को वास्तविक रूप से समझ कर राधा-कृष्ण के माधुर्य प्रेम को समझने में समर्थ हो पाऊँगा, और तभी मेरा आध्यात्मिक जीवन सफल होगा।" धन-सम्पत्ति कमाने के काम को छोड़कर हमें अपने आपको प्रेमाभक्ति में जोड़ना चाहिए। संकीर्तन बहुत अच्छा है, परन्तु गृहस्थ अन्य काम कर सकते हैं, शर्त है कि वे अपनी कमाई का 50% दान में दें। परन्तु संकीर्तन सर्वश्रेष्ठ प्रकार का व्यापार है। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, सत्स्वरूपदास गोस्वामी, 20 नव०, 1975)

186. वृन्दावन नगरी में लगभग पाँच हजार मन्दिर हैं। यद्यपि यह सम्भव नहीं कि सभी मन्दिरों के दर्शन किए जाएँ, परन्तु वहाँ गोस्वामियों द्वारा स्थापित किए कम से कम एक दर्जन बड़े और महत्वपूर्ण मन्दिर हैं, जिनकें दर्शन अवश्य करने चाहिए। (भ.र.सि.-6, प्रेमामयी सेवा कैसे करें?)

187. मन्दिर की कम से कम तीन परिक्रमाएँ अवश्य की जाएँ। हर मन्दिर में उसके चारों ओर कम से कम तीन बार घूमने के लिए व्यवस्था रहती है। कुछ भक्त अपने व्रत के अनुसार तीन से अधिक परिक्रमाएँ किया करते हैं - कभी 10 तो कभी 15 भी। गोस्वामीगण तो गोवर्धन पर्वत की परिक्रमाएँ किया करते थे। सम्पूर्ण वृन्दावन क्षेत्र की भी परिक्रमा करनी चाहिए। (भ.र.सि.-6, प्रेममयी सेवा कैसे करें?)

188. मथुरा अथवा मथुरा-मण्डल में वास करना चाहिए। (भ.र.सि.-6, प्रेमामयी सेवा कैसे करें?)

189. इस तरह वैधीभक्ति सम्पन्न करने के लिए कुल मिलाकर 64 नियम हैं। इन चौंसठ नियमों में से पाँच नियम अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं - अर्चाविग्रह की पूजा, श्रीमद्भागवत का श्रवण, भक्तों की संगति, संकीर्तन तथा मथुरावास। (भ.र.सि.-6, प्रेमामयी सेवा कैसे करें?)

190. आपने 'बलराम-कृष्ण अर्चाविग्रहों' के विषय में पूछा है। नहीं, बलराम-कृष्ण पहले से चैतन्य-निताई रूप में हैं। *ब्रजेन्द्रनन्दन येई शचीसुत हैल सेई.....* सबसे उत्तम है गौर-निताई के अर्चाविग्रहों की स्थापना। वृन्दावन में हम 'बलराम-कृष्ण' के अर्चाविग्रह स्थापित कर रहे हैं

क्योंकि वहाँ अधिकतर मन्दिरों में राधा-कृष्ण के अर्चाविग्रह हैं और वहाँ बलराम-कृष्ण के विग्रह नहीं हैं। उसका अलग उद्देश्य है। हमें उसकी नकल नहीं करनी चाहिए। अच्छा होगा कि हम गौर-निताई, राधा-कृष्ण और भगवान् जगन्नाथ के विग्रह स्थापित करें। यह प्रथा चलती रहनी चाहिए। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, 12 जन० 1974)

191. जैसा कि अभी हमने कहा कि स्त्रियों को (विधवाओं) आकर्षक श्रृंगार नहीं करना चाहिए। उन्हें आकर्षक वस्त्र नहीं पहनने चाहिये। क्योंकि आखिर यह यौन आनन्द क्या है? यह अच्छी चीज नहीं है। बाहरी आकर्षण से वे आकर्षित करती हैं। अच्छी साड़ी से कोई भी आकर्षित हो जाता है। अत: यह मनोवृत्ति है, यदि स्त्री अच्छी तरह श्रृंगार नहीं करेगी, वह आकर्षक नहीं लगेगी। अनावश्यक आकर्षण का उसे त्याग करना चाहिए, परन्तु स्वभावत: एक स्त्री की मनोवृत्ति है कि वह अच्छी तरह से श्रृंगार करे जिससे पुरुष आकर्षित हो। क्योंकि वह आश्रय चाहती है। यही सारा मनोविज्ञान है। वह चाहे स्वतन्त्रता की घोषणा करे, किन्तु फिर भी वह स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं रह सकती। वह सम्भव नहीं है। अत: वे अच्छी तरह से सजने की आदी हैं, जिससे कोई उन्हें स्वीकार कर ले और उन्हें आश्रय दे। यह मनोविज्ञान है। नहीं तो स्त्री में स्वभावत: अपने को अच्छी तरह से सजाने की रुचि क्यों है? पुरुष ऐसा नहीं करता। यह मनोविज्ञान है। एक लड़का, जो 16 वर्ष का है वह ऐसा नहीं करता..... वह कामचलाऊ ढंग से कपड़े पहनता है। वह नहीं करता.....। परन्तु 16 वर्ष की लड़की कभी भी कामचलाऊ ढंग से श्रृंगार नहीं करेगी। वह सदैव अपने आपको अच्छी तरह से आकर्षक बनाने का प्रयास करेगी, जिससे अपने यौवन के सौन्दर्य से दूसरों को आकर्षित कर सके। क्यों आकर्षित करे? क्योंकि उसे आश्रय चाहिए। इसलिए यह माता और पिता का उत्तरदायित्व है कि वे युवा लड़की को आश्रय दें। वह अभी अबोध है। भावुकता से और कामुकता से उसका निर्णय गलत हो सकता है। 'अत: इससे पहले कि वह अपना वर चुने यह काम मुझे करना चाहिये। यह मेरा कर्तव्य है। मैं उसका रक्षक हूँ, मुझे उसे अच्छा आश्रय देना चाहिए।' यह हिन्दुओं की परिपाटी है। (कमरे में वा., 6 सित० 1976)

192. वृन्दावन में हमारा मन्दिर कुशलता से नियंत्रित होना चाहिए ताकि जो कोई भी मन्दिर

आए उसे अर्चाविग्रह का प्रसाद और चरणामृत दिया जा सके। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र 6 जन०, 1976)

193. मन्दिर सामान्यजनों के लिए बनाए जाते हैं। यहाँ तक कि स्त्री और बच्चे भी यदि प्रतिदिन श्रीकृष्ण का दर्शन करते हैं, उनपर भी इसका प्रभाव पड़ता है। वे श्रीकृष्ण के विषय में सोच सकते हैं। *मन्मना भव मद्भक्तो......* इसलिए यहाँ मन्दिर हैं। अत: हर एक को प्रतिदिन आना चाहिए। प्रात: या जितनी बार हो सके हमें श्रीकृष्ण का संग करना चाहिए और उन्हें हृदय में धारण करना चाहिए और सदा श्रीकृष्ण के विषय में सोचना चाहिए।

194. मुझे ध्यान नहीं कि कब मैंने किसी को कहा है कि श्रीकृष्ण को काले रंग की कोई पोशाक नहीं पहनानी, और न ही मुझे ध्यान है कि मैंने किसी को काला रंग के वस्त्र पहनाने की अनुमति दी है। परन्तु इसमें हानि नहीं यदि श्रीकृष्ण को कभी काले रंग की पोशाक पहना दी जाए। कभी-कभी वृन्दावन में वे श्रीकृष्ण को काले रंग की पोशाक में सजाते हैं। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 4 जनवरी 1973)

195. चिन्तामणि - क्या उनके बाल घुँघराले हैं?

श्रील प्रभुपाद - हाँ, घुँघराले (अस्पष्ट) काले।

चिन्तामणि - क्या ये बहुत लम्बे हैं?

श्रील प्रभुपाद - बहुत लम्बे। ये भी बहुत लम्बे हैं।

चिन्तामणि - ये कितने लम्बे होने चाहिए?

श्रील प्रभुपाद - ये राधारानी की कमर से नीचे नहीं होने चाहिए।

चिन्तामणि - ओह! और श्रीकृष्ण के?

श्रील प्रभुपाद - श्रीकृष्ण के बाल उनकी गरदन तक होने चाहिए।

चिन्तामणि - धन्यवाद। श्रील प्रभुपाद, श्रीकृष्ण भी हमारे समान तिलक लगाते हैं?

श्रील प्रभुपाद - हाँ! राधारानी को केवल लाल बिन्दी। (जापान के कमरे में वा., 22 अप्रैल, 1972)

196. श्रीकृष्ण को लाल तिलक नहीं लगाना चाहिए, वह चन्दन के रंग का होना चाहिए। (दैवी शक्ति के संस्मरण, जन. 1975)

197. मुकुट का व्यापार अतिथि-घर में रहने दो। लेकिन हमें अतिथि-गृह का बाकी स्थान खाली रखना चाहिए। सभी स्त्रियों और बच्चों को 'टापारिया-हाऊस' में रहना चाहिए। प्रतिदिन गुरुकुल की कक्षाएँ भी 'टापारिया हाऊस' में लगाई जा सकती हैं। जब गुरुकुल का निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा, तो गृहस्थ नए भवन की तीसरी मंजिल पर रह सकते हैं, लेकिन तब तक स्त्रियाँ और बच्चे 'टापारिया-हाऊस' में रह सकते हैं और ब्रह्मचारी अतिथि-गृह में रह सकते हैं। मुकुट-व्यापार के लिए अतिथि-गृह का एक कमरा दिया जा सकता है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र 20 मई, 1976)

198. भक्तों का सोना बंद होना चाहिए। ऐसे सोते रहने वाले भक्तों का क्या लाभ, केवल खर्चा ही बढ़ाना है। उन सभी को अवश्य ही व्यस्त रखना चाहिए। स्त्रियाँ और बच्चे नए 'टापारिया-हाऊस' में चले जाएँ और मुकुट का काम अभी 'अतिथि-गृह' में रहने दें। 'टापारिया-हाऊस' में रोज का गुरुकुल चलाया जाए और जब गुरुकुल का काम पूरा हो जाए, गृहस्थ गुरुकुल की तीसरी मंजिल की कुछ सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं। परन्तु सभी को चुस्ती से काम में लगना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 29 मई, 1976)

199. आपके प्रश्न के विषय में: क्या निर्धारित करता है कि एक भक्त वैकुण्ठ जाता है या गोलोक वृन्दावन ?—जो *विधि-मार्ग* का अनुसरण करते हैं वे वैकुण्ठ-धाम जाने के योग्य हैं और जो *रागमार्ग* का अनुसरण करते हैं वे 'कृष्ण लोक' जाने के योग्य है। साधारणतय: यह कहा जा सकता है कि श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुयायी गोलोक वृन्दावन जा रहे हैं। वैकुण्ठ लोकों और कृष्ण लोक में कोई अन्तर नहीं, यह केवल व्यक्तिगत रस का अन्तर है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र,

21 जून, 1970)

200. पुष्टकृष्ण:– गोलोक वृन्दावन का विवरण कि वहाँ तो रज भी एक व्यक्ति है..... अत: हमें व्यक्तिगत रूप का अनुभव है। यहाँ तक कि श्रीकृष्ण का स्वरूप भी व्यष्टि है। वृन्दावन की रज कैसे एक व्यक्तित्व है? यह कैसे जीवात्मा है?

श्रील प्रभुपाद : यदि तुम इस मिट्टी से कुछ पाना चाहते हो तो आप नहीं पा सकते। यह भौतिक है। परन्तु वृन्दावन में यदि आप उससे कुछ पाना चाहते हो तो वह तुम्हें तुरन्त दे देगी। (प्रात:कालीन सैर–मायापुर, 7 अप्रैल, 1975)

201. प्रतिदिन हजारों लोग वृन्दावन जाते हैं। वे बहुत से पवित्र स्थानों के दर्शन करने का प्रबन्ध करते हैं। प्रबन्ध होना चाहिए। यदि हमारे पास उनको ठहराने के लिए स्थान नहीं है तो भी वृन्दावन में रहने के स्थान की कोई कमी नहीं। वहाँ सैंकड़ों धर्मशालाएँ हैं। वहाँ पण्डा लोग तीन दिन के लिए धर्मशाला का प्रबन्ध कर देंगे, अर्थात् 12, 13 तथा 14 तिथि। तीर्थयात्री वहाँ तीन दिन के लिए रुकेंगे। भक्तों को बसों द्वारा एक दिन गोवर्धन और राधाकुण्ड, नन्दग्राम और बरसाना ले जाना चाहिए। अगले दिन दाऊजी तथा दूसरे दिन किसी और स्थानों पर ले जाया जाए। धर्मशालाओं से भक्तों को बसों द्वारा दूसरे स्थानों पर ले जाएँ और पुन: उन्हें अपनी धर्मशालाओं में वापस लाया जाए। थोड़ी कठिनाई का सामना भी क्यों न करना पड़े, फिर भी भक्तों को वृन्दावन अवश्य जाना चाहिए। मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि की धर्मशालाएँ हैं, और जयदयाल डालमिया ने इन्हें विशेषतया विदेशियों के लिए निर्मित करवाया है। सारा प्रबन्ध पण्डों की सहायता से किया जाना चाहिए।

यह यात्राएँ हमारे कृष्णभावनामृत आन्दोलन को यशस्वी बनाएँगी। लोग वृन्दावन आने वाले विदेशियों की प्रशंसा करेंगे। सरकार का पर्यटक–विभाग भी इस ओर आकर्षित होगा। तमालकृष्ण महाराज और गुरुदास! आप शीघ्र पण्डों के सहयोग से प्रबन्ध करो। इस मण्डली (टोली) का नेतृत्व केवल हमारे नेता ही न करें अपितु भारतीय सहयोगी जैसे चैत्यगुरु, शचीदुलाल आदि भी करें। प्रबन्ध इसी प्रकार का होना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 17 जन०, 1974)

202. 1975 में जब मन्दिर का पहली बार शुभारम्भ हुआ, मैंने श्रील प्रभुपाद के घर के आस-पास और उनके घर और मन्दिर के बीच चार दिवारी वाले स्थान पर तुलसी के 150 पौधे बोए। हमने दो कदम्ब के पेड़, एक उनके बगीचे में तथा दूसरा उनके घर के सामने लगाया और मालती का पौधा भी। जब श्रील प्रभुपाद अगस्त में वृन्दावन पहुँचे तो उन्होंने सभी तुलसी के पौधों को देखा और उन्हें चिंता हुई कि इनकी देखभाल कौन करेगा। मैंने कहा कि मैं करूँगी। उन्होंने आदेश दिया कि तुलसीदेवी को दिन में तीन बार पानी दिया जाना चाहिए और ध्यान रखना चाहिये कि उसकी मिट्टी में सदा नमी रहे। कभी रात को जब वे अपने सोने के कमरे में जा रहे होते तो वे उसकी मिट्टी की नमी की जाँच करते और यदि वह सूखी होती तो मैं शीघ्र ही उसमें पानी डालती। उन्होंने श्रुतकीर्ति से कहा कि मन्दिर में संध्या समय भी तुलसी आरती होनी चाहिए और एक ब्राह्मण को *तुलसी* की देखभाल करनी चाहिए। (दैवी शक्ति के संस्मरण)

203. मैं (नीम की टहनी से) दाँत साफ करता था जब तक कि दाँत गिर नहीं गए। आप जानते होंगे कि मैं नीम इकट्ठी करता था। परन्तु अब यह असम्भव है। और मैंने अपन टुथपेस्ट बना लिया है। मैं केवल टुथब्रश खरीदता हूँ और मैं टुथपेस्ट घर पर बनाता हूँ। मैंने कभी टुथपेस्ट का प्रयोग नहीं किया। यहाँ तक कि अपनी युवाअवस्था में भी मैंने कभी उसका प्रयोग नहीं किया। आपने व्यवहारिक रूप से देखा होगा। यह नहीं कि अब मैं संन्यासी हो गया हूँ। नहीं, जब मैं गृहस्थ था, तब भी मैंने कभी इसका प्रयोग नहीं किया। मैं *नीम* दातुन का नियमित रूप से प्रयोग कर रहा था। मैं आपको भी टुथपेस्ट दे सकता हूँ। अत: यदि आप नीम दातुन का प्रयोग नहीं कर सकते तो नीम पेस्ट का प्रयोग करो। बहुत आसान है। (वृ. कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

204. मैंने दो पत्र लिखे हैं, एक डा. कपूर को और दूसरा हरिगोस्वामी को, जिसमें लिखा है कि हिन्दी और संस्कृत सीखने के लिए व्यस्क स्कूल खोला जाए। कृपया इस विषय में उनसे बात करें। हम वृन्दावन में यह स्कूल चाहते हैं। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 11 दिस०, 1973)

205. हमारे लोग सरकार के औपचारिक पथ-प्रदर्शक बन जाएँ, यह विचार बहुत अच्छा है। यदि सरकार इस बात पर सहमत हो जाए और हमारे मंदिर में एक-दो कमरे बनवा दे तो यह और भी अच्छा है। यदि कुछ सम्मानित सज्जन हमारे कृष्णभावनामृत आन्दोलन में रुचि लें तो हमारा

मन्दिर वृन्दावन में अव्वल नम्बर पर आ जाएगा, क्योंकि वृन्दावन के अन्य मन्दिर शास्त्रीय ज्ञान के अभाव में केवल साधारण लोगों को आकर्षित करते हैं। अत: 50 वर्ष पूर्व एक ईसाई पुजारी वृन्दावन गए थे और उन्होंने वहाँ कई ब्रजवासियों से जिज्ञासा की कि श्रीकृष्ण ने दूसरों की स्त्रियों के साथ रास-नृत्य का आनन्द क्यों लिया जो कि वैदिक सिद्धान्तों के विरूद्ध हैं, किन्तु कोई उनको संतुष्ट नहीं कर पाया। इस प्रसंग में मेरे गुरू महाराज ने कहा कि वृन्दावन में नौसिखिये भक्त रहते हैं। अतः हम आशा करते हैं कि हमारा मन्दिर किसी को भी इस कृष्णभावनामृत के विषय में उत्तर देने में समर्थ होगा, तब बहुत से नवीन दार्शनिक और वैज्ञानिक वृंदावन आऐंगें, यह बहुत गौरव की बात होगी। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 15 अग०, 1973)

206. श्रील प्रभुपाद : काम को बढ़ावा दो और सबको काम में लगाओ। स्त्रियाँ यहाँ सिलाई करके रह सकती हैं। वे अवश्य आराम से रहें। यदि इन्हें यहाँ बुरा लग रहा है तो वे यहाँ न रहें। हम ऐसा नहीं चाहते। वे एक कमरे में रहें और सिलाई का काम करें। और हमारी स्त्रियाँ जिन्होंने सिलाई सीख ली है, वे सिखा भी सकती हैं। बहुत आसान है। और पुरुष वहाँ परिष्कृति का काम कर सकते हैं। यदि अलीगढ़ में वे ढलाई कर रहे हैं, तब कोई अन्तर नहीं और कोई कठिनाई नहीं।

धनञ्जय : अत: मूर्तियों की ढलाई अलीगढ़ में हो और उसकी परिष्कृति यहाँ पर हो।

श्रील प्रभुपाद : हाँ

धनञ्जय : जैसा कि हम कर रहे हैं।

श्रील प्रभुपाद : हाँ। अलीगढ़ यहाँ से 45 मील दूर है। आप वहाँ जाकर मूर्तियाँ ला सकते हैं और सुरेंद्रनाथ तुम्हारी सहायता करेंगे। यदि अलीगढ़ में कुशल कारीगर हैं, तो यह अच्छी बात है। अलग माप की मूर्तियाँ वहाँ मिलती हैं।

धनञ्जय : छ: इंच, नौ इंच, बारह, पन्द्रह।

श्रील प्रभुपाद : हाँ! गौर-निताई और राधा कृष्ण की अच्छी मूर्तियाँ। और वे सुन्दर पोशाकें तैयार करेंगी और उनको डिब्बों में बन्द करो और दूसरे केन्द्रों को भेजो। हमारे सैकड़ों केन्द्र हैं। यदि

आप कम से कम एक दर्जन जोड़े भेज सकते हो तो आप 1200 जोड़ों का व्यापार कर सकते हो। यदि वे प्रदर्शित किए जाएगें, लोग खरीदना पसंद करेंगे। यह बहुत बढ़िया कारोबार रहेगा।

धनञ्जय : यहाँ भी हमारे मन्दिर में आने वाले लोगों के लिए यदि हम प्रदर्शित करेंगे, तो वे खरीदेगें।

श्रील प्रभुपाद : हाँ! हम यहाँ अपनी दुकान खोल सकते हैं। हमें बहुत-सी दुकानें मिल रही हैं। एक ही दुकान में मूर्तियाँ और मूर्तियों की पोशाक और मुकुट। जैसी उनकी भी हैं ......।

धनञ्जय : लोई बाजार में।

श्रील प्रभुपाद : हाँ!

धनञ्जय : उसी तरह की।

हरिकेश : मिठाइयों की एक दुकान।

श्रील प्रभुपाद : व्यवसायिक बुद्धि का प्रयोग करो, हर बात मुझे बतानी पड़ती है। तुम भी कर सकते हो —किसी की यदि व्यवसायिक बुद्धि हो तो वह कितने भी पैसे कमा सकता है। यही है यह सब..... अगरबत्तियाँ, मूर्तियाँ, मुकुट और तुलसी माला, करताल, और कुछ पंचपात्र।

207. धनञ्जय : अब एक और बात जो मैं पूछना चाहता हूँ। मुझे बहुत भक्त पूछ रहे थे कि क्या हम आपका अर्चाविग्रह बना सकते हैं।

श्रील प्रभुपादः यह अच्छा नहीं... यह तुरन्त नहीं, हम इसे बाद में देखेंगे। तुम बना सकते हो, किन्तु इसे हम बाद में देखेंगे। अभी नहीं। अभी तुम यह प्रबन्ध करो।

धनञ्जय : और गौर-निताई और राधा कृष्ण के नमूने के बारे में, क्या हम वही नमूना बनायें या हम उससे कुछ सुधार कर सकते हैं।

श्रील प्रभुपाद : हाथों से नमूना इस तरह बनाओ और फिर अपने लोगों से वैसा ही डिजाइन

बनवाओ। अच्छा डिजाइन बनवाओ।

धनञ्जय : बनाओ! हाँ, मेरा मतलब है सुंदर डिजाइन।

श्रील प्रभुपाद : हाँ, अच्छा डिजाइन बनाओ। और हाथ इस तरह के हों।

धनञ्जय : इस तरह के नहीं। मुझे भी यह पसंद है। यह नवद्वीप के ढंग के हैं।

श्रील प्रभुपाद : यह नवद्वीप ढंग के हैं।

धनञ्जय : हाँ! मुझे यह अधिक पसंद हैं। नहीं तो भुजाएँ बहुत लम्बी और पतली हो जाएँगी।

श्रील प्रभुपाद : इस तरह राधा और कृष्ण को सुन्दर ढंग से बनाओ और राधारानी इस तरह की होनी चाहिए। यह वृन्दावन का नमूना है। यह नहीं। ये लक्ष्मी की तरह है। ऐसा बनाओ। मैं इस व्यापार के विषय में आशावादी हूँ। हमें अच्छा कारोबार मिलेगा। मैं इन्हें हर परिवार में पहुँचाना चाहता हूँ। वे करेंगे। चाहें वे इनकी पूजा न करे, उनको गुड़ियों की तरह रखने दो। इससे भी उन्हें प्रेरणा मिलेगी।

धनञ्जय : वास्तव में अनेक भारतीय लोग भगवान् की मूर्तियों को अपने घर में गुड़ियों की तरह रखते हैं। वे उनकी नियमित रूप से पूजा नहीं करते। वे उन्हें एक तरफ रख देते हैं।

श्रील प्रभुपाद : इस तरह पूर्ण उत्साहित होकर यह व्यापार करो और दूसरों को जोड़ो।

धनञ्जय : एक लड़का है, जो अभी-अभी इटली से आया है, जो लकड़ी की नक्काशी में बड़ा कुशल है।

श्रील प्रभुपाद : ठीक है।

धनञ्जय : अत: हम लकड़ी के सिंहासन के लिए उसे कारीगर ले सकते हैं। वह कहता है कि वह सिंहासन बना सकता है, वह अपने औजार भी ले आया है। उसके पास अपने औजारों का पूरा बक्सा भरा हुआ है, जो नक्काशी करने के लिए लाया है। उसने यह धार्मिक-वास्तुशिल्प दक्षिण

स्पेन में सीखी है।

श्रील प्रभुपाद : वह अर्चाविग्रह के लिए जोड़ों वाला छोटा सिंहासन बना सकता है। यदि कोई माँगे तो वह उन्हें भेज सकते हैं । (कमरे में वा., 11 सित०, 1976)

208. अत: जब श्रीकृष्ण इस धराधाम पर अवतरित होते हैं आप उन्हें नहीं देख सकते । आप श्रीकृष्ण को नियन्त्रित नहीं कर सकते, *महतो महीयान्।* वे आपके सामने अर्चाविग्रह के रूप में आते हैं। यह *अर्चाविग्रह* हैं, मूर्ति, '*अर्च्ये विष्णौ शिलाधी:*' श्रीकृष्ण प्रकट हुए हैं। उसी तरह से जैसे यशोदा मैया पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् को अपने पुत्र रूप में चाहती थी, जिसके लिए उन्होंने सैकड़ों वर्षों तक घोर तपस्याएँ की। और जब पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् दोनों पति पत्नी के सम्मुख उपस्थित हुए, भगवान् ने उन दोनों से पूछा "आप क्या चाहते हो?" "अब हम आपके जैसा पुत्र चाहते हैं।" अत: श्रीकृष्ण ने कहा, "मेरे जैसा दूसरा कोई नहीं है। अत: मैं ही आपका पुत्र बनकर आऊँगा।" अत: वे पुत्र बन कर आए। उन्होंने अपनी भूमिका अच्छी तरह निभाई जिससे यशोदा मैया यह न जान पाए कि "यहाँ पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् हैं।" नहीं तो माता-पुत्र का वात्सल्य-भाव समाप्त हो जाएगा। श्रीकृष्ण भी एक छोटे बालक का अभिनय कर रहे हैं। अत: यही कृष्ण-कृपा है। यही कृष्ण-कृपा है। इसी तरह, हम पर भी। हम यशोदा माई तथा नन्द महाराज के समान उन्नत नहीं हैं। हम तो केवल नौसिखिया हैं। अत: हम नहीं जानते श्रीकृष्ण क्या हैं? हम श्रीकृष्ण को देख नहीं सकते चाहे वह उनका विश्वरूप हो या यह मूर्ति। अत: हम क्या देख सकते है? हम पत्थर, लकड़ी या भौतिक वस्तुएँ देख सकते हैं। अत: जब श्रीकृष्ण आप द्वारा देखे जाते हैं तो वे एक पत्थर की मूर्ति की तरह लगते हैं, वे पत्थर की मूर्ति नहीं हैं। ऐसा मत सोचे। अत: हमें यह सीखना होगा कि श्रीकृष्ण को कैसे देखें। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि "यहाँ पत्थर की मूर्ति है।" जैसे ही हम उन्हें पत्थर की मूर्ति सोचेंगे उनके प्रति हमारा भाव नष्ट हो जाएगा। इसलिए इसका उत्तर है कि यदि हम कुछ मन्दिर और अर्चाविग्रह स्थापित करें तो उन्हें एक जीवन-यापन का साधन न समझे...... (रुकावट)

अत: कम से कम हम भारतीय तो इस प्रकार से प्रशिक्षित हैं। न केवल प्रशिक्षित हैं, हम तो जन्मजात भक्त हैं। जिस किसी ने भी भारतवर्ष में जन्म लिया है, यह उसकी विशेषता है। अपने

पूर्व जन्म में उन्होंने बहुत तपस्या की होगी, यहाँ तक कि देवता भी भारत में जन्म लेने के अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। अत: भारत वर्ष.... मत सोचो.... भारत का अर्थ है यह भूमण्डल भारतवर्ष। यहाँ अच्छा अवसर है। अत: हमें सोचना नहीं चाहिए। यदि हम सोचते हैं कि, "यह पत्थर की मूर्ति है" तब यह अधिक दिनों तक नहीं चलेगा। गलग्रह, यह विग्रह नहीं रहेगा, अपितु गलग्रह। विचार करो मैंने यह मन्दिर स्थापित किया। अब मेरे निर्देशानुसार मेरे शिष्य अर्चाविग्रहों की पूजा कर रहे हैं। विग्रह का अर्थ है भगवान् का स्वरूप -रूप। लेकिन यदि यहाँ विधि-विधानों का पालन नहीं होगा, तब मेरी मृत्यु के पश्चात् यह केवल गलग्रह होगा-एक बोझ कि, "मेरे मूर्ख गुरु महाराज ने यह मन्दिर स्थापित किया था और हमें इसकी पूजा करनी पड़ रही है, सुबह सबेरे उठो, सब परेशानी।" ऐसा होगा। यह गलग्रह कहलाता है, एक बोझ, "वे मेरे लिए एक भार छोड़ गए।" यह खतरा है। तब यह इतना बड़ा मन्दिर अव्यवस्थित हो जाएगा और आप देखोगे कि वह टूट रहा है और यह गंदा है। और कोई ध्यान नहीं दिया जायेगा। यह गलग्रह कहलाता है। "उस मूर्ख ने हमें यह परेशानी दे दी।"

अत: यह बहुत कठिन है। यदि हमने यह भाव खो दिया कि यहाँ श्रीकृष्ण हैं, यहाँ एक अवसर है उनकी सेवा करने का ..... *साक्षाद्धरित्वेन समस्त शास्त्रै:* ...... यह नहीं, *"श्री विग्रहाराधन नित्य नाना, श्रृंगारतन् मन्दिर मार्जनादौ"* इसलिए हम बहुत सतर्क हैं। तुमने यह क्यों नहीं किया? तुमने वह क्यों नहीं किया? क्यों? जैसे ही यह सेवा की भावना खो जाएगी, यह मन्दिर बोझ लगने लगेगा। यही होता है। यह एक बहुत बड़ा मन्दिर होगा। इसकी व्यवस्था एक बोझ बन जाएगी। अत: वे बोझ महसूस कर रहे हैं। इसलिए उनको बुरा नहीं लगता यदि कभी कहीं कुछ टूट गया। "अच्छा, चलो जितना पैसा आया है पहले हम खाते हैं।" यह स्थिति है। *विग्रह* और *गलग्रह*। आप इसे समझो। यदि हम भूल जाते है कि "यहाँ श्रीकृष्ण स्वयं विद्यमान हैं। हमें उनका अच्छी तरह से स्वागत करना है। हमें उन्हें अच्छा भोजन अर्पित करना है, अच्छी पोशाक पहनानी है। अच्छा, सब कुछ अच्छा।" तभी प्रेमरूपी सेवा होगी। और जैसे ही यह भावना आयेगी ''यह तो पत्थर की मूर्ति है..........." कई बार लोग इसे '*मूर्तिपूजा*' कहते हैं। "और हमें इन मूर्तियों का श्रृंगार करने और इतना कुछ करने का निर्देश दिया गया है.... बहुत परेशानी है।" तब सबकुछ समाप्त हो जायेगा। हर जगह यही हो रहा है। मैंने नासिक में देखा, बहुत बड़े मन्दिरों में कोई पुजारी नहीं और कुत्ते मलत्याग कर रहे हैं। न केवल वे ही टूट रहे हैं, पश्चिमी देशों में भी

बड़े–बड़े गिरिजाघर बंद हो रहे हैं।

अत: केवल पश्चिमी देशों में ही गिरिजाघर बन्द नहीं हो रहे, अपितु यहाँ भी। जैसे आप सेवा भाव खो देंगें, मन्दिर बड़े गोदाम बन जाएँगे। बस। वे कोई मन्दिर नहीं रह जाएँगे। इसलिए सेवा भाव बनाए रखना होगा। इसलिए हम इतने सावधान हैं। यहाँ ताजे फूल क्यों नहीं हैं।? यदि आप सोचते हो, "यहाँ केवल पत्थर की मूर्ति है। ताजे फूलों से या मुरझाए फूलों से क्या अन्तर पड़ता है? हमें कुछ फूल ही तो अर्पित करने हैं। बस यही है।" परन्तु कोई भाव नहीं है कि "यहाँ स्वयं श्रीकृष्ण हैं।" हमें अवश्य ताजे फूल अर्पित करने चाहिए। जैसा कि मैं जीवित व्यक्ति हूँ, यदि आप कुछ कूड़ा–कचरा ले आओ और मुझे दो, क्या मैं प्रसन्न होऊँगा? आप क्या सोचते हैं? अत: यह भाव शुरू में ही समाप्त हो रहा है ''हम इस मूर्ति को कूड़ा–करकट फूलों से प्रसन्न करेंगे। वह कोई विरोध तो करेगी नहीं।" हाँ, वह विरोध नहीं करेंगी परन्तु आपका जीवन समाप्त हो जाएगा। विरोध इस प्रकार प्रभाव दिखाएगा। जैसे ही आप में भाव समाप्त हो गया, *भाव, बुधा भाव समन्विता:*। श्रीकृष्ण की पूजा कौन कर सकता है? जब *भाव* होगा, *स्थाई भाव*। यह भक्तिरसामृत सिन्धु में वर्णित है कि *भाव* क्या है? लेकिन यदि आप में कोई *भाव* नहीं है तो आप भौतिक स्तर पर हैं। *कनिष्ठ अधिकारी* केवल दिखावा करता है। दिखावा लम्बे समय तक नहीं चलता। और दिखावा शीघ्र समाप्त हो जाएगा। (वृ. में प्रवचन श्री.भा. 1.7.27, 24 सित०, 1976)

209. अब हम कम करने जा रहे हैं। हमें इतने आदमी नहीं चाहिए ..... केवल कम से कम व्यक्ति रखे जाने चाहिए, जो उपयोगी हैं। अतिरिक्त आदमी रखने की आवश्यकता नहीं ...... व्यर्थ में व्यक्तियों की संख्या बढ़ाना और खर्चा बढ़ाना। (कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

210. यहाँ कड़ा परिश्रम करो। खाना और सोना नहीं। यह नहीं हो सकता। वे 24 घंटे व्यस्त रखें जाएँ। यही चाहिए। यह कोई आलसियों का मुफ्त का होटल नहीं है। जो यहाँ रहता है वह 24 घंटे के काम में लगे। "*कीर्तनीय सदा हरि:*" यदि कोई काम नहीं तो 'हरे कृष्ण' जप करो। यह किया जाना चाहिए। (कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

211. बम्बई में राधा–कुण्ड आर्विभाव दिवस के दिन मैंने श्रील प्रभुपाद को राधा–कुण्ड जल की

एक बोतल दी। उसी संध्या मैंने श्रील प्रभुपाद से पूछा, "जैसे वृन्दावन के सभी विशाल मन्दिरों ने अपने लघुरूप मन्दिर राधाकुण्ड के आस-पास बनाएँ हैं, क्या हम भी कृष्ण-बलराम मन्दिर वहाँ बनाएँ?"

"हाँ, यह अच्छा विचार है। तुम कभी भी यह कर सकते हो। वहाँ जमीन इतनी महँगी नहीं है आप एक आश्रम बना सकते हैं।" श्रील प्रभुपाद थोड़ा रुके और पूछा, "तुम वहाँ क्या करोगे?"

"प्रचार!"

"नहीं, राधा-कुण्ड प्रचार के लिए नहीं है। राधा-कुण्ड तो रस का अस्वादन करने के लिए है।" श्रील प्रभुपाद फिर रुके, "यह अच्छा विचार है।''

212. नयनाभिराम : श्रील प्रभुपाद राधा-कुण्ड पर एक भक्त रह रहा है, परन्तु उसने दीक्षा नहीं ली है। क्या वह आध्यात्मिक विकास कर रहा है?

श्रील प्रभुपाद – *आदौ गुरु आश्रय* : आध्यात्मिक जीवन की पहली सीढ़ी है आध्यात्मिक गुरू की शरण लेना।

नयनाभिराम : वह तपस्या का जीवन जी रहा है। वह केवल फल और दूध लेता है।

श्रील प्रभुपाद : वह कुछ चपातियाँ भी खा रहा होगा।

213. अच्युतानन्द : वे भी राधा-कुण्ड की मिट्टी का तिलक लगाते हैं।

श्रील प्रभुपाद : इसमें कोई हानि नहीं। परन्तु पहले उन्हें समझना होगा कि राधा-कुण्ड क्या है और राधा-कुण्ड के साथ कैसा व्यवहार किया जाए? (बम्बई के कमरे में वा., 16 अग०, 1976)

214. हँसदूत : उदाहरण के लिए .... (रुकावट) .... नौ से बारह बजे तक जप, क्या आप तब जप कर सकते हो? वह क्रोध में आ गई। उसने कहा, "मैं पहले ही चार घंटे माला बनाती हूँ, मेरे

पास समय नहीं है।"

श्रील प्रभुपाद : नहीं, नहीं, यदि वे माला बना रही है, तो यह दूसरी बात है।

हंसदूत : मैं जानता हूँ लेकिन यह केवल चार घंटे हैं और कुल 24 घंटे होते हैं, अत: शेष 20 घंटे बचते हैं। उनके समय को व्यवस्थित करने में थोड़ा समय लगेगा और उनको समझाना होगा कि उन्हें अधिक से अधिक सेवा करनी है।

श्रील प्रभुपाद : नहीं, यदि कोई किसी सेवा में नियुक्त है तो वह चाहे कीर्तन न करे। यह छूट दी जा सकती है। लेकिन जप ....

हंसदूत : लेकिन वास्तव में .....

श्रील प्रभुपाद : यह बहुत जरूरी नहीं है। समझ लो।

हंसदूत : किन्तु मैं कह रहा था कि .... यदि हम 24 घंटे का कीर्तन करना चाहे .....

श्रील प्रभुपाद : यदि वह उपलब्ध न हो, न संभव हो, बहुत अधिक .... परन्तु ये काम अवश्य किए जाने चाहिए।

हंसदूत : हाँ! मुझे तो केवल आपकी इच्छाओं के अनुरूप चलना है।

श्रील प्रभुपाद : वह स्वेच्छिक लिया जा सकता है। परन्तु कोई भी खाली न बैठे। विचारणीय बात यह है। यदि आप माला बना रहे हो, बहुत अच्छा आप उसे मत लीजिये, आपके लिए यह अनिवार्य नहीं। 24 घंटे का कीर्तन चाहे...... सोचो यदि हमारे पास बहुत आदमी न हों, यह संभव नहीं। यह वांछनीय है यदि हमारे पास काफी आदमी हों और वे व्यस्त नहीं हैं ..... हमें देखना है कि वे व्यर्थ में समय न गँवा रहे हों। देखना है कि यदि वे किसी सेवा-कार्य में व्यस्त हैं तो यह आवश्यक नहीं कि वह सेवा छोड़कर कीर्तन करें। परन्तु यह चीजें हैं....... *श्री विग्रहाराधन नित्य नाना श्रृंगार तन्मन्दिर-मार्जनादौ'* यह अनिवार्य है। यह सेवा आपके द्वारा या मेरे द्वारा की जानी चाहिए ...... यह प्रात: काल ही की जानी चाहिए। सारा मन्दिर साफ किया जाना चाहिए।

पाइपों में काफी पानी की मात्रा है। इस कार्य में लगभग घंटा ही लगेगा। इसकी अवहेलना होती है। मैं देख रहा हूँ कि मन्दिर साफ नहीं है। उसमें इतनी धूल है। (वृन्दावन-कमरे में वा., 4 अक्तू०, 1976)

215.1974 में रक्षा-बन्धन (बलराम जी के अर्विभाव दिवस) पर मैंने गुरुदास को कलाई पर बाँधने के लिए राखी दी जैसे कि प्रथा है। जब श्रील प्रभुपाद को पता चला तो उन्होंने सहमति नहीं दी, अपितु इसके विरोध में बोले। (रुक्मिणी के संस्मरण)

216. मायापुर, वृन्दावन इन मन्दिरों का अधिकतर भाग विदेशी भक्तों द्वारा उपयोग किया जाना चाहिए। अत: अभी तक भारत में कृष्णभावनामृत का प्रसार करने के लिए पहले से यहाँ करोड़ों मन्दिर हैं। तो भला हमारे दो मन्दिर कृष्णभावनामृत का क्या प्रसार करेंगे ? वे विदेशियों और बड़े आजीवन - सदस्यों के लिए हैं। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 3 जन०, 1973)

217. श्रील प्रभुपाद : सरकार द्वारा बहुत से बन्दर वृन्दावन से बाहर भेजे जा चुके थे, परन्तु ब्रजवासियों ने इसका विरोध किया। वे उन्हें पकड़ रहे थे ....

हरिकेश : यहाँ ?

श्रील प्रभुपाद : हाँ ! सरकार ! और यूरोप में हारमोन निकालने के लिए वे अच्छी कीमत पर बेचे जा रहे हैं। बन्दरों के हारमोन के टीके लगाए जाते हैं या उन्हें बदला जाता है जिससे वे अपनी यौन-शक्ति दुबारा प्राप्त कर लेते हैं। वे कामुकता में अधिक शक्तिशाली होते हैं।

हरिकेश- इससे बन्दरों के आध्यात्मिक जीवन में अवश्य बाधा पड़ती होगी। क्या इससे उनके आध्यात्मिक जीवन में बाधा पड़ती है ? क्योंकि तब वे वृन्दावन में नहीं मर सकते। (वृन्दावन-कमरे में वा., 7 सित०, 1976)

218. लोगों में अब पहले से बहुत आदर है (रुकावट) आपको मन्दिर की व्यवस्था ठीक प्रकार रखनी चाहिए। वे उसे पहले से *अंग्रेज* मन्दिर कहते हैं। परन्तु फिर भी लोग दर्शनों के लिए आते हैं, परन्तु यदि तुम *मलेच्छ* मन्दिर बना दोगे ...... वास्तव, (हँसते हुए) वे ऐसा कह सकते हैं,

परन्तु तब भी, वे आते हैं। उनकी श्रद्धा और विश्वास में बाधा पड़ सकती है और नहीं भी पड़ सकती है। यही प्रबन्धन है। (वृ.-कमरे में वा., 4 अक्तू०, 1976)

219. अत: आपको बहुत अधिक सावधान रहना होगा। किसी मायावादी के प्रवचनों का श्रवण मत करो। वैष्णवों की वेशभूषा में भी बहुत से मायावादी हैं। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने उनके विषय में वर्णन किया है, कि "*ऐइ त ऐका कलि चेला, नाके तिलक गले माला*" कि यहाँ कलि का अनुयायी है। चाहे उसके नाक पर तिलक भी है और गले में कंठी भी, परन्तु फिर भी वह *कलि-चेला* है। यदि वह मायावादी हैं, "*सहज-भजन काछे मम संगे लय परे बल*"। अत: यह बात है। आप वृन्दावन आए हो। सावधान रहो- बहुत सावधान। *मायावादी भाष्य शुनिले,* यहाँ बहुत मायावादी हैं। बहुत से तिलक तथा माला वाले हैं परन्तु तुम नहीं जानते उनके अन्दर क्या है। परन्तु महान् आचार्य यह सब ढूँढ़ सकते हैं।

श्रुति स्मृति पुराणादि,
पञ्चरात्र विधिं विना।
ऐकान्तिकी हरेर्भक्ति
उत्पातायैव कल्पते।।

वे केवल बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। इसलिए हमें गोस्वामियों का अनुसरण करना होगा, गोस्वामियों का साहित्य, विशेषकर *भक्तिरसामृत सिन्धु,* जिसका हमने *Nectar of Devotion* के रूप में अनुवाद किया। आप में से सबको उसे ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए और उन्नति करनी चाहिए। तथाकथित मायावादी वैष्णव कहलाने वालों के शिकार मत बनिए। यह बहुत खतरनाक है। (श्री. भा., 1.7.8 प्रवचन, 7 सित०, 1976)

220. एक बार वृन्दावन में कुछ भक्तों ने गली में आवारा घूमने वाले कुत्तों पर पत्थर फेंके और चिल्लाकर उन्हें भगाने का प्रयत्न किया परन्तु श्रील प्रभुपाद ने उन्हें यह करने से रोका, "उन्हें अकेला छोड़ दो"। बाद में श्रील प्रभुपाद ने अपनी थाली में से कुत्तों के लिए प्रसाद फेंकना शुरू किया। (महानिधि स्वामी जी के संस्मरण)

221. हमारे वृन्दावन मन्दिर का भवन शायद सारे आन्दोलन में सबसे अच्छा है और मैं यहाँ हर समय कम से कम पच्चीस अच्छे आदमी चाहता हूँ। क्योंकि यह वृन्दावन है, जो भी यहाँ आए उनका आदर्श चरित्र हो ताकि वृन्दावन के सभी लोग तथा और वे लोग भी जो आलोचना करने के आदी हैं, देखें कि हम तो वास्तव में श्रील रूप गोस्वामी की अध्यक्षता वाले सभी छः गोस्वामियों का ही अनुसरण कर रहे हैं। मैं यह चाहता हूँ कि जो यहाँ आए, चाहे वे गृहस्थ हो या संन्यासी, सच्चे गोस्वामी जैसा आचरण करे। गोस्वामी का अर्थ है इन्द्रियों का संयम और जो 24 घंटे विभिन्न प्रेमभरी सेवाओं द्वारा श्रीकृष्ण का गुणगान करें। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 23 मार्च, 1974)

222. हमारा सिद्धान्त है कि जो कुछ हमारी पुस्तकों में है साधारणतया उसे दोहराना। परन्तु भक्तों की संगति के बाहर रहना बहुत खतरनाक है। यदि तुम कुछ समय के लिए एकान्तमय जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो तुम अवश्य हमारे मायापुर या वृन्दावन के मन्दिर में जाओ और वे आपको एक छोटा कमरा दे देंगे और तुम वहाँ जप कर सकते और पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हो। मैं मन्दिर के प्रबन्धकों को यह निर्देश दे दूँगा कि वे आपको बिना बाधा के अपनी भक्ति करने दें। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 6 अक्तू, 1975)

223. यह अच्छी बात है कि उपेन्द्र यहाँ रहना चाहता है और वह अपने परिवार को भी यहाँ बुला रहा है। जो भी यहाँ स्थाई रूप से रहना चाहता है उनका स्वागत है। मैं चाहता हूँ कि अधिक से अधिक भक्त यहाँ रहें और ब्रजवासी बनें। यह बहुत प्रेरणादायक होगा। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 9 नव०, 1975)

224. यदि आप भारत आना चाहते हैं तो आपका स्वागत है। मायापुर और वृन्दावन के मंदिर मेरे अमरीकी और यूरोपीय शिष्यों के लिए ही हैं, जो यहाँ आ सकते हैं और इन पवित्र धामों का लाभ ले सकते हैं। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भवतारणी, 4 मई, 1974)

225. इस धाम में यदि कोई मेरा शिष्य सुराही से पानी पीता है और उसे दूषित करता है तो उस पर सभी ध्यान देंगे। अस्वच्छता के लिए मेरी आलोचना मत करवाइए, नहीं तो मेरे ऊपर सब कटु प्रहार करेंगे। यह शिष्य का कर्तव्य है कि सावधानीपूर्वक इन शिष्याचारों का पालन करें। (महानिधि स्वामी के संस्मरण)

226. वृन्दावन ऐसा आध्यात्मिक स्थान है, जहाँ श्रीकृष्ण किशोर बालक के रूप में अपनी नित्य लीला का आस्वादन करते हैं, और इसे सारी सृष्टि में सबसे उत्तम स्थान समझा जाता है। भौतिक जगत् में जहाँ यह लीला प्रकट की जाती है, उसे गोकुल कहते है और आध्यात्मिक जगत् में यह गोलोक या गोलोक वृन्दावन कहलाता है। (भ. र. सि. पृष्ठ 46)

227. वह पागलपन चाहिए। '*युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्*', एक पल का समय युग के समान लगता है। एक युग का अर्थ है बारह वर्ष। *युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्* ...... रोना। आँखों में मूसलाधार वर्षा के समान आँसू हैं। *युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्* ...... *शुन्यायितम् जगत् सर्वम्*, मुझे सारा संसार शून्य प्रतीत हो रहा है। क्यों ? *गोविन्द विरहेण में* ..... ऐसा पागलपन चाहिए। गोविन्द के विरह में, वही पागलपन। अत: यही पागलपन वृन्दावन में गोपियों द्वारा पूरी तरह से प्रदर्शित किया गया। वे श्रीकृष्ण के पीछे पागल थीं। जब श्रीकृष्ण वृन्दावन छोड़कर मथुरा चले गये तो वे इतनी पागल हो गईं कि उनका और कोई काम नहीं था केवल '*चक्षुषा प्रावृषायितम्*', केवल मूसलाधार आँसू बहाकर रोना। यही चाहिए। यही वृन्दावन का जीवन है। यह नहीं कि वृन्दावन में यौन-सुख की तलाश में रहना। (वृ. में श्री. भा. 1.7.11 प्रवचन, 10 सित०, 1976)

228. यदि तुम्हें सचमुच में 24,000 डॉलर मिलने वाले हैं तो सबसे उत्तम होगा कि उसको मायापुर वृन्दावन ट्रस्ट फंड के लिए अंशदान दे देना चाहिए, जो तुम अमेरिका में या भारत में कर सकते हो। तुम्हें वहाँ से आने वाले भक्तों से पता चला होगा कि भारत के इन केन्द्रों के लिए हमारी योजनाएँ कितनी विस्तृत हैं। उत्सव के दिनों में सारे विश्व से आए सैकड़ों भक्तों ने इन दोनों आध्यात्मिक स्थानों की बहुत प्रशंसा की। मायापुर और वृन्दावन इस्कॉन के भक्तों के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा के स्रोत हैं। ये विश्व में सबसे उत्तम स्थान हैं जहाँ जाकर 'हरे कृष्ण मन्त्र' का जप किया जा सकता है और गोलोक धाम वापस जाने की तैयारी की जा सकती है। अत: आप अपने अनुदान द्वारा अपने गुरुभाइयों और गुरुबहनों को यहाँ आने और आश्रय ग्रहण करने में सहायता कर सकते हो। ये स्थान आपके अपने लिए और आपके बच्चों के लिए भी हैं। तुम मायापुर आ सकते हो जहाँ तुम्हें अपने लिए अलग कमरा मिल सकता है, यह सुविधा बम्बई में भी उपलब्ध है; जो बहुत आरामदायक है, या वृन्दावन या लॉस एन्जिलिस में या जहाँ भी तुम

चुनो। मेरी केवल एक ही इच्छा है कि मेरे शिष्य 'हरे कृष्ण' मंत्र की कम से कम 16 माला जप करें, विधि-विधानों का पालन करें तथा भक्तों की संगति में रहें। तब तुम प्रसन्न रहोगे, शांत रैहोगे तथा कभी अशांत नहीं होओगे। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 3 अप्रैल, 1974)

229. अमेरिका से उत्तम कोटि की गायें, जो तुम्हारें पास वहाँ तथा न्यू वृन्दावन में हैं, उन्हें भारत भेजने के विषय में तुम्हारा क्या विचार है, जिससे हम उनको वृन्दावन और मायापुर परियोजना में रखकर पाल-पोस सकें और जिससे हमें बढ़िया दूध मिल सके? क्या यह सम्भव है? (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 18 दिस०, 1974)

230. तुम मुक्त कब हो सकते हो? यह श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा कहा गया है कि "*गोपी-भर्तुः पदकमलयोर्दासदानुसादास*" .... यह मुक्ति है। *गोपी भर्तुः, गोपियों* का भरण-पोषण करने वाला, *गोपीजनवल्लभ।* श्रीकृष्ण का कार्य है कि व्रजवासी गोपियों को कैसे प्रसन्न रखा जाए। *यशोदानन्दन ब्रजजनरंजन। ब्रजवासी* होने के नाते उनका और कोई काम नहीं, अपितु केवल श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना है, इसी तरह श्रीकृष्ण का और कोई काम नहीं अपितु गोपियों को और वृन्दावन-वासियों को प्रसन्न करना है। *गोपीजनवल्लभ।* अतः कैसे ..... ? श्रीकृष्ण *वृन्दावनवासियों* के प्रति इतने आसक्त क्यों हैं? जैसे ही उनके कुछ जीवन में कठिनाई हुई — हम भागवतम् से पढ़ते हैं-जैसे आग का प्रकोप हुआ, वृन्दावनवासी और किसी को नहीं जानते, परन्तु केवल श्रीकृष्ण को। और श्रीकृष्ण ने आग को निगल लिया। जैसे ही इन्द्र द्वारा मूसलाधार वर्षा का प्रकोप हुआ; वृन्दावन में बाढ़ आने वाली थी, श्रीकृष्ण तुरन्त उनकी सहायता के लिए आ गए और उन्होंने गोवर्धन पर्वत उठा लिया। "आओ मेरे संरक्षण में आओ।" यही गोपीजनवल्लभ हैं। व्रजवासी और कुछ नहीं जानते। वे यह भी नहीं जानते कि श्रीकृष्ण परम पुरुषोत्तम भगवान् हैं। परन्तु वे श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और किसी से प्रेम करना नहीं चाहते। यही उनकी एकमात्र विशेषता है। वे श्रीकृष्ण को इसलिए नहीं चाहते थे कि श्रीकृष्ण परम पुरुषोत्तम भगवान् हैं। श्रीकृष्ण *परम ब्रह्म परम धाम* हैं, वे यह नहीं जानते। वे श्रीकृष्ण को छोड़कर भगवान् विष्णु से भी प्रेम नहीं करना चाहते। यही उनकी योग्यता है। "*गोपीजनवल्लभ*"।

अतः हम जब उस स्तर पर आते हैं, श्रीचैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं के अनुसार '*गोपी भर्तुः पदकमलयोंः*' वे भी गोपियों का संदर्भ इसलिए देते हैं क्योंकि श्रीकृष्ण पूर्णतया गोपियों के प्रेम में

विवश हैं। वे कहते हैं, "मैं गोपियों का कृतज्ञ हूँ, मैं उनके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। यह संभव नहीं।" श्रीकृष्ण चाहे सर्वशक्तिमान और पूर्ण ऐश्वर्यशाली हैं, परन्तु फिर उनके पास कोई साधन नहीं कि वे गोपियों का ऋण चुका सकें। यह गोपियों का स्तर है। श्रीचैतन्य महाप्रभु परामर्श देते हैं, "*रम्या कचिदुपासना व्रजवधू वर्गेण* या *कल्पिता*"। गोपियों से बढ़कर किसी और ने श्रीकृष्ण की ऐसी पूजा नहीं की। *रम्या काचिदुपासना व्रजवधू वर्गेण* या *कल्पिता* यह सबसे ऊँची है। इसी तरह से वे कहते हैं, "*गोपीभर्तुः पदकमलयेर्दासानुदास* .... *गोपीजनवल्लभ*। *गोपीजनवल्लभ* श्रीकृष्ण हैं। *पदकमलयोः*, वह जिसने आश्रय ले रखा है। गोपी बनने का प्रयास मत करो। नहीं, गोपियों के चरण कमलों की धूलि बनने का प्रयास करो। *गोपी भर्तुः पदकमलयोर् दास-दासानुदासः*, उद्धव की तरह। उद्धव वृन्दावन में एक घास बनना चाहते थे, क्योंकि गोपियाँ उन पर चलेंगी। यही पराकाष्ठा है। अतः मुक्ति .... मुक्ति का अर्थ है '*गोपी भर्तुः पदकमलयोर् दास-दास दासानुदास* ...... जितना अधिक आप वैष्णवों के दासानुदास बनते हैं, उतना अधिक आप पूर्ण हैं। यही आदर्श है।

अतः हमें सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि हम श्रीकृष्ण द्वारा अपनी पहचान बनाना चाहते हैं और यदि हम वृन्दावनवासी बनना चाहते हैं तो हमें श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा दी गई इस शिक्षा का अवश्य पालन करना चाहिए। *गोपीभर्तुः पदकमलयोर्दासानुदास* ....। अतः गोपी बनने का प्रयास, यह भी मायावाद है। यही कि मैं गोपी बनूँगा। नहीं, आपको गोपियों के दासों का दास बनना होगा। बस ...... नहीं तो वही अहंकार। तब फिर हम पथभ्रष्ट हो जाएगें। यह भौतिक बीमारी है। (श्री. भा. 1.7.41-42 प्रवचन, 2 अक्तू०, 1976)

231. गुणार्णव : आप कह रहे थे कि आप चाहते हैं कि आपको 500 विद्यार्थी मिलें। अतः हमें जितना हो सके विद्यार्थियों के लिए स्थान रखना चाहिए .....

श्रील प्रभुपाद : हाँ!

गुणार्णव : इन मंजिलों पर यदि हमारे व्यवस्थापकों के कार्यालय भी होंगे ....

श्रील प्रभुपाद : नहीं! नहीं, हमें उन्हें निमंत्रण देना होगा नहीं तो चार विद्यार्थियों के लिए इतने बड़े

भवन का क्या प्रयोग? और केवल प्रबन्धक? यह अच्छी बात नहीं। वहाँ विद्यार्थी अवश्य होने चाहिए। न कि चार विद्यार्थी और तीन दर्जन प्रबन्धक।

गुणार्णव : नहीं ।

श्रील प्रभुपाद : इसका कोई अर्थ नहीं .... यह अपव्यय है। तब तो सारा कार्य व्यर्थ है। वहाँ कम से कम 500 विद्यार्थी और 10 मैनेजर होने चाहिए। तब ठीक है। शर्मा जी, क्या यह ठीक है?

डा. शर्मा : हाँ।

तमालकृष्ण : अध्यापक इतने योग्य होने चाहिए कि वे बहुत से विद्यार्थियों को संभाल सकें।

श्रील प्रभुपाद : अब आपका कार्य है कि विद्यार्थी लाए जाएँ। यही सर्वप्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। लोग आश्वस्त हो जाने चाहिए। विदेश जाने से पूर्व मेरा बहुत खराब अनुभव रहा। मैंने बहुत लोगों को शिक्षार्थी देने को कहा, वैदिक शिक्षार्थी। "स्वामी जी हमें धन कमाना है।" कोई भी नहीं चाहता था कि बच्चे ईमानदार, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी बनें। कोई भी नहीं चाहता। वे उन्हें चोर दुष्ट, चतुर और धोखेबाज बनाना चाहते हैं, जो धन लाएँ। यह कठिनाई है। अत: तुम्हें यह कठिनाई आएगी, परन्तु प्रयत्न करो। वे लोफर तथा शूद्र चाहते हैं। फिर भी, इसे एक आदर्श संस्था बनाए रखो। मुझे यही अनुभव है। जब मैं विदेश जा रहा था मैंने सभी मित्रों को भी परखा ......"

डा. शर्मा : भारतीय भी?

श्रील प्रभुपाद : भारतीय? विदेशी, वे हिप्पी थे; इसलिए वे आये।

अक्षयानन्द : इनके अमेरिका जाने से पहले।

श्रील प्रभुपाद : हाँ। यहाँ निराश होने के बाद मैं अमरीका चला गया।

तमालकृष्ण : इसका अर्थ है कि हमें विद्यार्थी प्राप्त करने के लिए जोरदार तरीके से प्रचार करना होगा।

श्रील प्रभुपाद : हाँ।

अक्षयानन्द : हमें प्रचार करना होगा।

श्रील प्रभुपाद : यही कठिनाई है। स्थान तैयार रखो, परन्तु तुम्हें विद्यार्थी लाने होंगे।

तमालकृष्ण : वे अपने आप आने वाले नहीं हैं। हमें बाहर निकलना होगा और उन्हें लाना होगा।

श्रील प्रभुपाद : वे बाद में आएँगें, जब वे देखेंगे ...... ''हाँ....''

यशोदानन्दन : हमें सबसे पहले इस्कॉन के विद्यार्थी लाने होंगे।

श्रील प्रभुपाद : इस्कॉन या फिस्कॉन, विद्यार्थी लाओ (हँसी)।

डा. शर्मा : प्रभुपाद, ये विद्यार्थी यहाँ आ सकते हैं, जितने भी आपको चाहिए।

श्रील प्रभुपाद : मुझे भी यही चाहिए। मुझे नम्बर चाहिए। इससे अंतर नहीं पड़ता इस्कॉन या फिस्कॉन।

डा. शर्मा : नहीं, मेरे कहने का अर्थ हैं मुफ्त में, कोई खर्चा नहीं।

श्रील प्रभुपाद : इसका अर्थ है वे अच्छे परिवार से नहीं आएँगें।

डा. शर्मा : वे अच्छे परिवार से हों, यही प्रयास है।

गुणार्णव : वे निम्न परिवार से होंगे।

श्रील प्रभुपाद : इसका अर्थ है आप यह नहीं कर सकते। (गुरुकुल का निरीक्षण, 26 जून, 1977)

232. अब आप पति-पत्नी इस वृन्दावन योजना को विकसित करो। बहुत समय पहले तुम वृन्दावन जाना चाहते थे, अत: मैंने सोचा तुम वास्तव में पूर्णतया वहीं रहने के लिए बने हो और

इस तरह वहाँ की देखरेख करो, परन्तु सावधानी से रहना। यह भारत है। बुद्धिमानी इसी में है कि हम काल, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार रहें। अन्य भारतीय स्त्रियों के समान तुम पति के अतिरिक्त किसी के साथ गहरा मेलजोल नहीं रखना।(श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 3 अग०, 1972)

233. अत: इस वृन्दावन मन्दिर में प्रतिदिन 500 से 1000 तक दर्शनार्थी आते हैं। और हमारा अतिथि-गृह बहुत अच्छा है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी सुविधानुसार आइए और देखिए कि यह कितना अच्छा बना हुआ है, विशेषकर सेवानिवृत्त सज्जन पुरुषों और वानप्रस्थों के लिए।

आप जयपुरिया हैं, अत: जयपुर में इस प्रकार की संस्था को स्थापित करने में हमारी सहायता करें। जयपुर को एक पवित्र तीर्थस्थान समझकर बहुत से वैष्णव वहाँ दर्शनों के लिए आते हैं। विशेषकर गौड़ीय वैष्णव वहाँ वृन्दावन के मूल अर्चाविग्रह जैसे गोविन्द जी, राधा-दामोदर आदि के दर्शन करने आते हैं। इसीलिये मैं जयपुर में श्रीकृष्ण-बलराम मन्दिर का प्रतिरूप खोलना चाहता हूँ। मैं वृन्दावन में श्रीकृष्ण-बलराम मन्दिर के चित्रों की प्रतिलिपियाँ अलग से भेज रहा हूँ। नि:संदेह वहाँ पर राधा-कृष्ण और गौर-निताई भी हैं। मैं आशा करता हूँ कि यदि तुम्हारें पास जयपुर में भूमि का टुकड़ा हो, जिसपर आप वृन्दावन मन्दिर का प्रतिरूप बनाने में सहायता कर सकते हो। जब मैं आपके घर में अतिथि रूप में आया था, तो मैंने आपको भगवान् के एक अच्छे भक्त के रूप में देखा था और मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी उपरोक्त प्रार्थना को स्वीकार करेंगे। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 13 जु०, 1975)

234. मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप लोग फूल-बंगला बनवा रहे हैं। यह बहुत प्रचलित हो जाएगा। मुझे बताओ कि यह कैसे सम्पन्न हुआ। यह बहुत प्रशंसनीय बात है कि आपको आशा है कि झूलन यात्रा के लिए 30,000 लोग आएँगें। तुम्हें उदारता से *प्रसाद* बाँटना चाहिए। अक्षयानन्द महाराज धन की व्यवस्था करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति को प्रसाद मिलना चाहिए। यह हमारा विशेष कार्यक्रम है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 11 अग०, 1975)

235. इसी तरह कार्तिक (अक्तूबर-नवंबर) के महीने में होने वाले अनुष्ठानिक उत्सव के विषय में पद्म-पुराण में वर्णन हैं। वृन्दावन में इस महीने भगवान् श्रीकृष्ण के दामोदर स्वरूप की

प्रतिदिन प्रार्थना करना एक नियामक सिद्धान्त है। (भ. र. सि. पृष्ठ-42)

236. मैं यह जानकर बहुत प्रसन्न हूँ कि वृन्दावन मन्दिर की गतिविधियों में सहयोग करने के लिए नए व्यक्ति जुड़ रहे हैं। रसोईघर विभाग साफ-सुथरा होना चाहिए और वस्तुओं का अपव्यय नहीं होना चाहिए। यह प्रथम सिद्धांत है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 6 जन०, 1976)

237. यदि कोई भूमि या भवन का अनुदान देने के लिए आगे आए तो यह अलग बात है, परन्तु हमें उसके लिए खर्चा करने के लिए अधिक रुचि नहीं दिखानी चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 5 जन०, 1973)

238. आपसे यह प्रार्थना है कि आप श्री सेठ हनुमान प्रसाद पोद्दार, चुरूवाला टेक, स्वामी घाट, डाकखाना मथुरा, यू.पी., को जाकर मिलें। ये वृन्दावन और मथुरा के बीच में बिरला मन्दिर के पास वाले विशाल भूखण्ड के प्रबन्धक अध्यक्ष हैं। वे हमें 'मथुरा गोचार भूमि' पर 25 बीघा भूमि अनुदान रूप में मुफ्त उपहार देंगें। अत: शीघ्र जाओ और भूमि देखो, और यदि वह उपयुक्त हो तो शीघ्र ले लो। इस बात की चिन्ता मत करो कि यह हमारे मन्दिर से थोड़ी दूरी पर है। वह हम संभाल लेंगे और यह कोई समस्या नहीं है। यदि आप इस भूमि को ठीक तरह संभाल लोगे तो वे और भी दे सकते हैं। वे देखना चाहते हैं कि भूमि गौ-रक्षा के लिए प्रयुक्त हो। भूमि इसी उद्देश्य के लिए है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 26 सित०, 1974)

239. अत: श्रीकृष्ण हर तरह से पूर्ण हैं और यदि हम कृष्णभावनामृत को अपना लें, श्रीकृष्ण के चरणकमलों का आश्रय ले लें, *स: वै मन: कृष्ण पदारविन्दयो:*, यदि हम हर क्षण अपना मन श्रीकृष्ण के चरणों में स्थिर कर लें, तो हर काम बहुत अच्छी तरह से होगा। यह श्रीकृष्ण की प्रतिज्ञा है। '*तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्*'। यदि कोई सदैव प्रेम और अनुराग में लगा रहेगा..... औपचारिक प्रेम की तरह नहीं। भावपूर्ण प्रेम, स्वाभाविक, इसी की आवश्यकता है। वृन्दावन में यही उदाहरण है। हम वृन्दावन की सूचना शास्त्रों जैसे श्रीमद्भागवतम् से प्राप्त करते हैं कि कैसे वृन्दावन के निवासियों का श्रीकृष्ण के प्रति स्वाभाविक अनुराग है; चाहे वे गोपियाँ, गोप बालक, पक्षी, पशु, बछड़े और पेड़, सभी यहाँ तक कि मक्खियाँ, कीड़े मकोड़े, यहाँ तक व्रज रज, घास सभी कोई —वे सभी चिन्मय हैं, आध्यात्मिक हैं। वे भौतिक नहीं हैं। अपितु वे

विभिन्न प्रकार से श्रीकृष्ण की ओर आकर्षित हैं। (वृ. में श्री. भा. 1.7.10 प्रवचन, 9 सित०, 1976)

240. तुम्हें भगवान् की पोशाकें बनानी चाहिए। वे बाहर के लोगों द्वारा नहीं बनाई जानी चाहिए। श्रीकृष्ण काला रंग पहन सकते हैं, परन्तु व्यक्तिगत रूप से मुझे वह पसन्द नहीं। (किशोरी देवी दासी के संस्मरण)

241. प्रेमामयी सेवा करने का अर्थ है राधारानी के चरणकमलों का अनुसरण करना और वृन्दावन के भक्त प्रेमामयी सेवा में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए अपने आपको राधारानी के संरक्षण में रखतें हैं। दूसरे शब्दों में प्रेमामयी सेवा भौतिक जगत् का कार्य नहीं है, यह प्रत्यक्ष रूप से राधारानी के नियन्त्रण में है। (भ. र. सि.-1-शुद्ध प्रेममयी सेवा के लक्षण)

242. श्रील कृष्णदास कविराज के समय मदनमोहन अकेले थे, उनके साथ राधारानी नहीं थीं। राधारानी का प्रवेश बाद में हुआ। मदनमोहन जी का मन्दिर पहले ऊँचाई पर था, वही आरंभिक पुराना मन्दिर है। यह अभी भी है और इसके दर्शन अभी भी किए जा सकते हैं, जिसके साथ-साथ नया मदनमोहन मन्दिर भी है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 28 जून, 1973)

243. श्रीकृष्ण को भगवान् रूप में स्वीकार करना और उनके आदेशों का पालन करना। अतः उनके प्रति प्रेमामयी सेवा करना, यही पूर्ण प्रक्रिया है। श्रीमती राधारानी आदर्श भक्तिमयी सेवा की मूर्तिमान स्वरूपा है। 'ब्रह्म-संहिता' में राधारानी का वर्णन श्रीकृष्ण की आध्यात्मिक शक्ति के विस्तार रूप में किया गया है। इस तरह वे श्रीकृष्ण से अभिन्न हैं। गोपियाँ, जो राधा और श्रीकृष्ण की सेवा-शुश्रूषा करती हैं, वे साधारण स्त्रियाँ नहीं हैं, वे श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति का विस्तार हैं। राधारानी और गोपियों को कभी भी साधारण स्त्रियाँ नहीं समझना चाहिए, वास्तव में उनका स्तर समझने के लिए हमें एक आध्यात्मिक गुरु से मार्गदर्शन लेना चाहिए। यदि हम जीवात्मायें वास्तव में राधारानी का संग प्राप्त करना चाहती हैं तो वह सम्भव हो सकता है, यद्यपि वे साधारण स्त्री नहीं हैं। निरन्तर प्रेमामयी सेवा में दक्षता प्राप्त करके ही हम राधारानी के संगी बनने की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। (कृष्णभावनामृत की प्राप्ति, 6, कृष्णभावना को अपनाना)

244. मैं चाहता हूँ कि हमारा वृन्दावन का मन्दिर भारत में सर्वोत्तम मन्दिर हो। पहले ही लोग कहते हैं कि सुन्दरता में यह मन्दिर जिले के सभी मन्दिरों से श्रेष्ठ है। अत: अब इसकी व्यवस्था अच्छी तरह से होनी चाहिए। तुमने मेरे आदेशों का अच्छी तरह से पालन किया कि संकीर्तन कार्यक्रम केन्द्रबिन्दु होना चाहिए। अत: मैं जानता हूँ कि वहाँ सब कुछ ठीक प्रकार से चलेगा। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 1 नव०, 1974)

245. यह अच्छी बात है कि अक्षयानन्द स्वामी भ्रमण करके धन एकत्र कर रहें हैं, परन्तु ध्यान रहे कि वृन्दावन मन्दिर की व्यवस्था में बाधा न आए। यह धन एकत्र करना भी एक प्रकार का प्रचार है, परन्तु केवल संचय ही नहीं, परन्तु व्यय भी स्थिर होना चाहिए और उसका सूक्ष्म परीक्षण भी होना चाहिए। कुछ भी असंयमित रूप से व्यय नहीं हो। यह तुम्हें देखना होगा। मुझे तंग मत करो कि कैसे करना है? मैंने आपको इसका उत्तरदायित्व दिया है कि कैसे करना है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 17 जुलाई, 1975)

246. हाँ, आप संकीर्तन के लिए अर्चाविग्रह को बाहर बैलगाड़ी में ले जा सकते हैं। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 17 जुलाई, 1975)

247. हाँ, आप 'अतिथि-गृह' के स्थान पर इसका नाम 'मन्दिर और आश्रम' भी रख सकते हो। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 17 जुलाई, 1975)

248. अत: मैं बारम्बार व्यवस्थापकों से अनुरोध करता हूँ कि आपको मन्दिर के मामलों का प्रबन्ध करने में बहुत सिद्धहस्त होना चाहिए। हर चीज ठीक तरह से होनी चाहिए। एक दमड़ी भी व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। एक वैष्णव को दक्ष होना चाहिए, उसे हर बात में कुशल होना चाहिए। उसे कोई छूट नहीं है कि "मैं भक्त बन गया हूँ। अत: मैं भौतिक चीजों के प्रति अनासक्त बन गया हूँ।" कौन-सी भौतिक चीजें? '*निर्बन्धे कृष्णसम्बन्धे युक्त वैराग्यमुच्यते*'! श्रीकृष्ण से जो भी सम्बन्धित है वह भौतिक नहीं हो सकता, वह आध्यात्मिक है। मैंने बहुत बार समझाया है कि यह मन्दिर है, इसे साधाराण भवन मत समझो। यह वैकुण्ठ है। '*चिन्तामणि प्रकरसद्मसु*'। श्रीकृष्ण का अपना निवास स्थान है *प्रकरसद्मसु*। '*चिन्तामणि प्रकरसद्मसु*'। *सद्म*। *सद्म* अर्थात्

घर। अत: हमें बहुत अधिक ध्यान देना होगा कि यह मन्दिर बहुत अच्छी तरह रखा जाए। इसकी व्यवस्था अच्छी तरह से होनी चाहिए। ऐसा नहीं कि मैं वैष्णव हो गया हूँ। हर चीज चोरी होने दो या खराब होने दो या टूटने दो। मैं वैष्णव बन गया हूँ। मैं इन सबका ध्यान नहीं रख सकता। यह मेरा काम नहीं है। (प्रवचन श्री. भा. 1.7.40, 1 अक्तू॰ 1976)

249. एक भक्त बनने का केवल यह अर्थ नहीं कि वह तिलक लगाए और वैष्णव वस्त्र पहने। वह भक्त नहीं है जिसकी रुचि भौतिक इन्द्रियतृप्ति में है। एक शुद्ध *भक्त* अपनी इन्द्रियों को संतुष्ट नहीं करता, अपितु श्रीकृष्ण की इन्द्रियों को प्रसन्न करता है। वही आध्यात्मिक जगत् है। आध्यात्मिक जगत् में, वृन्दावन में, हर कोई माँ यशोदा, नन्द महाराज, श्रीमती राधारानी, गोपियाँ, गोप बालक, श्रीदामा, सुदामा, भूमि, जल, वृक्ष, पक्षी सभी श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। यही वृन्दावन का वास्तविक अर्थ है। जब श्रीकृष्ण वृन्दावन छोड़कर मथुरा चले गए, वृन्दावन में उनके विरह में सभी लोग मृत प्राय: हो गए थे। इसी तरह यदि हम भी श्रीकृष्ण के लिए उन्मत्त होंगे तो हम सदा वृन्दावन में या वैकुण्ठ में रह सकते हैं। यही श्रीचैतन्य महाप्रभु की शिक्षा है और उन्होंने यही अपने जीवन के उदाहरण द्वारा प्रदर्शित किया है। (भ. क. की शि. 12, 25-26)

250. श्रीकृष्ण चार अरब वर्ष में एक बार इसी स्थान पर, श्रीवृन्दावन धाम में, केवल हमें भागवत-धर्म सिखाने के लिए अवतार लेते हैं। इसलिए वृन्दावन इतना महत्त्वपूर्ण है। (ट्रान्सन्डैन्टल डायरी, खण्ड 1, पृष्ठ 32)

251. मुझे सूचना मिली है कि हमारे कुछ भक्त वृन्दावन में बाबा जी लोगों का संग कर रहे हैं। इससे वृन्दावन के दर्शनों के लिए आने वाले हमारे शिष्यों और लोगों में बहुत समस्या पैदा हो गयी है। यहाँ लॉस एन्जिलिस में हमने देखा है कि यहाँ कुछ 40 भक्तों का संघ हैं जो अकेले में राधा-कृष्ण की अंतरंग लीलाओं की चर्चा करते हैं और वे बनावटी रूप से सोचते हैं कि वे गोपियों की लीलाओं को अपरिपक्व अवस्था में समझ सकते हैं। यह हमारे समाज में तबाही मचा देगा और यदि यह होने दिया जाएगा, तो प्रचार कार्य में बुरी तरह से रुकावट आ जाएगी। श्रीकृष्ण को समझने की यह असामयिक इच्छा भौतिक कामुक-जीवन की इच्छा के कारण है, जैसा कि हमने वृन्दावन के कई बाबाजी और सहजियों में देखा है। जगन्नाथ दास वृन्दावन से

वापस आकर मेरे पास आया और पूछने लगा कि कुछ बाबा सिद्ध-देह के विषय में बोलते हैं और वह भी इन बाबाजी लोगों को सुन चुका है। अतः मैं चाहता हूँ कि यह तुरन्त रोक दिंया जाए। यदि बाबाजी लोगों का संग करना चलता रहा, तो इसका अर्थ है वे बिगड़ जायेंगे। बहुत से बाबा जी 2 या 3 स्त्रियाँ रखते हैं। *असत् संग त्याग*। हमारे जो भी भक्त वृन्दावन आते हैं उनके लिए इन बाबाजी लोगों से संग रोक दिया जाए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 7 जून, 1976)

252. हम यह प्रचार कर रहे है (कि श्रीकृष्ण ही सर्वशक्तिमान भगवान् हैं)। इस मन्दिर में (श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर, वृन्दावन) हम सबसे कह रहे हैं, यहाँ श्रीकृष्ण हैं। सदा श्रीकृष्ण का स्मरण करो! हरे कृष्ण जपो। तब तुम्हें हरे कृष्ण के विषय में सोचना होगा। केवल हरे कृष्ण मंत्र का जप करने से आप श्रीकृष्ण के भक्त बन सकते हैं। (आध्यात्मिक दैनिकी, खण्ड 1, पृष्ठ 32)

253. रामेश्वर : अतः हम कुछ प्रचार करना चाहते हैं, और एयर इंडिया इसके बाँटने में हमारी सहायता करेगी। तो प्रश्न है कि ये विद्यार्थी और प्रोफेसर, यह धूम्रपान इत्यादि से अपनी इन्द्रियों को संयमित नहीं कर सकते। तो क्या हम उन्हें अपने अतिथि-गृह के कमरे में ठहरने की आज्ञा दे सकते हैं क्योंकि यह निश्चित् है कि वे अपने कमरे में सिगरेट अवश्य पीयेंगे।

श्रील प्रभुपाद : यह बहुत कठिन बात है।

रामेश्वर : यही एक प्रश्न है और तब यदि आप सोचते हैं कि यह ठीक है तो हम उन्हें आमंत्रित कर सकते हैं, तभी हम यह निमंत्रण पत्र छापेंगे।

श्रील प्रभुपाद : पहले आप जी.बी.सी. इस पर विचार करो और फिर इस पर काम करो। एक कमरा बनाओ धूम्रपान के लिये। वह ठीक है। जैसा कि हवाई जहाज में प्रतिबन्ध है, धूम्रपान वर्जित। आप एक कमरा अलग बनाओ, ''धूम्रपान के लिए''।

तमाल कृष्ण : एक बार जब मैं श्रीकृष्ण-बलराम मन्दिर में ठहरा हुआ था, मैंने एक आदमी को कमरे में बीड़ी पीते देखा। यदि ऐसा कमरे में हो तो क्या मैनेजर जाकर उसे कहे कि कमरे में बीड़ी पीना वर्जित है?

श्रील प्रभुपाद : हाँ।

तमाल कृष्ण : उन्हें ऐसा करना चाहिए। उन्हें धूम्रपान वाले कमरे में ही जाना चाहिए।

श्रील प्रभुपाद : ''कृपया सिगरेट पीने के कमरे में जाइये।'' (प्रात:कालीन सैर, लॉसऐंजिलस, 5 जून, 1976)

254. इतिहास में ऐसे लोगों के कई उदाहरण हैं जो शारीरिक रूप से बहुत पंगु थे, परन्तु फिर भी उन्होंने कृष्णभावनामृत का पालन किया। अभी भी, आज तक भारत में वृन्दावन जैसे स्थानों पर बहुत से लोग हैं, जो अंधे, लंगड़े, अपंग तथा कुरूप हैं, परन्तु अपने निश्चय में दृढ़ हैं कि वे यथाशक्ति कृष्णभावनामृत का अभ्यास करेंगे। तो तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए। तुम्हारे अन्दर जितनी शक्ति है उतना भक्तियोग प्रक्रिया के अभ्यास में कृतसंकल्प हो जाओ। यदि तुम वास्तव में निष्कपट हो तो श्रीकृष्ण आपकी सहायता करेंगे। आपको जितनी चाहिए उतनी डाक्टरी सहायता ले सकते हो। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 3 जून, 1975)

255. हमारा कर्त्तव्य है कि वृन्दावन के भगवान् के रूप में श्रीकृष्ण का गुणानुवाद और श्रीचैतन्य महाप्रभु के 'हरे-कृष्ण आन्दोलन' को लोकप्रिय बनाना। मैं भी वृन्दावनवासी था, परन्तु 70 वर्ष की अवस्था में मैंने थोड़ा कृष्णभावना का प्रचार करने का प्रयास किया और अब यह संस्था प्रचलित हो गई है। तो मेरे विचार से वृन्दावन के स्वामी के विषय में वृन्दावन के बाहर प्रचार करना अधिक लाभप्रद होगा। एक भक्त श्रीकृष्ण के गुणों का प्रचार करके सब जगह वृन्दावन बना सकता है।

वहाँ बहुत सहजिया हैं जो श्रील रूप गोस्वामी की नकल करके वृन्दावन से बाहर नहीं जाना चाहते, परन्तु श्रीचैतन्य महाप्रभु स्वयं प्रचार हेतु सदा वृन्दावन से बाहर रहे, यद्यपि वे स्वयं वृन्दावन के स्वामी हैं। मुझे आपके वृन्दावन में आने पर कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु जैसा कि आपने संन्यास-आश्रम स्वीकार कर लिया है तो वृंदावन के बारे में प्रचार करना, वृंदावन में रहने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। मैं अब दिन-प्रतिदिन वृद्ध हो रहा हूँ , और मेरे लिए अब कठिनाइयाँ बढ़ रही है, इसलिए मैं अपने सभी युवा शिष्यों से अनुरोध कर रहा हूँ कि वे विश्व भर

में प्रचार करें। नहीं तो आपका वृन्दावन में सदा स्वागत है। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 18 नव०, 1976)

256. महीने में कम से कम एक बार आपके सिर का मुंडन अवश्य होना चाहिए। (वृन्दावन, कमरे में वा., 25 नव०, 1976)

257. श्रील प्रभुपाद : नौकर तभी रखा जाना चाहिए जब यह नितांत आवश्यक हो। नहीं तो सब काम हमें स्वयं करने चाहिए।

हंसदूत : श्रील प्रभुपाद! मैं यह समझता हूँ।

श्रील प्रभुपाद : वे दो हजार रुपये नौकर के लिए खर्च कर रहे हैं।

हंसदूत : अब तक जितना सम्भव है, मैंने बहुत लोगों को निकाल दिया है। परन्तु जब तक मुझे इन कामों को करने के लिए भक्त नहीं मिल जाते, मैं नौकरों को जाने नहीं दे सकता।

श्रील प्रभुपाद : नहीं! यह ठीक है, परन्तु भक्त यह सब क्यों नहीं करेंगे?

हंसदूत : ठीक यही तो ....

श्रील प्रभुपाद : यदि वे काम करने में आनाकानी करें तो वे अतिथिगृह में सम्मानित अतिथि की तरह रह सकते हैं (वृ. कमरे में वा., 4 अक्तू. 1976)

258. हरिशौरी — मैंने देखा है यदि आप चाहते हो कि काम चलता रहे तो आपको स्वयं उन्हें करवाना चाहिए। बस यही ठीक है, क्योंकि अभी उनके पास इतनी आन्तरिक प्रेरणा नहीं है कि वे स्वैच्छिक रूप से कार्य कर सकें।

श्रील प्रभुपाद : उनको इस प्रकार से करना पड़ेगा......। किसी एक व्यक्ति को कहना होगा "आप इधर आओ। आप ऐसा करो, आप वैसा करो।" तब यह हो जाएगा। मन्दिर का नायक अवश्य एक कुशल व्यक्ति होना चाहिए। (कमरे में वा., 4 अक्तू०, 1976)

259. अब मैं वापस आ गया हूँ, अतः मुझे अब भारत में ही रहने दो। मैं अब बम्बई, वृन्दावन और मायापुर में रहूँगा। जैसा कि तुम चाहते हो, अब मुझे वही करने दो, दृढ़ता से बैठना और अनुवाद कार्य पर ध्यान केन्द्रित करना, परन्तु यदि तुम मेरी शांति भंग करोगे तो मेरा मन अशांत हो जाएगा। मैं चाहता हूँ कि मैंने जो कुछ स्थापित किया है वह ठीक तरह से चले, परन्तु मैं देखता हूँ कि कुछ भक्त अपनी पुरानी तथाकथित "अच्छी" आदतों को फिर से अपना रहे हैं। यही कठिनाई है। यदि पुरानी आदतें पुनः जाग्रत हो जाएँ, तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा। यदि मेरा मन इस तरह अशांत होगा तो मैं भला पुस्तक लिखने पर ध्यान कैसे केन्द्रित कर सकता हूँ। यह सम्भव नहीं। अच्छा होगा कि मुझे इस बारे में कुछ न बताया जाए और मुझे वृन्दावन में रहने दिया जाए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 13 नव०, 1975)

260. संन्यासियों के लिए केवल एक कार्य हो- प्रचार, प्रचार, प्रचार, प्रचार। व्यवहारिक रूप से मैं यहाँ राधा-दामोदर मन्दिर, वृन्दावन में बैठा था। तो 70 वर्ष की अवस्था में कोई बाहर नहीं जाता। कम से कम 70 वर्ष की अवस्था में कोई वृन्दावन से बाहर नहीं जाता, परन्तु श्रीकृष्ण ने मुझे जाने का आदेश दिया। मैंने सोचा मुझे अवश्य जाना चाहिए, मेरे गुरु महाराज की ऐसी इच्छा थी। श्रीचैतन्य महाप्रभु .... चलो मुझे प्रयास करने दो। तो यदि मैं न गया होता तो इस संस्था का विकास न हुआ होता .... तो संन्यासी को अवश्य घूमते रहना चाहिए। एक संन्यासी को एक स्थान पर तीन दिन से अधिक नहीं रहना चाहिए। यह सिद्धान्त है। अतः इसलिए वह घूमता रहता था। परन्तु उसका घूमना यहाँ बाधा उत्पन्न कर रहा था। इसलिए मैंने घूमना बन्द कर दिया है। और इसके अलावा मन्दिर एक *निर्गुण* स्थान है। *संन्यासी* के लिए और कहीं रहना वर्जित है, किन्तु यदि मन्दिर में सेवा हो तो तीन दिन से अधिक भी रुका जा सकता है। अन्यथा, इसकी आवश्यकता नहीं है। (वृ.-कमरे में वा., 5 सित०, 1976)

261. मैंने देखा है कि कुछ लोग बहुत खाते हैं, मैं आश्चर्यचकित हूँ। अतिभोजन का अर्थ है बीमार होना। (वृ. के कमरे में वा., 4 अक्तू०, 1976)

262. मैं धर्मार्थ-चिकित्सालय के विषय में अधिक उत्साही नहीं हूँ, क्योंकि आजकल पूर्णरूपेण चिकित्सालय चलाने के लिए बहुत अधिक सावधानी और धन की आवश्यकता है। मैंने रामकृष्ण

मिशन के व्यवस्थापकों से सुना है कि उनके अस्पताल के औषधालय अधिकतर वेतन भोगी लोगों द्वारा चलाए जाते हैं, क्योंकि कोई भी कुशल चिकित्सक उस चिकित्सालय को चलाने के लिए उनके साथ सम्मिलित नहीं हो रहा था। इसलिए मेरा सुझाव है कि यदि आप वास्तव में सेवानिवृत्त होना चाहते हैं तो हमारे साथ रहने के लिए आपका स्वागत है। भारत में हमारे तीन बहुत अच्छे स्थान हैं-बम्बई, वृन्दावन और मायापुर। हमने इन केन्द्रों को बनाने के लिए कई लाख रुपये व्यय किए हैं, और यदि आप उनमें किसी में आकर रहना चाहते हैं तो आपका स्वागत है। आप अपनी पत्नी के साथ वानप्रस्थ की तरह आकर रह सकते है और जब भी आप ऐसा करने का निश्चय करें, तो हम अपने भक्तों की देखरेख के लिए एक औषधालय की व्यवस्था कर सकते हैं। परन्तु हाल में हमारा साधारण जनता के लिए धर्मार्थ औषधालय खोलने का कोई कार्यक्रम नहीं है। (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, डा० घोष, 17 नव०, 1974)

263. जो भ्रमण के लिए आ रहे हैं वे अतिथि-गृह में भुगतान कर के रह सकते हैं। भोजन का भुगतान करो, इसका भुगतान करो ...... नहीं तो आप सेवा करें। भक्तों को स्वेच्छा से व्यस्त रहना चाहिए। किसी को अनुरोध क्यों किया जाए? उन्हें तो प्रसन्न होना चाहिए।

264. एक अंग्रेजी कहावत है:- 'बड़े-बड़े बन्दरों के पेट तो बड़े-बड़े हैं,परन्तु लंका तक छलाँग लगाने में वे घबराते हैं।' वृन्दावन में बड़े-बड़े पेट वाले बहुत लोग हैं, परन्तु यदि उन्हें श्रीचैतन्य महाप्रभु के आन्दोलन का प्रचार करने के लिए कहा जाता है .... निराशाजनक (कमरे में वा., 9 मई, 1976)

265. यदुरानी ने श्रील प्रभुपाद से पूछा : "ऐसा क्यों है कि लोग बीड़ी पीते है और पापपूर्ण कार्य करते हैं?

श्रील प्रभुपाद ने उत्तर दिया : "वृन्दावन में कोई भी पापी नहीं हो सकता। परन्तु यदि कोई पापपूर्ण कार्य करता है तो उसे एक जन्म और लेना होगा, और उसके बाद वह सीधे भगवद्धाम जायेगा।"

"वृन्दावन में पेड़ों की क्या गति है? क्या वे भी भगवद्धाम वापस जाएँगे?"

"वे पहले से भगवद्धाम में हैं।"

(नरोत्तम दास ठाकुर के गीत का उद्धरण दिया कि वृन्दावन में सबकुछ यशस्वी हैं।) (उत्सव पर वृ.-कमरे में वा., यदुरानी के संस्मरण)

266. वृन्दावन का अर्थ है, वे जो वृन्दावन में है ..... यदि वे वास्तव में वृन्दावन में रहना चाहते हैं, तो उनका कर्त्तव्य केवल श्रीकृष्ण की इन्द्रियों को सन्तुष्ट करना होना चाहिए। यही वृन्दावन है। न कि यह कि "मैं वृन्दावन में रह रहा हूँ और अपनी इन्द्रियों को सन्तुष्ट कर रहा हूँ।" वे वृन्दावनवासी नहीं हैं। वहाँ बहुत बन्दर, कुत्ते और सुअर भी हैं। वे भी वृन्दावन में हैं। आपका क्या मतलब है कि वे वृन्दावन में रह रहें हैं? नहीं! जो कोई भी वृन्दावन में अपनी इन्द्रियों को सन्तुष्ट करना चाहता है, उनका आने वाला जीवन कुत्ते, सुअर और बन्दरों का होगा। तुम्हें यह अवश्य जान लेना चाहिए। अत: किसी को वृन्दावन में अपनी इन्द्रियों को सन्तुष्ट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। वह बहुत बड़ा पाप है। केवल श्रीकृष्ण की इन्द्रियों को सन्तुष्ट करो। (वृ. में प्रवचन श्री. भा. 1.7.24, 21 सित०, 1976)

267. श्रील प्रभुपाद कहते है, "कोई भी जो वृन्दावन में पैदा हुआ है, साधारण जीव नहीं है। यह सुनने में चाहे बहुत अच्छा न लगे, परन्तु जो वृन्दावन में रहते हैं और पापपूर्ण कार्य करते हैं, वे कुत्ते, सुअर और बन्दर बनते हैं। इस तरह व्रजरज चखकर वे पवित्र बन जाते है और मुक्त हो जाते हैं।"

श्यामसुन्दर ने पूछा "क्या ये सभी शरीर उन्हीं अपराधों के कारण मिले हैं या किसी और मानसिकता के कारण?"

"यौन-भोग में अति आसक्ति का अर्थ है कुत्ते का शरीर, एक बन्दर या एक कबूतर का शरीर। यहाँ तक कि एक वृक्ष का शरीर। और सुअर का शरीर उनके लिए है जो अति भोजन करते हैं या वर्जित भोजन खाते हैं।"

गुरुदास ने पूछा, "उनका क्या जो आदमी नदी के पास बैठकर सारा दिन गाँजा पीते हैं।"

श्रील प्रभुपाद ने हँसकर उत्तर दिया, "आह! उनको हिप्पी का शरीर मिलता है और उनकी बड़ी दाढ़ी और बड़े बाल होते हैं और उनको सैन-फ्राँसिस्को में जन्म लेना पड़ता है।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 46)

268. गुरुदास ने कहा, "अच्छा यहाँ कम से कम राधा-कृष्ण का मन्दिर है, अत: वे इसका आश्रय ले सकते हैं।"

श्रील प्रभुपाद ने कहा, " हाँ! यह भगवान् कृष्ण की कृपा है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसे प्राप्त करें या नहीं, परन्तु यह उपलब्ध है। श्रीकृष्ण कभी अपने भक्तों को माया के हाथों में नहीं त्यागते। '*न मे भक्त: प्रणश्यति*'। मेरे भक्तों का कभी नाश नहीं होता"। सैकड़ों वर्षों तक मुसलमानों ने वृन्दावन, मथुरा तथा जगन्नाथ पुरी से या लगभग सारे भारत से कृष्णभक्ति को मिटा देने का प्रयास किया, परन्तु यह अभी तक चल रही है। मुसलमान तथा अंग्रेज लोग आए और चले गए। पवित्र धाम की शक्तियाँ किसी भौतिक शक्ति से अधिक होती है। चाहे मुसलमानों के समय में अर्चाविग्रहों को गुप्त रखना पड़ा, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें हमारी सुरक्षा की आवश्यकता है। मुसलमान लोग लकड़ी की डंडी से अर्चाविग्रह को तोड़ेंगें और फिर सोचेंगे, "ओह! हमने हिन्दुओं के भगवान् को मार दिया है।" ये बिल्कुल बकवास है। केवल संगमरमर ही टूटा था, अर्चाविग्रह नहीं। मूर्ख लोग अर्चाविग्रह को सीमित और भौतिक रूप में सोचते हैं। भगवान् अपने भक्तों पर कृपा करने के लिए, स्वयं को अर्चाविग्रह के रूप में प्रकट करते हैं, परन्तु वे सदैव अपने नित्य आवास-स्थान वैकुण्ठ धाम में विद्यमान हैं और साथ ही साथ सृष्टि के कण-कण में विद्यमान हैं। श्रीकृष्ण पूर्ण शक्तिमान हैं; उनका अर्चाविग्रह-रूप अविनाशी है और उनका धाम समस्त आध्यात्मिक शक्तियों से पूर्ण है। हो सकता है मन्दिरों को कुछ हानि पहुँची हो, किन्तु साधारणतया मुसलमानों ने वृन्दावन में प्रवेश नहीं किया। वे डरते थे। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 46-7)

269. डाक्टर कपूर ने कहा, "आज भी वृन्दावन-मथुरा में बहुत कम मुसलमान हैं।"

श्रील प्रभुपाद ने सहमति जताते हुए कहा, "हाँ", ब्रजवासी मरना पसंद करेंगे लेकिन अपने कृष्ण को नहीं छोड़ेंगे। आप देखेंगे कि पूरे भारत में कुछ नीची जातियों के लोग-शूद्र या वैश्य, या

हरिजन धर्म परिवर्तन करके मुसलमान बन जाएँगें, परन्तु वृन्दावन में शूद्र तक भी श्रीकृष्ण को नहीं त्यागेंगे। यहाँ तक कि सारे संसार का सोना लेकर भी वे ऐसा सौदा नहीं करेंगे।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 47)

270. श्रील प्रभुपाद कहते हैं "हाँ, इसकी महिमा को (वृन्दावन में रहने और श्रीकृष्ण के समीप होने की) आप कभी भी आँक नहीं सकते। यहाँ हर कोने पर आपको श्रीकृष्ण का स्मरण कराया जाता है और उस सम्पर्क के माध्यम से आपकी आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है। उदाहरण स्वरूप 1962-65 में जब मैं यहाँ रहता था, मैं इन कमरों में बैठता था और 'हरे-कृष्ण' जप करता था और श्रील जीव गोस्वामी और श्रील रूप गोस्वामी की समाधियों का दर्शन करता था। केवल यह सोचकर कि वे कैसे लिखते थे, मैं लिखने के लिए उत्साहित हुआ। मैं टाइप करता और थोड़ा खाना पकाता। मैं बहुत सादा जीवन व्यतीत करता, श्रील रूप गोस्वामी की उपस्थिति में सन्तुष्ट रहता। गौड़ीय-वैष्णवों में ये सबसे उत्तम समाधियाँ हैं। उन्होंने ही मुझे पश्चिम में जाने के लिए प्रोत्साहित किया। अब मैं सैकड़ों मन्दिरों में जा सकता हूँ, परन्तु फिर भी यहाँ मुझे सबसे अधिक अच्छा लगता है। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 47)

271. सन् 1965 से उन्होंने गलियों को अच्छी तरह से नहीं रखा। गन्दा पानी इनको खराब कर रहा है यहाँ तक कि यमुना नदी को भी। अब वहाँ स्नान के लिए कोई स्थान नहीं है। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 48)

272. कौन कहता है कि भारत में पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं है? क्या कोई भूख से मर रहा है? मुझे कोई एक व्यक्ति दिखाओ जो भूखा मर रहा हो। व्यक्ति किसी भी मन्दिर में जा सकता है और प्रसाद खा सकता है। और जहाँ तक सोने का प्रश्न है हर व्यक्ति सो रहा है। जब आप सोते हैं, क्या आपको पता चलता है कि आप राजसी बिस्तर पर सो रहे हैं, या पथरीली सड़क पर? गोस्वामीगण हर रात अलग पेड़ के नीचे सोते थे और वह भी केवल दो या तीन घंटे के लिए। वहाँ आहार, निद्रा, भय, मैथुन की कोई कठिनाई नहीं। वहाँ कोई कमी नहीं, कोई गरीबी नहीं। आज भारत में यदि गरीबी है तो केवल कृष्णभावनामृत की, बस। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 48)

273. श्रील प्रभुपाद ने कहा, "अत: मैं परामर्श देता हूँ कि सफाई, संरक्षण और जीर्णोद्धार जैसे

कार्यक्रम चलाये जाएँ। सच्चाई है कि गोस्वामियों के सुन्दर मन्दिर–मदन मोहन, गोविन्द देव जी आदि–हमारी असावधानी से नष्ट हो रहे हैं।"

डा. कपूर शोक करते हुए, ''कभी लोग उन्हें पत्थरों की खान के रुप में प्रयोग करते हैं। अतः हम सबसे प्रथम उन्हें सुरक्षित रखें। उसके पश्चात् हमें उनका बहुत अच्छी तरह जीर्णोदार करना चाहिए, अर्चाविग्रह स्थापित करने चाहिए और प्रतिदिन *आरती* करनी चाहिए। तब वहाँ बहुत से लोग आएँगें और लाभ उठाएँगें।''

गुरुदास ने पूछा, "श्रील प्रभुपाद, भगवान् ने अपने धाम का ह्रास क्यों होने दिया?"

उन्होंने उत्तर दिया, "इनका ह्रास नहीं हुआ।"

"अच्छा, आपने अभी कहा कि गोस्वामियों के मन्दिरों की उपेक्षा हुई है।"

''यह सच है, परन्तु वृन्दावन का कभी ह्रास नहीं होता।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 49)

274. मैंने कहा "जो कुछ मैंने आज सुबह देखा है अधिकतर अमरीकी उसे देखकर आश्चर्यचकित होंगे।''

श्रील प्रभुपाद ने पूछा, "यह कैसे?"

"एक चीज के कारण जिसे वे अस्वच्छ समझेंगे।"

"जरा देखो, भौतिकवादी के लिए सब कुछ उलटा–पुलटा है, क्योंकि उसकी दृष्टि दूषित है। सुन्दरता और कुरूपता देखने वालों की आँखों में होती है।"

परन्तु यह पवित्र धाम पर कैसा पृष्ठावरण है?"

श्रील प्रभुपाद ने कहा हैं, "यह घिनौनापन जो आप देख रहे हैं, योगमाया है।" यह श्रीकृष्ण का आवरण है। नास्तिकों और मायावादियों को यहाँ से भगाने के लिए वृन्दावन ऐसा दिखता है, जैसा कि न्यूयार्क उनको आकर्षित करता है। भक्तों के लिए वृन्दावन ऐसा है जैसा कि श्रीकृष्ण

का आध्यात्मिक जगत् में आध्यात्मिक निवास स्थान—गोलोक वृन्दावन! परन्तु आपके पास उसे देखने के लिए आँखें अवश्य होनी चाहिए।"

डाक्टर कपूर ने कहा, "आध्यात्मिक दृष्टि"।

श्रील प्रभुपाद कहते हैं, "हाँ, वृन्दावन अपने आपको भौतिक लोगों से गुप्त रखता है।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 50)

275. मैंने कहा, "आप वृन्दावन को एक व्यक्तित्व समझते हो।"

श्रील प्रभुपाद ने कहा, "आध्यात्मिक चेतना में सब कुछ व्यक्तित्व है। यहाँ तक कि रावण की नगरी लंका हनुमान के सम्मुख एक भीमकाय राक्षसी के रूप में प्रकट हुई और हनुमान ने उसे पछाड़ दिया, क्योंकि उसने उन्हें ललकारा था।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 50)

276. मैंने कहा, "हाँ, मैंने सचमुच दिल्ली और यहाँ की चेतनाओं में अन्तर देखा हैं।" श्रील प्रभुपाद ने कहा, "मैं इसे अनुभव करने से अपने आपको रोक नहीं सका हूँ। फिर भी गरीबी .... श्रीकृष्ण की कृपा उनके भक्तों को निर्धन रखती है। उनकी एकमात्र सम्पत्ति कृष्णभावनामृत हैं। श्रीकृष्ण उन्हें माया द्वारा भ्रमित नहीं होने देते।"

मैंने कहा, "परन्तु मैं अभी भी नहीं देखता कि कैसे यह गोलोक वृन्दावन के समान है।''

श्रील प्रभुपाद ने कहा, ''तब तुम अवश्य प्रयास करो और वृन्दावन को खोजो। यह तुम्हें अवश्य करना चाहिए। यह चेतना का प्रश्न है। वास्तविक वृन्दावन तो आपके हृदय में है, जो तुमसे गोपनीय है।"

मैंने कहा, "मैं इसे कैसे करुँ?"

श्रील प्रभुपाद मुस्कुराते हुए, ''उन्नत ब्रजवासियों का अनुसरण करो। उदाहरणस्वरूप, गोपियाँ। वृन्दावन की गोपियाँ केवल श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने का प्रयास करती हैं। यही कृष्णभावनामृत है, कृष्ण को प्रसन्न करो। यदि आप किसी से प्रेम करते हो तो आप उसे प्रसन्न करना चाहते हो,

ठीक ? वृन्दावन में सभी श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं ..... चाहे पक्षी हों, वृक्ष हों, गायें हों, नदी हों, सभी। यह नहीं कि वृन्दावन केवल वहीं है। हम सब जगह वृन्दावन का आनन्द ले सकते हैं। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 50-51)

277. हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि श्रीकृष्ण बहुत दूर गोलोक वृन्दावन में हैं इसलिए जो कुछ हम उन्हें अर्पण करते हैं वे उसे स्वीकार नहीं कर सकते। यदि आप प्रेमपूर्वक श्रीकृष्ण को भोज्य पदार्थ अर्पण करोगे तो श्रीकृष्ण उसे खाते हैं। श्रीकृष्ण अपना गोलोक वृन्दावन नहीं त्यागते, परन्तु उनके विस्तार वहाँ पहुँचते हैं और भोग स्वीकार करते हैं। यह वृन्दावन, जो भारत में प्रकट हुआ श्रीकृष्ण की तरह ही वन्दनीय है। अत: हम उनके निवास स्थान के प्रति अपराध नहीं कर सकते। यदि हम वृन्दावन में रहते हैं तो मानो हम श्रीकृष्ण के साथ ही रह रहे हैं, क्योंकि वृन्दावन श्रीकृष्ण से अभिन्न है। इस वृन्दावन और मूल वृन्दावन में कोई अन्तर नहीं है। वृन्दावन बहुत प्रभावशाली है। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 51)

278. ''जरा सुनो, यह गोलोक वृन्दावन नहीं है। यह वृन्दावन की प्रतिकृति है, और इसलिए अभिन्न हैं, किन्तु क्योंकि यह भौतिक लोक में प्रकट हुआ है, इसलिए यहाँ भौतिक प्रकृति के नियम लागू होते हैं। जब हम मन्दिर में अर्चाविग्रह की पूजा करते हैं, प्रत्येक प्राणी देख सकता है कि यह श्रीकृष्ण हैं। निश्चित रूप से हम पत्थर और लकड़ी को नहीं पूज रहें, चाहे हमारी भौतिक आँखें उन्हें ऐसा ही देख रही हों। जब श्रीचैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ पुरी गए और उन्होंने भगवान् जगन्नाथ के दर्शन किए तो वे एकदम भावावेश में गिर पड़े और उन्होंने कहा, 'श्रीकृष्ण यहाँ हैं।' यह दृष्टि की बात है। अब आपको समझ आया ?''

मैंने कहा, "हाँ, मेरी आँखों ने मुझे धोखा दिया है।"

श्रील प्रभुपाद ने हँसते हुए कहा, "केवल आप ही नहीं, पागल खाने में लगभग सभी पागल होते हैं और इस भौतिक जगत् में हर कोई श्रीकृष्ण के प्रति नेत्रहीन है। अन्यथा यहाँ कोई न होता।"

मैंने कहा, "एक और बात, मैं इस धराधाम से श्रीकृष्ण के प्रस्थान की बात समझ नहीं पा रहा

हूँ। आपने एक बार कहा था कि जब श्रीकृष्ण यहाँ से प्रस्थान करते हैं तो वे अपने साथ अपना सारा निजी सामान आध्यात्मिक जगत् में ले जाते हैं।''

"हाँ जब गवर्नर आता है और विश्राम भवन से जाता है, तो अपना निजी सामान अपने साथ ले जाता है, परन्तु अपना खाली घर पीछे छोड़ जाता है। इसी तरह से जब श्रीकृष्ण इस धराधाम पर आते हैं, वे यहीं आते हैं। यह वृन्दावन श्रीकृष्ण का घर है। अत: इसी तरह से है जैसे गोलोक वृन्दावन।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 53)

279. ''परन्तु जब वे (श्रीकृष्ण) यहाँ थे यह (वृन्दावन) इस तरह का नहीं था। नहीं क्या?''

श्रील प्रभुपाद ने धैर्यपूर्ण ढंग से कहा, ''हो सकता है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यह कम महत्त्वपूर्ण है। आप इसको निश्चित जानिए कि जिन्होंने वृन्दावन को गन्दा किया है, उन्हें यहाँ कुत्ते और सुअरों का जन्म लेकर भुगतना पड़ेगा, परन्तु फिर भी वे घाटे में नहीं हैं। वृन्दावन बहुत अधिक प्रभावशाली है, क्योंकि यहाँ सुअर और कुत्ते को भी मुक्ति मिलती है। यहाँ का जीवन दूषित नहीं है, क्योंकि दूषित से दूषित लोग भी यहाँ पवित्र हो जाते हैं।''

मैंने कहा, "मैं अभी भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि श्रीकृष्ण ने अपने निवास स्थान का ह्रास क्यों होने दिया?"

श्रील प्रभुपाद ने दृढ़तापूर्वक कहा "इसका ह्रास नहीं हो रहा। यदि यहाँ कुत्ते तक भी मुक्त हो रहे हैं तो भला ये कैसे अधोगति को प्राप्त हो सकता है?

"परन्तु यह अच्छी तरह से साफ-सुथरा नहीं रखा हुआ है।''

''तुम्हारी दृष्टि में यह अच्छी तरह से नहीं रखा गया, किन्तु तुम्हारी आँखें अपूर्ण हैं।"

मैंने आग्रह किया "केवल मेरी ही नहीं।"

"नहीं, सभी की। किन्तु यदि हर कोई कहे कि दो और दो पाँच होते हैं, तो क्या यह ठीक है?''

"नहीं।"

"इसलिए अधिकांश लोगों का मत गलत हो सकता है। आपको श्रेष्ठ अधिकारी जैसे कि प्रामाणिक गुरु की शरण लेनी चाहिए, क्योंकि वे कभी भी शास्त्र के मत का विरोध नहीं करते, गुरु की विचारधारा सबसे उत्तम है। यदि गुरु कहते हैं कि घास नीली है और आकाश हरा है, तो उनकी राय ही माननी चाहिए। हमें यह अवश्य स्वीकार कर लेना चाहिए कि हमारी दृष्टि इतनी अपूर्ण है कि हमें रंग के विषय में भ्रांति है।"

गुरुदास ने कहा, ''लोग प्राय: प्रारम्भ में वृन्दावन के विषय में भ्रमित हो जाते हैं।"

श्रील प्रभुपाद ने कहा, "हाँ, क्योंकि हम वृन्दावन में दोष ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु एक भक्त जानता है कि वृन्दावन तो वृन्दावन है। इंग्लैंड तुम्हारें सभी दोषों के साथ भी मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" (एक प्रसिद्ध ब्रिटिश द्वारा कथन) अत: चाहे वृन्दावन में रह रहे लोग भी बहुत धर्मपरायण नहीं लगते, वे बहुत भाग्यशाली हैं, क्योंकि वे श्रीकृष्ण की धरती पर रहते हैं, *जय जय वृन्दावनवासी यत जन*। वृन्दावन के सभी वासियों की जयजयकार हो। यह नहीं कहा जा रहा कि यहाँ केवल भक्तों का यशोगान होता है। सबका, यहाँ तक सुअरों का भी। किसी धनी वैभवशाली परिवार में जन्म लेने की अपेक्षा वृन्दावन में जन्म लेना अधिक मंगलप्रद होगा, क्योंकि अगले जीवन में वे भगवान् के धाम लौट जायेंगे। सुअर और भक्त दोनों मुक्त हो जाते हैं, बिना किसी भेदभाव के। जब तक कोई पूर्व जन्म में भक्त नहीं होगा, वह यहाँ जन्म नहीं ले सकता। वह कुछ वर्षों तक सुअर और कुत्ते का शरीर प्राप्त कर लेगा, परन्तु इससे कोई बाधा नहीं है। वह केवल पापपूर्ण जीवन से मुक्ति पा रहा है।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 54-55)

280. गुरुदास ने पूछा, "श्रील प्रभुपाद यदि यहाँ (वृंदावन) पर किसी का प्रामाणिक गुरु नहीं है, क्या वह तब भी मुक्त हो सकता है?" श्रील प्रभुपाद ने उत्तर दिया, "हाँ, क्योंकि वृन्दावन प्रत्यक्ष रूप से श्रीकृष्ण के निरीक्षण में है। श्रीकृष्ण ही उनके आध्यात्मिक गुरु हैं।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 55)

281. गुरुदास ने कहा, "मेरे विचार में आपको गुरु रूप में प्राप्त करना वृन्दावन में जन्म लेने से

बढ़कर है।"

श्रील प्रभुपाद मुस्कराते हुए कहते हैं, ''यह वैष्णव की मनोवृत्ति है। मुझे याद है जहाँ भी मेरे गुरु महाराज गए, वृन्दावन भी वहाँ होता था। प्रामाणिक गुरु सदा अपने साथ वृन्दावन का वातावरण लेकर चलते हैं, इसलिए सदा गुरु के साथ रहना ही सबसे अच्छा है।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 55)

282. श्यामसुन्दर ने कहा, "श्रील प्रभुपाद हम तो सबसे उत्तम स्थिति में हैं। हमारे पास दोनों हैं-आप भी और वृन्दावन भी।"

अचानक श्रील प्रभुपाद का आचरण गंभीर और चिन्तन-शील हो गया और उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा, "मैं केवल वृन्दावन का संदेशवाहक हूँ। वृन्दावन निष्कपट भक्त के हृदय में प्रकट होता है। वास्तव में यह न तो किसी नक्शे पर है न ही देश के किसी कोने में है।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 55)

283. "यदि तुम जप करो तो नियम सरल हैं। ये केवल तभी कठिन लगते हैं जब तुम जप करना छोड़ देते हो। इसलिए मैंने प्रारम्भ में यह परामर्श दिया कि तुम प्रतिदिन चौंसठ माला जप करो, परन्तु तुमने शिकायत की कि यह बहुत अधिक है। अत: मैंने कहा, 'ठीक है तब सोलह करो'। और अब तुम शिकायत करते हो नियम बड़े कठिन हैं।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 68)

284. मैंने वृन्दावन में ही सर्वप्रथम लिखना प्रारम्भ किया। नाम और यश के लिए नहीं, अपितु मेरे गुरु महाराज ने मुझे बताया, "श्रीकृष्ण के बताए सिद्धान्तों का अंग्रेजी भाषा में प्रचार करो।" यद्यपि उन्होंने यह आदेश 1935 में दिया, मैं झिझक रहा था क्योंकि मैं नहीं जानता था कि इसे कैसे करूँगा, कैसे लिखूँ? तब बीस वर्ष बाद मेरे गुरु महाराज मुझे स्वप्न-आदेश देने लगे और कहने लगे 'गृहस्थ जीवन छोड़ो और वृन्दावन जाओ।' ऐसे अनेक स्वप्नों के पश्चात् मुझे समझ आया कि वह समय आ गया है। मेरे बच्चे बड़े हो गए थे और मैं अपनी पत्नी को उनके संरक्षण में छोड़ सकता था। अत: मैं यहाँ आया और परिणामस्वरूप श्रीकृष्ण की व्यवस्था से इस उत्तम पवित्र स्थान (राधा-दामोदर) में आकर रुका। यही वह स्थान है जहाँ मैंने लिखना आरम्भ

किया। मैंने सोचा इसका प्रकाशन हो या न हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैं अपने शुद्धिकरण के लिए लिखूँगा। बस।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 56)

285. प्रामाणिक गुरु एक डाकिए की तरह संदेशवाहक होता है। न वह पत्र खोलता और न ही उस पर अपना मत देता है। तुम्हें संदेश पसंद है या नहीं, इसे लो या न लो—मैंने अपना उत्तरदायित्व निभा दिया । मैंने इसे तुम्हें प्रदान कर दिया। और यह सब यहीं शुरू हुआ। इसलिए ये राधा दामोदर मंदिर के कमरे आध्यात्मिक लोक के पहिए की धुरी हैं। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 57)

286. सोलह माला जप करना कोई बड़ी बात नहीं। वृन्दावन में बहुत से ऐसे भक्त हैं जो 120 माला जप करते हैं, इस तरह सोलह माला जप तो कम से कम है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि पश्चिमी देशों में 64 माला या 120 माला जप करना बहुत कठिन काम है, इसी लिए कम से कम सोलह माला जप अवश्य होना चाहिए। *तत्तत्कर्मप्रवर्तनात्*। यह निर्देश हैं। (वृ. भ. र. सि. पर प्रवचन, 20 अक्तू०, 1972)

287. जब हम पहली बार आए तो एक दुष्ट बैल तमाल वृक्ष के नीचे रहता था। वह साधुओं के हत्यारे के रुप में जाना जाता था और वह सोचता था कि यह भूमि उसकी है। वह किसी को सड़क के इस ओर आने नहीं देता था। तो जैसा कि तुम जानते हो कि श्रील प्रभुपाद ने हमें आदेश दिया था कि राधा-दामोदर से रमण-रेती तक प्रतिदिन संकीर्तन करना चाहिए। जब हम पहले पहल कीर्तन करते और करताल बजाते हुए आए तो वह बहुत क्रोधित हुआ। वह बैल धरती को रौंदता हुआ हमारे पीछे भागा। और हमें अपनी जान बचाने के लिये भागना पड़ा।

लगातार सात दिन प्रात: काल हमने संकीर्तन करते हुए बैल का सामना किया। बाद में बैल अदृश्य हो गया और लौट कर कभी नहीं आया। जो लोग आस-पास रहते हैं, वे कहने लगे कि ये तो चमत्कार हो गया। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 138)

288. श्रील प्रभुपाद ने पूछा, "क्या यह लड़का लोकनाथ गांजा पीता है?

श्यामसुन्दर हैरान हो गया। उसने अपना सिर ऐसे हिलाया मानो गहरी नींद के बाद जगा हो। "ऐसा क्या?"

श्रील प्रभुपाद ने कहा, "यदि वह ऐसा करना चालू रखता है तो हमारी सारी योजना विफल हो जायेगी।

श्यामसुन्दर ने कहा, '' श्रील प्रभुपाद, मैं इस विषय की जाँच करूँगा। मैं समझता हूँ कि लोकनाथ तो बहुत महत्वपूर्ण सेवा कर रहा हैं। वह एक व्यवसायिक मिस्त्री है, और स्वयं वह ही जानता है कि वह वहाँ क्या कर रहा है।''

"यह हो सकता है, परन्तु यदि वह विधि-विधानों का पालन नहीं कर रहा, तो हम क्या कर सकते हैं?"

श्यामसुन्दर ने कहा, "जो लड़के वहाँ हैं, वे अकेले हैं, उनको भी आपका अधिक संग चाहिए।''

श्रील प्रभुपाद कहते हैं, "उन्हें प्रतिदिन मेरे प्रवचन सुनने के लिए आना चाहिए। इतना उन्हें अवश्य करना चाहिए। नहीं तो - काम -काम - काम। भला वे *कर्मियों* से अलग कहाँ हैं?'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 153)

289. "यह गांजा पीना अवश्य रुकना चाहिए। सीजर की पत्नी पर कोई शंका नहीं होनी चाहिए (एक अंग्रेजी कहावत)। एक भक्त के रूप में हम जो कुछ भी करते है, उससे श्रीचैतन्य महाप्रभु का आन्दोलन प्रभावित होता है। अत: हमें बड़ी सावधानी के साथ इस मूर्खता से बचना चाहिए।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 154)

290. श्रील प्रभुपाद बताते हैं कि चौदह किलोमीटर गोवर्धन की पूरी परिक्रमा जो कि कोमल पैरों वाले विदेशियों के लिए कठिन है, उसे करने के स्थान पर उन्हें गोवर्धन के अर्चाविग्रहों की परिक्रमा कर लेनी चाहिए, जो कि कुसुम सरोवर और गोवर्धन नगर के मध्य में स्थित हैं। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 260)

291. "कृष्णभावनामृत का आध्यात्मिक स्तर ही एकमात्र ऐसा स्थान हैं, जहाँ हम एकत्रित हो सकते हैं। हम भगवान् की सेवा में केवल तभी एकत्रित हो सकते हैं, जब हम झूठी भौतिक पदवियों से मुक्त होंगे। यही वैकुण्ठ, वृन्दावन का वातावरण है। गोलोक वृन्दावन में पक्षियों, मधुमक्खियों, जल, वृक्ष, फूलों तथा गोप-बालकों, सबका केन्द्रबिन्दु श्रीकृष्ण हैं। यही वृन्दावन है।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 293)

292. "वृन्दावन में गोप बालक यह नहीं जानते कि श्रीकृष्ण पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् हैं। वे अपनी अन्तरात्मा से श्रीकृष्ण से प्रेम करते हैं। यही वृन्दावन है। यदि हम इस कृष्णभावनामृत स्तर पर आ जाएँ और सीख लें कि श्रीकृष्ण से प्रेम कैसे करें, तो सारा संसार वृन्दावन हो जाएगा।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 293)

293. "हमें समस्त पदवियों से मुक्त होना होगा। हमें इन सभी झूठी पहचानों को भूलना होगा। हमें यह नहीं सोचना चाहिए, "ओह! ये विदेशी हैं, ये यहाँ क्यों आए हैं? चलो इनसे लड़ाई मोल लेते है और इन्हें यहाँ से खदेड़ते हैं।'' अत: आध्यात्मिक शिक्षण के अभाव में बहुत-सी गलत बातें हो रही हैं। यह अच्छा नहीं है; कम से कम वृन्दावन के लिए यह अच्छा नहीं है। लोग वृन्दावन की भावना में पूरी तरह से शिक्षित नहीं हुए। इसलिए ऐसी बातें हो रही हैं।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 293-4)

294. जब इन्द्रियाँ भगवान् की सेवा में जुड़कर पदवियों से मुक्त हो जाएँ-यही वृन्दावन जीवन है। यही वृन्दावन वातावरण है। यदि इसके अतिरिक्त कोई और लक्ष्य है, तो वृन्दावन में रहने के सुअवसर और सौभाग्य का लाभ ले पाना कठिन है।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 294)

295. "विश्व के सभी कोनों से लोग वृन्दावन आएँगें, क्योंकि वे वृन्दावन और श्रीकृष्ण के विषय में सुन रहे हैं। स्वभावत: वे वहाँ जाने के लिए उत्सुक हैं, परन्तु यदि हम उनका भली-भाँति स्वागत नहीं करते, यदि हम साम्प्रदायिक बने रहते हैं, तो यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा। अत: कृपया मेरी प्रार्थना सुनो। जो वृन्दावनवासी हैं उन्हें उन विदेशियों का स्वागत करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो कृष्णभावना की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनका अच्छी तरह आदर-सम्मान किया जाए। यही मेरी प्रार्थना है।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 295)

296. बाद में दोपहर के पश्चात् (इमलीतला पर प्रीति भोज के बाद) श्रील प्रभुपाद कहते हैं कि हमारे मन्दिरों को इमलीतला के स्तर तक जाने की इच्छा करनी चाहिए। उन्होंने कहा, ''उनकी श्रद्धा दुर्लभ है।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 310)

297. ''अपने सौभाग्य से और पूर्वजन्म के पुण्यकर्मों से (14 नवम्बर, 1972 को ब्रजवासी राधा-रमण मन्दिर में श्रील प्रभुपाद के विदाई अभिनन्दन के लिए एकत्रित हुए) तुम्हें वृन्दावन का संग मिला। अब तुम्हें वृन्दावन के वास्तविक वातावरण का साक्षात्कार अवश्य करना चाहिए। जैसे श्रीकृष्ण नाम और श्रीकृष्ण अभिन्न हैं, उसी तरह उनकी लीलाएँ, उनके संगी-साथी, उनका पवित्र-धाम और उनका साज-सामान भी। वृन्दावन श्रीकृष्ण से अभिन्न है। जब वे अवतार लेते हैं, वृन्दावन भी उनके साथ अवतरित होता है।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 311)

298. ''वृन्दावन का भविष्य इस भूलोक पर अब बहुत उज्जवल है। श्रीमान् शर्मा (स्थानीय मैजिस्ट्रेट) हिन्दू जाति के पुनरुत्थान के लिए बोले और अब वे यूरोपीयन, अमरीकी लड़कियाँ और लड़के भी रुचि ले रहे हैं। अत: हमें यह बड़ी सावधानी से देखना चाहिए कि वृन्दावन का वातावरण श्रीरुप और श्रीसनातन गोस्वामी के द्वारा स्थापित मापदंडों के अनुसार बना रहे। कलि के प्रभाव को बढ़ाने वाले कार्य-अवैध सम्बन्ध, मांसाहार, नशा और जुआ वृन्दावन में वर्जित होने चाहिए। अपने कृष्णभावनामृत को सुरक्षित रखो और मैं हिन्दू हूँ, अमेरिकन हूँ, ब्राह्मण हूँ, ब्रह्मचारी हूँ, संन्यासी हूँ, आदि जो भी हो, इन विचारों से ऊपर उठो। वृन्दावन में एक ही पहचान होनी चाहिए कि मैं श्रीकृष्ण का दास हूँ। यदि आप ऐसी चेतना में रहते हैं तो सच्चा, पवित्र, नित्य वृंदावन जो कि आनंद तथा ज्ञान से परिपूर्ण है, आपका होगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 311-2)

299. मैंने कहा, "श्रील प्रभुपाद, यहाँ वृन्दावन में बहुत आनन्द है। पवित्र धाम में आपका संग प्राप्त करना बहुत सौभाग्य और वरदान है।"

उन्होंने कहा, "धन्यवाद! अब वृन्दावन वातावरण अपने साथ ले जाओ। वृन्दावन हमेशा भक्त के हृदय में होता है। इसको साथ ले जाओ।"

"मैं प्रयास करूँगा, परन्तु मैं बहुत जल्दी भूल जाता हूँ।"

"सदा 'हरे कृष्ण' मंत्र का जप करो। जहाँ भगवान् के नामों का जाप होता है, वहीं वृन्दावन है।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 315)

300. यमुना ने कहा, "ओह! ह्यग्रीव! मुझे तुम्हें कुछ बताना है। मैंने केवल गुरुदास को बताया है। मैं अभी भी नहीं जानती कि अपनी आँखों पर विश्वास करूँ या नहीं।"

"ऐसा क्या है?"

"अच्छा! तुम्हें हलधर बन्दरिया के बारे में याद है?

मैंने स्वीकार किया, "मुझे पूरी तरह से याद नहीं।"

यमुना ने कहा, ''यह वही जो भावुक, ढीलीढाली तथा बहाने बाज बंदरिया है। वह घड़ी के अनुसार प्रसाद के लिए आती है।''

मैंने दूर से कहा, "नहीं मुझे याद नहीं।"

''हर मंगलवार तथा बृहस्पतिवार को वह मेरे कमरे में प्रसाद लेने आती है। वही कमरा जिसमें अभी प्रभुपाद हैं। अत: वह इस प्रात: भी, हर बार की तरह, आई और खिड़की की सलाखों पर झूलने लगी और बन्दर की बोली में बडबड़ाने लगी। मैं दरवाजे के बाहर खड़ी थी और श्रील प्रभुपाद के लिए थोड़ा गर्म दूध ले जाने लगी थी। श्रील प्रभुपाद मुझे नहीं देख पा रहे थे किन्तु मैं उनको देख पा रही थी कि श्रील प्रभुपाद कमरे में गद्दी के सहारे, एक घुटना ऊपर करके तथा दूसरा घुटना बाहर की ओर करके बड़े आराम से बैठे थे।''

''...... जो मैं कह रही हूँ वह सच है, अत: मेरी सहायता करो। अचानक श्रील प्रभुपाद ने हलधर से शुद्ध बन्दरों की आवाज में बात करनी शुरू कर दी।''

''हाँ। यह उसकी भाषा थी। श्रील प्रभुपाद ने उसी स्वर, उसी भाषा अर्थात् उसी तरह से बात

की। अत: जब हलधर ने यह सुना उसने खिड़की की दोनों सलाखों को पकड़ लिया, और अपने कानों को खोलकर और हैरान होकर उनकी ओर घूरने लगी। तब सच, मैं कसम खाती हूँ, श्रील प्रभुपाद और हलधर के बीच चर्चा हुई।''

"चर्चा?"

उसने दोहराया, "हाँ चर्चा हुई" श्रील प्रभुपाद बन्दरिया से बातचीत करते हुए बहुत आराम से थे और बातचीत कुछ देर तक चलती रही। मैं चुपचाप खड़ी रही और हिलने से भी डर रही थी कि कहीं उनकी बातचीत में कोई व्यवधान न आ जाए। मुझे भगवान् चैतन्य महाप्रभु की याद आई जिन्होंने वन में जानवरों से बातचीत की थी। मैं जानती थी कि मैं कुछ अद्भुत चीज देख रही हूँ। मैंने अपने आपको सौभाग्यशाली माना। तब सबसे अनोखी बात हुई।''

''ओह?''

''कुछ देर बात करने के बाद हलधर वहाँ से चली गई। इससे पहले वह कभी प्रसाद लिए बिना नहीं गई। यह बिल्कुल उसके बन्दर वाले स्वभाव के विरुद्ध था।" मैंने कहा, ''श्रील प्रभुपाद, मुझे विश्वास नहीं हो रहा जो मैंने अभी देखा। क्या हो रहा था?'' और श्रील प्रभुपाद ने उत्तर दिया, 'मैंने उसे यहाँ से चले जाने के लिए कहा और कहा कि मुझे और तंग मत करो।'' (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 182)

301. ''यदि आप रात को रासलीला मैदान जाते हो तो कभी वापस नहीं आओगे, क्योंकि आप वहाँ श्रीकृष्ण को गोपियों के साथ नृत्य करते हुए देखोगे।'' श्रील प्रभुपाद ने इस स्थानीय धारणा के विषय में एक बार उत्तर दिया, "आप क्या सोचते हैं कि श्रीकृष्ण इतनी आसानी से देखे जा सकते हैं?" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 75)

302. यदि आप कृष्णभावनामृत में दृढ़ रहते हो तो आप परमानन्द का अनुभव करोगे; आध्यात्मिक सुख का। तब आप लोकोपकारी कार्य या लोकहितैषी कामों के प्रति आकर्षित नहीं होओगे। '*परमदृष्ट्वा निवर्तते*'। भगवान् की सेवा में बहुत आध्यात्मिक आनन्द है। जैसा कि गोस्वामियों के जीवन में हम देखते हैं कि ..... उन्होंने अपना मंत्री-पद त्याग दिया। ''*त्यक्त्वा*

तूर्णमशेष मंडलपति श्रेणीं सदा तुच्छवत्''। बहुत ही नगण्य। उन्होंने अपना मंत्री पद त्याग दिया और वे भिक्षुक बन गए। *'' त्यक्त्वा तूर्णमशेष मण्डलपति श्रेणीं सदा तुच्छवत् भूत्वा दीनं गणेशकौ, करुणया कौपीन कन्थाश्रितौ'*। वे बिल्कुल निर्धन और स्वेच्छा से भिक्षुक बन गए। यह बहुत कठिन है। यदि कोई बनावटी रूप से श्रील रूप गोस्वामी का अनुकरण करके अपनी वेशभूषा बदल ले, वह रह नहीं सकता। उसे अपने आपको भजन में बनाये रखने के लिए यौन आनन्द और नशे में लगाना पड़ेगा। नहीं। परंतु गोस्वामी कभी भी यौन सुख प्राप्त करने में अथवा नशे में नहीं लगे। वे गोपियों और श्रीकृष्ण की लीला रूपी सागर में डूबे हुए थे। *' गोपीभाव रसामृताब्धि लहरी'*। *लहरी*। श्रीकृष्ण और *गोपियों* के प्रेम सम्बन्ध रूपी सागर में बहाव है, लहरों का अनवरत बहाव है। अतः वे उसमें लीन हो जाते। इसलिए भौतिक-त्याग उन्हें किसी तरह भी प्रभावित नहीं करता। नहीं तो यदि कोई कृत्रिम रूप से इस भौतिक जगत् का परित्याग करता है तथा यदि उसे श्रीकृष्ण के चरण कमलों का वास्तविक आश्रय नहीं मिला तो उसका पतन हो जाएगा। यह सच है।'' (वृ. भ. र. सि. पर प्रवचन, 20 अक्तू०, 1972)

303. पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण पूरी तरह से *आनन्द चिन्मय उज्ज्वल रस विग्रह* हैं। उनका नित्य स्वरूप पूरी तरह से अपनी अन्तरंगा शक्ति, जो कि *ह्लादिनी शक्ति* कहलाती है, द्वारा आध्यात्मिक अस्तित्व, ज्ञान और आनन्द का प्रदर्शन करता है। श्रीमती राधारानी भगवान् की आनंदमय शक्ति की नियामक विग्रह हैं। श्रीकृष्ण की आनंदमय प्रकृति की शक्ति और श्रीकृष्ण में कोई अंतर नहीं, परन्तु वे एक-दूसरे से आनन्द प्राप्त करने के प्रयोजन से पृथक् प्रकट होते हैं। इसलिए राधा और कृष्ण एक ही दिव्य व्यक्तित्व के दो पूरक भाग हैं। श्रीमती राधारानी के बिना श्रीकृष्ण अधूरे हैं और श्रीकृष्ण के बिना श्रीमती राधारानी अधूरी हैं। अतः ये दोनों एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। ये दोनों एक हो जाते हैं श्रीचैतन्य महाप्रभु के रूप में जिससे वे इस आध्यात्मिक सत्य को पूर्ण कर सकें। (जीवन के परम लक्ष्य की खोज में, पृष्ठ 60)

304. श्रीमती राधारानी सभी गोपियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं और उनकी विशेष प्रेमामयी सेवा ही *माधुर्य-प्रेम* का सबसे बड़ा प्राकट्य है। इसलिए अच्छा यही है कि आध्यात्मिक क्षेत्र में नए साधक श्रीमती राधारानी की गोपनीय सेवा की घनिष्ठता को समझने का प्रयास न करें। यह आशा करते हुए कि एक विनम्र और प्रामाणिक भक्त भविष्य में श्रीमती राधारानी की सेवा को

समझ पाऐंगें, इन रहस्यमयी वार्तालापों को श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी जी ने 'श्रीचैतन्य चरितामृत' में वर्णित किया है। (जीवन के परम लक्ष्य की खोज में, पृष्ठ 62)

305. जो भक्त इतने भाग्यशाली हैं कि वे भगवान् के स्वाभाविक प्रेम, *रागानुगा भक्ति,* तक ऊपर उठ पाते हैं, और जिनका *माधुर्य प्रेम* के प्रति आकर्षण विकसित हो गया है वे श्रीमती राधारानी की अन्तरंगा सखियों तथा उनकी सहयोगियों, जो मन्जरियाँ कहलाती हैं, के चरणों का अनुसरण करते हैं। (जीवन के परम लक्ष्य की खोज में, पृष्ठ 62-3)

306. वह भाव जो श्रीमती राधारानी ने श्रीकृष्ण के विरह में विलाप करते हुए ब्रज में उद्धव से मिलने पर अनुभव किया था, उसी का साकार रूप श्रीचैतन्य महाप्रभु हैं। किसी को भी श्रीचैतन्य महाप्रभु के आध्यात्मिक भावों की नकल नहीं करनी चाहिए, क्योंकि किसी जीवात्मा के लिए उस स्तर पर पहुँचना असम्भव है। किन्तु उन्नत चेतना के स्तर पर जीव उनके चरणचिह्नों का केवल अनुसरण कर सकता है। यह कुछ संकेत हैं जो श्रील रूप गोस्वामी की परम्परा में अनुभवी और आत्मज्ञानी भक्तों द्वारा दिए गए हैं। (जीवन के परम लक्ष्य की खोज में, पृष्ठ 63)

307. वृन्दावन में रहने का अर्थ है श्रीकृष्ण को जानना — वे कैसे प्रकट हुए, वे यहाँ कैसे खेले, उन्होंने यहाँ कैसे अपनी लीलाएँ सम्पन्न की। '*जन्म कर्म च मे दिव्यम्*'। ये सब दिव्य और आध्यात्मिक हैं, *जय राधा माधव कुन्जबिहारी*। अत: जो वृन्दावन में रह रहे हैं, उन्हें श्रीकृष्ण को *तत्त्व* से जानने का प्रयास करना चाहिए। यही उनका कर्त्तव्य है। यह नहीं कि वृन्दावन का लाभ लो और कुछ *अन्याभिलाषा, ज्ञान, कर्म;* नहीं। इसका अर्थ है हम व्यर्थ समय गँवा रहे हैं। आपको अवसर मिलेगा, क्योंकि आप वृन्दावन आए हो। वृन्दावन बहुत प्रभावशाली है। किन्तु यदि हम अपराध करते हैं और पाप पूर्ण कार्य करते हैं तो इसमें (भगवान् को तत्त्व से जानने में) विलम्ब हो जाएगा। (भ. र. सि. पर प्रवचन, 30 अक्तू०, 1972)

308. पाँच हजार वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण ने यहाँ (सेवा-कुन्ज में) नृत्य किया। इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण नहीं है कि श्रीकृष्ण यहाँ हर रात रासनृत्य करते हैं। वह नृत्य (रासलीला) आध्यात्मिक जगत् में नित्य चल रहा है, परन्तु यहाँ नहीं। यह कहानियाँ साधारण लोगों और सहजियों द्वारा गढ़ी गई हैं। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 157)

309. राधा और कृष्ण पूर्ण सत्य हैं, वही *पुरुष* हैं और *प्रकृति* भी हैं। परन्तु राधारानी सेवा करने वाली हैं। राधारानी सेवा करने में इतनी कुशल हैं कि वे सेवा से श्रीकृष्ण को आकर्षित कर लेती हैं। यही राधारानी का स्थिति है। श्रीकृष्ण मदनमोहन कहलाते हैं। यहाँ वृन्दावन में मदनमोहन हैं और राधारानी मदन-मोहन-मोहिनी कहलाती हैं। हम कामदेव द्वारा आकर्षित हो जाते हैं, श्रीकृष्ण इतने सुन्दर हैं कि वे कामदेव को भी आकर्षित कर लेते हैं। इसलिए उनका नाम मदनमोहन है। और राधारानी इतनी महान् है कि वे श्रीकृष्ण को भी आकर्षित कर सकती हैं। इसलिए भक्त उन्हें मदन-मोहन-मोहिनी कहते हैं। वे कामदेव को आकर्षित करने वाले को भी आकर्षित कर लेती हैं। प्रेमामयी सेवा करने का अर्थ है राधारानी के चरणचिह्नों का अनुसरण करना। (वृ. में भ. सि. प्रवचन, 11 नव०, 1972)

310. श्रील रुप गोस्वामी ने कहा है कि भक्तिमयी सेवा श्रीकृष्ण को भी आकर्षित कर लेती है। श्रीकृष्ण सभी को आकर्षित करते हैं, किन्तु भक्ति श्रीकृष्ण को आकर्षित करती है। श्रीमती राधारानी भक्ति के सर्वोच्च स्तर की प्रतीक हैं। श्रीकृष्ण को मदनमोहन कहा जाता है जिसका अर्थ है कि वे कोटि कामदेवों के आकर्षण को पराजित कर सकते हैं, परंतु श्रीमती राधारानी और भी अधिक आकर्षक हैं, क्योंकि वे स्वयं श्रीकृष्ण को भी आकर्षित कर लेती हैं। इसलिए भक्त उन्हें मदन-मोहन-मोहिनी के नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है, कामदेव को आकर्षित करने वाले को आकर्षित करने वाली। भक्ति का अर्थ है श्रीमती राधारानी के चरणचिह्नों का अनुसरण करना। (भ. र. सि. पर प्रवचन, 11 नव., 1972, वृ.)

311. ''क्या आप (राधा-कुण्ड) जा रहे हैं?'' मैंने अच्युतानन्द से पूछा। ''नहीं'', उसने कहा। "श्रील प्रभुपाद ने हमें बताया है कि हमें कुण्ड में स्नान न करके उसकी पवित्रता का आदर करना चाहिए।" (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 238)

312. श्रीकृष्ण या आध्यात्मिक गुरु के स्वप्न कोई साधारण नहीं होते। यदि हमारे आध्यात्मिक गुरु स्वप्न में आदेश देते हैं तो हमें उसका पालन करना चाहिए। (वृन्दावन डेज़, पृष्ठ 318)

313. तमाल एक वृक्ष का नाम है जो वृन्दावन में पैदा होता है, इसका वही रंग है जो श्रीकृष्ण का है, इसलिए गोपियाँ कभी-कभी विरह में वृक्ष को श्रीकृष्ण समझ लेती थी। विशेष रूप से श्रीमती

राधारानी जब श्रीकृष्ण से विरह अनुभव करती हैं तो वे *तमाल* वृक्ष को श्रीकृष्ण जानकर उसका आलिंगन करती हैं, और उसकी छाया में विश्राम करती हैं। (सर्वेन्ट ऑफ द सर्वेन्ट, पृष्ठ 30)

314. मन्दिर लौट कर हमने अपने वृन्दावन के अतिथि को बुलाया। गोपाल दासी ने अपने आस-पास भक्तों को एकत्र करके मृदंग बजाकर कीर्तन का नेतृत्व किया। तब हमें विस्मित करती हुई वह अचानक अपनी पीठ के बल गिर पड़ी और फर्श पर चारों ओर लोटने लगी और भाव में विलाप करने लगी। हमने श्रील प्रभुपाद को ऐसा करते कभी नहीं देखा था। चूँकि हम सभी नए भक्त थे, हमने अपने आश्चर्य को छिपाया, क्योंकि हम उस घटना के विषय में आश्वस्त नहीं थे। शीघ्र उसके बाद वे वहाँ से चली गई, और एक भक्त ने श्रील प्रभुपाद को पत्र द्वारा सब कुछ वर्णन किया कि क्या हुआ था।

श्रील प्रभुपाद के उत्तर ने हमारे मन के संशय को दूर कर दिया, उन्होंने समझाया कि हमें ऐसे प्रदर्शनों को गलत नहीं समझना चाहिए। उन्होंने समझाया कि वृन्दावन में एक नकली भक्तों की श्रेणी है, जो सहजिया कहलाती है; जो इस प्रकार भाव का प्रदर्शन करते हैं। परन्तु उनकी भक्ति की प्रक्रिया प्रामाणिक शास्त्रों के निर्देशनों का पालन नहीं करती और इसलिए वे प्रामाणिक भक्तों द्वारा स्वीकृत नहीं किए जाते।

अपने अल्पकालीन निवास में वृन्दावन उसने स्त्रियों को गोल दायरे में नृत्य करना सिखाया जो गोपियों का श्रीकृष्ण के साथ रासलीला का स्मरण था। उनके जाने के बाद बहुत दिनों तक सभी भक्तिनियाँ मन्दिर के पिछले आँगन में उसी तरह का नृत्य करती रही, न कि जैसा श्रील प्रभुपाद हमें करना सिखाया था। उस कृत्रिम नृत्य से उद्विग्न होने पर भी ब्रह्मचारी उस साधवी की आलोचना करने से डरते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि वे श्रील प्रभुपाद से बहुत घनिष्ठता से सम्बधित थीं। परन्तु जब श्रील प्रभुपाद का पत्र आया तो ऐसा नृत्य तुरन्त बन्द हो गया। हम इस सारी स्थिति से बहुत चिन्तित थे, परन्तु प्रभुपाद ने हमारे सारे संशय दूर कर दिए। और उसी समय हमने यह अनुभव किया कि जब हमारे आध्यात्मिक गुरु हमारे पास नहीं हैं तो माया में फँसने की हमारी संभावना कितनी अधिक है। (सर्वेन्ट ऑफ द सर्वेन्ट, पृष्ठ 93-5)

315. भगवान् जगन्नाथ और भगवान् श्रीकृष्ण के विषय में आपके प्रश्न के उत्तर में यह स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण और जगन्नाथ अभिन्न हैं। श्रीकृष्ण की बचपन की आयु 15 वर्ष तक है। वे वृन्दावन में रहते हैं। राधारानी उनकी बचपन की सखी हैं। परन्तु द्वारका में अपने पिता के पास लौटने के पश्चात् श्रीकृष्ण एक सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र आए। उस समय उनकी बहिन सुभद्रा और भाई बलराम भी रथ में उनके साथ आए, और यह घटना जगन्नाथ-रथयात्रा के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाई जाती है। निष्कर्ष यह है कि जगन्नाथ और श्रीकृष्ण एक ही हैं।

316. अत: श्रीकृष्ण जब अपने भाई तथा बहिन के साथ हैं तो वे जगन्नाथ हैं और जब वे अपनी गाँव की सखियों, अर्थात् गोपियों के साथ हैं तो वे राधा-कृष्ण हैं। इसलिए आप जिस किसी की भी पूजा करो, एक ही बात है। लेकिन यदि आप जगन्नाथ जी की पूजा करते हो, तो आप उसी को जारी रख सकते हो और यह ऐसा ही है जैसे राधा-कृष्ण की पूजा करना। श्रीकृष्ण के बहुत स्वरूप हैं और आप किसी भी स्वरूप की पूजा करें यह सब समान है। परन्तु आपको उसी रूप की पूजा करनी चाहिए, जो आपको सबसे अधिक प्रिय हो। (सर्वेन्ट ऑफ द सर्वेन्ट, पृष्ठ 334)

317. भगवान् चैतन्य स्वयं जगन्नाथजी की आराधना करते थे। परन्तु वास्तव में वे अर्चाविग्रह को श्यामसुन्दर के रूप में देखते थे; श्रीकृष्ण अपनी दो भुजाओं से बाँसुरी बजा रहे हैं। श्रीचैतन्य-चरितामृत के तात्पर्य में (*अन्त्य लीला* 14.37) में श्रील प्रभुपाद ने जगन्नाथ के अर्चाविग्रह के दर्शन करने के भगवान् चैतन्य के भाव का वर्णन किया है:

"सबसे पहले भगवान् चैतन्य ने अनुभव किया कि वे वृन्दावन ले जाए गए हैं, जहाँ उन्होंने श्रीकृष्ण और गोपियों के रास नृत्य को देखा। बाद में वे कुरूक्षेत्र ले जाए गए जहाँ उन्होंने भगवान् जगन्नाथ, उनकी बहिन (सुभद्रा) और बलराम जी के दर्शन किए। श्रीचैतन्य महाप्रभु वृन्दावन और श्रीकृष्ण को, जो वृन्दावन के स्वामी हैं, खो बैठे। इस समय, श्रीचैतन्य महाप्रभु ने श्रीकृष्ण के विरह में दिव्य-उन्माद का अनुभव किया। कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण ने अपने ऐश्वर्य का प्रदर्शन किया, जबकि वृन्दावन में वे अपनी वास्तविक स्थिति में हैं। श्रीकृष्ण वृन्दावन से कभी एक कदम भी बाहर नहीं जाते। इसलिए गोपियों की दृष्टि में कुरूक्षेत्र वृन्दावन से कम महत्त्वपूर्ण है।"

"वे भक्त, जो श्रीकृष्ण की ऐश्वर्य भाव (उनके वैकुण्ठ पक्ष) में पूजा करते हैं, श्रीकृष्ण को कुरूक्षेत्र में सुभद्रा और बलराम के साथ देखना पसन्द करते है, गोपियाँ श्रीकृष्ण को वृन्दावन में राधारानी के साथ रास-नृत्य करते हुए देखना चाहती हैं। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने स्वयं अपने उदाहरण के द्वारा यह दिखाया कि कैसे कोई श्रीकृष्ण के विरह में राधारानी और गोपियों के भाव को विकसित कर सकता है। जो भक्त इस मन:स्थिति में रहते हैं, वे श्रीकृष्ण को वृन्दावन के अतिरिक्त और कहीं देखना पसन्द नहीं करते। इसलिए श्रीचैतन्य महाप्रभु विलाप करते हैं, 'मैंने श्रीकृष्ण को वृन्दावन में पाया और अब पुन: मैंने उन्हें खो दिया है और अब मैं कुरुक्षेत्र आया हूँ।" जब तक कोई बहुत उन्नत भक्त नहीं है तब तक वह इन अन्तरंग भावों को नहीं समझ सकता।" (सर्वेन्ट ऑफ द सर्वेन्ट, पृष्ठ 336-7)

318. श्रील प्रभुपाद चाहते थे कि कृष्णभावनामृत सारे भारत में फैले। विशेष रूप से वृन्दावन और मायापुर योजना को विकसित करने का उनका लक्ष्य केवल भारतीयों के लिए नहीं था, अपितु सारे विश्व के भक्तों के लिए था। (सर्वेन्ट ऑफ द सर्वेन्ट, पृष्ठ 144)

319. जैसा कि संघ के नेता व्यापार पर बल देते हैं, तुम्हें समझना चाहिए कि व्यापार का क्या अर्थ है? व्यापार का अर्थ है प्रचार में सहयोग। प्रचार के लिए आर्थिक सहायता चाहिए, नहीं तो हमें व्यापार की कोई आवश्यकता नहीं। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि हमारा पुस्तकों का कार्य हमारे आन्दोलन को संभालने के लिए पर्याप्त है। मैं प्रबन्ध की कीमत पर प्रचार नहीं चाहता। प्रबन्धकों को प्रचारक भी होना चाहिए, नहीं तो कौन उनका अनुसरण करेगा? (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 13 अग०, 1974)

320. लोगों को चाहिए कि वे पृथ्वी के धामों में तथा वैकुण्ठ के धामों में यह सोचकर भेद न करें कि जो धरा पर हैं वे भौतिक हैं और जो आध्यात्मिक आकाश में है वे दिव्य हैं। वस्तुत: वे सभी आध्यात्मिक हैं। क्योंकि हम वर्तमान बद्धावस्था में जड़ पदार्थ से परे कुछ अनुभव ही नहीं कर सकते। इसलिए केवल हमारे लिए, *धाम* तथा स्वयं भगवान् अपने अर्चाविग्रह रूप में एक पदार्थ की भाँति प्रकट होते हैं ताकि हम अपनी भौतिक दृष्टि से आध्यात्मिक वस्तु को देख पाएँ। प्रारम्भ में नवदीक्षित भक्त के लिए यह समझ सकना कठिन है, किन्तु ज्यों-ज्यों वह भक्ति में अग्रसर होता जाएगा उसे इन भौतिक रूपों में भगवान् की उपस्थिति दिखेगी। (चै.च. आ.ली. 5.19 ता.)

321. वास्तव में वृन्दावन जाने का अर्थ है भक्तिरसामृत सिन्धु, विदग्ध माधव, ललित माधव तथा षड्गोस्वामियों द्वारा लिखित अन्य पुस्तकों को पढ़कर इन गोस्वामियों की शरण ग्रहण करना। इस तरह से राधाकृष्ण के दिव्य प्रेम भाव को समझा जा सकता है। (चै.च. आ.ली. 8.31 ता०)

322. श्रीवृन्दावन धाम श्रीकृष्ण से अभिन्न है। '*तद्धाम वृन्दावनम्*' क्योंकि भगवान् वृन्दावन में अपनी अन्तरंग शक्ति का दिव्य आनन्द लेते हैं। (श्री. भा. 3.1.2 ता.)

323. "आम लोगों को वृन्दावन एक साधारण गाँव जैसा लगता है, परन्तु उन्नत भक्तों को वह आध्यात्मिक जगत् के आदि वृन्दावन जैसा लगता है।" (भ.चै.म.शि. 31 अध्यााय)

324. आँखों में प्रेम का अंजन लगाकर ही कोई वृन्दावन की सही पहचान इस रूप में कर सकता है कि यह वही स्थान है, जहाँ भगवान् कृष्ण ने गोप-बालकों और गोपियों के साथ अपनी लीलाएँ सम्पन्न की। (चै.च. आ.ली. 5.21 ता.)

325. श्रीचैतन्य महाप्रभु ने हमें उपदेश दिया है कि जिस प्रकार श्रीकृष्ण पूजनीय हैं उसी प्रकार उनका धाम वृन्दावन भी पूजनीय है। उसी तरह वृन्दावन की सारी वस्तुएँ, वृक्ष, मार्ग, नदी इत्यादि भी पूजनीय हैं। अत: शुद्ध भक्त गाता है - *जय जय वृन्दावनवासी यतजन* - अर्थात सभी वृन्दावन वासियों की जय हो। यदि किसी भक्त में तीव्र भक्तिरूपी प्रवृत्ति होती है तो ये सारे निष्कर्ष उसके अन्त:करण में जागृत होते हैं। (चै.च.म.ली. 12.38 ता.)

326. श्रील प्रभुपाद : जहाँ तक गुरुकुल का प्रश्न है उसके लिए भी मैंने कार्यक्रम दे दिया है। उन्होंने लड़कियों के नाम दिए हैं। हम यह नहीं करेंगे।

तमालकृष्ण : वह क्या?

श्रील प्रभुपाद : लड़के और लड़कियाँ, यह बहुत खतरनाक है।

तमालकृष्ण : गुरुकुल।

श्रील प्रभुपाद : उस लेख में।

तमालकृष्ण : ओह! ओह, ओह।

श्रील प्रभुपाद : प्रारम्भ से लड़कियों को अलग रखा जाए। वे बहुत खतरनाक हैं।

तमालकृष्ण : अतः हम ..... मैंने सोचा ये लड़कियाँ अब वृन्दावन में हैं। उन्होंने कहा कि वे लड़कों के गुरुकुल के पीछे लड़कियों का गुरुकुल बना लेंगे। गोपाल इस विषय में बात कर रहा था।

श्रील प्रभुपाद : नहीं, नहीं, नहीं लड़कियाँ नहीं।

तमालकृष्ण : यह किसी दूसरे शहर या कहीं और हो सकता है ....

प्रभुपाद : हाँ, उन्हें सिखाया जाना चाहिए कि झाड़ू कैसे लगानी है, सिलाई कैसे करनी है।

तमालकृष्ण : सफाई करना।

श्रील प्रभुपाद : सफाई, रसोई पकाना और अपने पति के प्रति निष्ठा।

तमालकृष्ण : उनके लिए बड़ा विद्यालय नहीं चाहिए।

श्रील प्रभुपाद : यह भूल होगी। उन्हें सिखाया जाना चाहिए कि पति के प्रति निष्ठावान कैसे बने।

तमालकृष्ण : हाँ, ये बातें वे विद्यालय में नहीं सीखेंगी।

श्रील प्रभुपाद : थोड़ी–सी शिक्षा से वे सीख सकती हैं ....

तमालकृष्ण : हाँ, ये बातें वे घर पर भी सीख सकती हैं।

श्रील प्रभुपाद : उन्हें इस वेश्यावृत्ति को रोकना चाहिए। अमेरिका तथा यूरोप में ये बहुत गलत बात है। लड़के और लड़कियों को एक साथ पढ़ाया जाता है। सहशिक्षा में वे अपने जीवन के प्रारम्भ से ही वेश्या बन जाती हैं और लोग इसे बढ़ावा देते हैं।

327. व्रज में भूमि बहुत वनों या जंगलों में बँटी हुई है। कुल 12 वन हैं, और उनका विस्तार

लगभग चौरासी (84) *कोस* में है। इन सबों में सबसे विशेष वन वृन्दावन वर्तमान नगर पालिका के शहर वृन्दावन से नन्दग्राम नामक गाँव तक बसा है। इसकी दूरी 16 *कोस* (32 मील) है। (चै. च.म.ली. 21.29 ता.)

328. अक्रूरजी की वृन्दावन-यात्रा आदर्श है। वृन्दावन यात्रा का विचार रखने वाले को अक्रूर जी के आदर्श चरणचिह्नों का अनुसरण करना चाहिए एवं सदैव श्रीकृष्ण की गतिविधियों एवं लीलाओं का चिन्तन करना चाहिए। जैसे कोई वृन्दावन की सीमा पर पहुँचता है, उसे अपने भौतिक पद या प्रतिष्ठा का विचार किए बिना तत्काल वृन्दावन की पावन रज का अपनी देह पर आलेप करना चाहिए। नरोत्तम दास ठाकुर ने अपने सुप्रसिद्ध भजन में गाया है - "*विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन*।" इसका अर्थ है - "इन्द्रिय सुख के दूषण को त्याग देने के पश्चात् जब मेरा मन शुद्ध हो जाएगा तब मैं वृन्दावन की यात्रा करने में सफल होऊँगा।" वास्तव में कोई केवल टिकट खरीद करके वृन्दावन नहीं जा सकता। अक्रूर जी ने वृन्दावन जाने की प्रक्रिया को दर्शाया है। (श्रीकृष्ण (पुस्तक), अक्रूर जी का वृ. में आगमन)

329. केवल यमुना में स्नान करने से कोई भी अपने पापपूर्ण कार्यों की प्रतिक्रिया को कम कर सकता है। (श्रीकृष्ण-39 (पुस्तक), अक्रूर जी की वृन्दावन से वापसी और यमुना जल में विष्णु लोक का दर्शन)

330. भारत में बहुत सी पवित्र नदियाँ हैं जैसे गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी और कृष्णा। केवल इन नदियों में स्नान करने से लोग मुक्त हो सकते हैं और कृष्णभावनाभावित हो सकते हैं। (चै.च.अ. ली. 4.98 ता.)

331. मनुष्य को तपस्या की प्रक्रिया का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। यदि सम्भव हो भक्त को गंगा या यमुना के जल में स्नान अवश्य करना चाहिए या गंगा या यमुना न मिले तो समुद्र के जल में स्नान करना चाहिए। यह तपस्या का एक साधन है। इसलिए हमारे कृष्णभावनामृत आन्दोलन ने दो महान् केन्द्र स्थापित किए हैं। जिसमें से एक वृन्दावन में और दूसरा नवद्वीप, मायापुर में। वहाँ सभी भक्त गंगा या यमुना में स्नान कर सकते हैं, हरे कृष्ण मंत्र का जप कर सकते हैं और सिद्ध भक्त बनकर अपने घर अर्थात् भगवान् के धाम लौट सकते हैं। (श्री.भा. 6.5.27-28 ता.)

332. कोई भी श्रीकृष्ण का संग तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि उसे व्रजभूमि के निवासियों की कृपा प्राप्त न हो जाए। इसलिए यदि कोई स्वयं श्रीकृष्ण के द्वारा मुक्ति प्राप्त करना चाहता है तो उसे अवश्य ही वृंदावनवासियों की सेवा करनी चाहिए जो कि भगवान् श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त हैं। (श्री. भा. 5.18.23 ता.)

333. ग्वालबाल श्रीकृष्ण के स्वरूप को न जानते हुए उनसे केवल प्रेम करते हैं और इस प्रेम का कोई ओर-छोर नहीं है। यही हाल वृन्दावन के हर एक प्राणी का है। उदाहरणार्थ, श्रीकृष्ण के माता-पिता, यशोदा तथा नन्द श्रीकृष्ण से वत्सल प्रेम करते हैं। इसी तरह श्रीकृष्ण के मित्र भी श्रीकृष्ण से प्रेम करते है और श्रीकृष्ण की सखियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती हैं। वृक्ष, जल, फल, गायें तथा बछड़ें ये सभी उनसे प्रेम करते हैं। यही वृन्दावन का स्वभाव है। इसलिए यदि हम श्रीकृष्ण से प्रेम करना ही सीख लें तो हम इस जगत् को तुरन्त ही वृन्दावन में बदल सकते हैं। (श्रीमती कु. म. शि. 13)

334. गोपियों ने सारे विश्व के लिए भक्ति का आदर्श स्थापित कर दिया है। जो सदा *गोपियों* के चरणों का अनुसरण करते हुए सदा श्रीकृष्ण का स्मरण करता है, वह आध्यात्मिक जीवन के उच्चतम स्तर पर पहुँच सकता है। (श्रीकृष्ण-47, श्रीकृष्ण का गोपियों को संदेश)

335. प्रश्न यह है चूँकि श्रीचैतन्य महाप्रभु गोपियों के नाम का जप करते थे, गोपियों या भगवान् के भक्तों की पूजा भगवान् की भक्ति के समान है। भगवान् ने स्वयं ही कहा है कि मेरे भक्तों की भक्ति करना मेरी प्रत्यक्ष भक्ति से श्रेष्ठ है। कभी-कभी सहजिया भक्त अन्य भक्त के कार्य-कलापों को छोड़कर केवल श्रीकृष्ण की व्यक्तिगत लीलाओं में ही रुचि रखते हैं। ऐसा भक्त उच्च-स्तरीय नहीं होता किन्तु जो व्यक्ति भक्त तथा भगवान् को समान स्तर पर देखता है वही भक्ति में आगे उन्नति कर सकता हैं। (श्री. भा. 4.23.31 ता.)

336. तुम्हारे दो प्रश्नों के विषय में, पहला श्रीगदाधर राधारानी का विस्तार हैं और श्रीवास नारद मुनि का विस्तार हैं, या दूसरे शब्दों में वे क्रमानुसार अंतरंगा शक्ति और भक्तिमयी शक्ति हैं। दूसरे प्रश्न के उत्तर में – हाँ श्रीरूप गोस्वामी – श्रीरूप मंजरी के नाम से एक गोपी हैं, परन्तु वृन्दावन के सभी छः गोस्वामी गोपियाँ नहीं हैं। कुछ मुख्य गोपियों की सूची निम्नलिखित है, पहली आठ सखियाँ अष्ठ सखियाँ कहलाती है :

1. ललिता
2. विशाखा
3. सुचित्रा
4. चम्पकलता
5. रंगदेवी
6. सुदेवी
7. तुंगविद्या
8. इन्दुरेखा
9. रूप मञ्जरी
10. रति मञ्जरी
11. लवंग मञ्जरी
12. रस मञ्जरी
13. मंजुमाली
14. कस्तूरिका

तुम अलग गोपियों के व्यक्तिगत नाम गा सकते हो, इसमें कोई हानि नहीं है। परन्तु जब हम यह प्रार्थना गाते है, "*श्री राधा कृष्णपादान् सहगणा ललिता श्रीविशाखान्वितांश्च*। इसमें सभी का नाम आ जाता है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 27 मई, 1970)

337. एक यूरोपियन प्रचार केन्द्र बनाओ और वृन्दावन में आने वाले सभी हिप्पी तथा यात्रियों के नाम लिखो। उन्हें बढ़िया प्रसाद दो, उन्हें जप करने, मन्दिर की सफाई, पुस्तकें पढ़ने में लगाओ और उन्हें भक्त बनने के लिए सभी सुविधाएँ प्रदान करो। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 11 अग०, 1972)

338. श्रील प्रभुपाद तमाल-वृक्ष के सामने मुस्कराते हुए खड़े थे, इसकी पूज्य टहनियाँ आँगन के

एक कोने में पूरी तरह से फैली हुई थी और उन्होंने वर्णन किया कि कैसे इसे काटने की चर्चा हुई थी और उन्होंने उसे रोका था। "तमाल वृक्ष श्रीमती राधारानी की लीलाओं से जुड़े हैं और वे बहुत दुर्लभ हैं। वृन्दावन में शायद केवल तीन हैं, एक यहाँ, एक सेवा कुञ्ज में और एक राधा-दामोंदर मन्दिर के प्रांगण में। यह *तमाल* वृक्ष प्रचुरता से फैल रहा था और इस बात का संकेत था कि भक्त विशुद्ध भक्ति कर रहे थे।" (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, 5 पृष्ठ 247)

339. 'ब्रह्म संहिता' में कहा गया है कि केवल वैदिक शास्त्रों का विद्वान् बनने से कभी भगवान् प्राप्त नहीं होते, अपितु वे अपने विशुद्ध भक्तों द्वारा सुलभ है। वृन्दावन में सभी शुद्ध भक्त श्रीमती राधारानी की कृपा प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, जो भगवान् कृष्ण की ह्लादिनी शक्ति हैं। श्रीमती राधारानी पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् की कोमलहृदया नारी रूप हैं; जो सम्पूर्ण सृष्टि के स्त्री स्वभाव की आदर्श स्वरूपा हैं। इसलिए श्रीमती राधारानी की कृपा निष्कपट भक्तों को शीघ्रता से सुलभ है और यदि वे एक बार श्रीकृष्ण से ऐसे भक्त की संस्तुति कर देती हैं तो श्रीकृष्ण तुरन्त उसे अपनी संगति में प्रवेश दे देते हैं। (श्री. भा. 2.3.33 ता.)

340. भक्ति की सर्वोच्च प्रतीक राधारानी इतनी शक्तिशाली हैं कि उन्होंने श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है। इसलिए वैष्णवजन श्रीमती राधारानी के चरणकमलों की शरण ग्रहण करते हैं, क्योंकि यदि वे कहती हैं कि यह उत्तम भक्त है तो श्रीकृष्ण को उसे स्वीकार करना ही पड़ता है। (कु. म. शि.-24)

341. गोपियों की स्थिति बड़ी असमंजस में डालने वाली है, क्योंकि यद्यपि वे निज सुख नहीं चाहती थीं तो भी यह सुख उन पर थोपा गया था। इस विकट स्थिति का हल यह है कि श्रीकृष्ण का सुख-भाव गोपियों के सुख-भाव द्वारा सीमित है। इसलिए वृन्दावन के भक्तगण *गोपियों* यथा राधारानी तथा उनकी संगिनियों की सेवा करना चाहते हैं। यदि किसी को गोपियों की कृपा प्राप्त हो जाती है, तो उसे सरलता से श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त हो जाती है, क्योंकि गोपियों के कहने पर श्रीकृष्ण किसी भक्त की सेवा तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं। इसलिए श्रीचैतन्य महाप्रभु ने श्रीकृष्ण की बजाय गोपियों को प्रसन्न करना चाहा। (चै. च. आ. ली. 4.189 ता.)

342. जब भी कोई गृहस्थ अपने घर पर भगवान् का कीर्तन करता है तो उसके सारे कार्यकलाप गोलोक वृन्दावन के कार्यों में परिणित हो जाते हैं। भौम-वृन्दावन में श्रीकृष्ण जो भी लीलाएँ प्रदर्शित करते हैं वे गोलोक वृन्दावन में सम्पन्न की जाने वाली उनकी लीलाओं से भिन्न नहीं होती। वृन्दावन की यही वास्तविक अनुभूति है। हमने अपने कृष्णभावनामृत आन्दोलन में 'नव वृन्दावन' में इन्हीं कार्यकलापों का सूत्रपात किया है, जहाँ भक्तगण सदैव श्रीकृष्ण की भक्ति में लगे रहते हैं, और यह गोलोक वृन्दावन से भिन्न नहीं है। (चै. च. म. ली. 7.69 ता.)

343. भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाएँ इतनी शक्तिशाली हैं कि केवल 'श्रीकृष्ण' पुस्तक के श्रवण, पठन तथा स्मरण द्वारा व्यक्ति का दिव्य लोक जाना निश्चित् है, जिसे साधारणतया प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। भगवान् कृष्ण की दिव्य लीलाओं का विवरण इतना आकर्षक है कि वह स्वयं हमें बारम्बार अध्ययन के लिए प्रेरित करता है और भगवान् की लीलाओं का हम जितना अधिक अध्ययन करते हैं उतने ही हम उनसे आसक्त होते जाते हैं। श्रीकृष्ण के प्रति यह आसक्ति ही हमें उनके गोलोक वृन्दावन धाम जाने की योग्यता प्रदान करती है। (श्रीकृष्ण, भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का संक्षिप्त विवरण)

344. भगवान् इसलिए रासलीला करते हैं जिससे पतितात्मायें अपनी रुग्ण नैतिकता तथा धार्मिकता का परित्याग करने के लिए प्रेरित हों और वास्तविक आनन्द भोगने के लिए भगवद्धाम के प्रति आकर्षित हों। जो व्यक्ति सचमुच जानता है कि रासलीला क्या है, वह निश्चित् रूप से सांसारिक वासनापूर्ण जीवन में आसक्त होने से घृणा करेगा। सिद्धावस्था में जीवात्मा प्रामाणिक परंपरा द्वारा भगवान् की रास लीलाओं का वर्णन सुनने से, हमेशा भौतिक यौन सुख में संयम रखेगा। (चै. च. आ.ली. 4.30 ता.)

345. गोलोक वृन्दावन में *परकीया-रस* के नाम से प्रेम विनिमय होता है। यह उस प्रकार है जैसे कि एक विवाहिता स्त्री का अपने पति को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति से आकर्षण। भौतिक जगत् में इस प्रकार का सम्बन्ध अत्यन्त घृणित माना जाता है, क्योंकि यह आध्यात्मिक जगत् के *परकीया-रस* का विकृत प्रतिबिम्ब है, जहाँ इसे सर्वोच्च प्रेम-सम्बन्ध माना जाता है। भक्त और भगवान् के बीच ऐसी भावनाएँ योगमाया के प्रभाव से पैदा की जाती है। भगवद्गीता (9.13)

बतलाती है कि सर्वोच्च भक्त *दैवमाया* या *योगमाया* के संरक्षण में रहते हैं। "*महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः*", जो वास्तव में महात्मा हैं वे सदैव भगवान् की सेवा में लगे रहकर कृष्णभावनामृत में पूर्णतः निमग्न रहते हैं। वे दैवी-प्रकृति या योगमाया के संरक्षण में रहते हैं। योगमाया ऐसी स्थिति ला देती है कि जिसमें भक्त श्रीकृष्ण से प्रेम करने के लिए सारे विधि-विधानों का अतिक्रमण करने को तैयार हो जाता है। भक्त स्वभावतः भगवान् के प्रति श्रद्धा के कारण नियमों का उल्लंघन करना नहीं चाहता, किन्तु योगमाया के प्रभाव से वह भगवान् को अच्छे ढंग से प्रेम करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। (चै. च. आ.ली. 4.30 ता.)

346. कोई यह प्रश्न कर सकता है कि यदि श्रीकृष्ण आत्माराम हैं तो वे गोपियों के साथ ऐसी लीलाएँ क्यों करते हैं, जो विश्व के कृत्रिम आदर्शवादियों को विक्षुब्ध बनाती हैं? उत्तर यही है कि ऐसे कार्यों से पतित बद्धजीवों पर विशिष्ट कृपा-प्रदर्शन होता है। गोपियाँ उनकी अन्तरंगा शक्ति की विस्तार हैं, किन्तु चूँकि श्रीकृष्ण रासलीला करना चाहते थे, अतः गोपियाँ भी सामान्य प्राणियों के तुल्य प्रकट हुईं। भौतिक जगत् में सर्वोच्च आनन्द का प्राकट्य स्त्री तथा पुरुष के मध्य कामासक्ति के रूप में होता है। पुरुष स्त्री द्वारा मोहित होने के लिए जीवित है और स्त्री पुरुष द्वारा मोहित होने के लिए जीवित है। यही भौतिक जीवन का मूल सिद्धान्त है। ज्यों-ज्यों ये आकर्षण संयुक्त होते जाते है, त्यों-त्यों लोग भौतिक जगत् में उलझते जाते हैं। श्रीकृष्ण ने उन पर विशेष कृपा प्रदर्शन के उद्देश्य से रासलीला नृत्य का प्रदर्शन किया। यह बद्धजीवों को आकृष्ट करने के लिए है। चूँकि वे काम-विद्या के प्रति अत्यधिक आकृष्ट रहते हैं, अतः वे श्रीकृष्ण के साथ वैसा ही जीवन भोग सकते हैं और इस तरह भौतिक अवस्था से मुक्त हो जाते हैं। (श्रीकृष्ण: रासलीला का विवरण 32)

347. श्रीकृष्ण तथा उनकी लीलाएँ, विशेषतया उनकी वृन्दावन की लीलाएँ तथा गोपियों के साथ व्यवहार, ये अत्यन्त गोपनीय हैं। यह साधारण जनता के सम्मुख चर्चा का विषय नहीं है, क्योंकि जिन्हें श्रीकृष्ण की लीलाओं की दिव्य प्रकृति की जानकारी नहीं है, वे सदैव यह सोचकर अपराध के भागी बनते हैं कि श्रीकृष्ण एक सामान्य मनुष्य हैं और गोपियाँ सामान्य युवतियाँ हैं। इसलिए श्रीचैतन्य महाप्रभु कभी भी श्रीकृष्ण तथा गोपियों के आचरण के विषय में सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं करते थे। अतएव कृष्णभावनामृत आंदोलन के भक्तों के लिए यह परामर्श है कि वे

श्रीकृष्ण की वृन्दावन लीलाओं की विवेचना जनता के समक्ष न करें। सामान्य जनता की कृष्णभावना को जागृत करने की सबसे प्रभावपूर्ण विधि संकीर्तन है।

348. श्रील सनातन गोस्वामी आदर्श गुरु हैं, क्योंकि वे मनुष्यों को भगवान् मदनमोहन के चरण कमलों की शरण दिलाते हैं। भले ही कोई भगवान् से अपने सम्बन्ध के विस्मृत होने से वृन्दावन क्षेत्र की पैदल यात्रा न कर सके, किन्तु श्रील सनातन गोस्वामी की कृपा से उसे वृन्दावन में ठहर कर समस्त आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है। श्रील गोविन्ददेव जी अर्जुन को भगवद्गीता की शिक्षा देकर शिक्षा-गुरु जैसा कार्य करते हैं। वे आदि उपदेशक हैं, क्योंकि वे हमें उपदेश देते हैं और अपनी सेवा करने का अवसर प्रदान करते हैं। दीक्षा गुरु श्रीमदनमोहन विग्रह के साकार स्वरूप होते हैं, जबकि शिक्षा-गुरु गोविन्द देव विग्रह के साकार प्रतिनिधि हैं। इन दोनों अर्चाविग्रहों की पूजा वृन्दावन में की जाती है। श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक साक्षात्कार के लिए परम आकर्षण हैं। (चै. च. आ.ली. 1.47 ता.)

349. जब तक हमारा मन भौतिक विचारों में मग्न रहेगा, हम वृन्दावन-धाम में कभी प्रवेश नहीं पा सकते। नरोत्तम दास ठाकुर कहते हैं:

विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन।
कबे हाम हेरबो श्रीवृन्दावन।।

''जब मेरा मन सांसारिक चिन्ताओं और इच्छाओं से मुक्त होने के कारण पूर्णतया विशुद्ध हो जाएगा तभी मैं वृन्दावन को और राधा और कृष्ण के माधुर्य प्रेम को समझ सकूँगा। तभी मेरा आध्यात्मिक जीवन सफल होगा। (*वैष्णव* आचार्यों के गीतों में-लालसामयी *प्रार्थना* का ता. पृष्ठ 71)

350. '*श्री गौड़-मण्डल-भूमि*' -अर्थात् पश्चिमी बंगाल। भगवान् चैतन्य महाप्रभु पश्चिमी बंगाल, नवद्वीप में प्रकट हुए और विशेषकर देश के उस भाग को उन्होंने संकीर्तन-आन्दोलन से भर दिया। देश का वह भाग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह वृन्दावन से अभिन्न है। यह वृन्दावन की तरह पूजनीय है। वृन्दावन-वास और नवद्वीप-वास दोनों एक ही बात है। नरोत्तम

दास ठाकुर कहते है —"*श्री गौर-मण्डल भूमि, जेबा जाने चिन्तामणि*" —चिन्तामणि अर्थात् आध्यात्मिक निवास। "*तार होय ब्रजभूमि वास*।" यदि कोई केवल इतना स्वीकार कर-लेता है कि नवद्वीप वृन्दावन से भिन्न नहीं, वह वास्तव में वृन्दावन में ही वास करता है। किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि वह बंगाल में या किसी अन्य भौतिक देश में रह रहा है। वे स्थान, जहाँ श्रीचैतन्य महाप्रभु ने अपनी लीलाएँ की हैं, उतने ही महान् हैं जितना कि वृन्दावन। (*वैष्णव आचार्यों* के गीतों में-गौर महिमा *के श्रवण* का ता. पृष्ठ 79)

351. श्रीचैतन्य महाप्रभु की भक्ति में अनुरक्ति होने से शीघ्र ही भावावेश की स्थिति प्राप्त होती है। जब वह नित्यानन्द के प्रति प्रेम उत्पन्न कर लेता है तो वह संसार की सारी अनुरक्ति से छूट जाता है और तब वह भगवान् की वृन्दावन लीलाओं को समझने का पात्र बन जाता है। उस स्थिति में वह षड्-गोस्वामियों के प्रति प्रेम उत्पन्न कर राधा-कृष्ण के माधुर्य-रस को समझ सकता है। ये विभिन्न अवस्थाएँ है जिनसे होकर शुद्ध भक्त श्रीचैतन्य महाप्रभु से अंतरंग संबंध रखते हुए राधा तथा कृष्ण के माधुर्य रस के विषय में प्रगति कर सकता है। (चै. च. आ.ली. 7.17 ता.)

352. केवल वृन्दावन में गोविन्दजी के अर्चाविग्रह के दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने आध्यात्मिक जीवन में बहुत प्रगति कर सकता है। (भ. र. सि. 9, पृष्ठ 86)

353. गोपियों ने भी वृन्दावन में शिवजी की पूजा की और आज भी गोपीश्वर रूप में शिवजी वहाँ रह रहे हैं। किन्तु गोपियों ने शिवजी से प्रार्थना की कि वे उन्हें आशीर्वाद दें जिससे श्रीकृष्ण उनके पति बन सकें। यदि किसी का उद्देश्य भगवद्धाम जाना है तो देवताओं की पूजा करने में कोई हानि नहीं है। (श्री. भा. 4.30.38)

354. बाह्य रूप से भगवान् कृष्ण के धाम वृन्दावन के निवासी सीधे-सादे गृहस्थ हैं, जो गायों को पालने, भोजन बनाने, बच्चों का पालन-पोषण करने तथा धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने जैसे सामान्य कामकाजों में लगे रहते हैं, किन्तु ये सारे कार्यकलाप भगवान् कृष्ण की प्रेमाभक्ति में सम्पन्न होते हैं। वृन्दावनवासी अपने सारे कार्यकलाप शुद्ध कृष्णभावनामृत में करते हैं और इसलिए वे मुक्त जीवन के सर्वोच्च पद पर स्थित रहते हैं। अन्यथा कृष्णभावनामृत से रहित ये ही कार्यकलाप भवबन्धन का कारण बन जाते हैं।

अतएव किसी को भी वृन्दावनवासियों के उच्चपद के बारे में किसी प्रकार की भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। यदि कोई कृष्णभावना के अभाव में बड़े उत्साह से भौतिक कार्य करता है, उसे स्वयं को बहुत अधिक धार्मिक नहीं मान लेना चाहिए। हम अपने परिवार तथा समाज पर रजोगुण से उत्पन्न आसक्ति केन्द्रित करके कृष्णभावनामृत के प्रगतिशील पथ से विपथ हो जाते हैं। इसके विपरीत यदि हम अपने परिवार को भगवान् की प्रेमाभक्ति में लगाते हैं तो अपने परिवार के पालन-पोषण के हमारे सारे प्रयास हमारे प्रगतिशील आध्यात्मिक कर्तव्यों का हिस्सा बन जाते हैं।

निष्कर्ष यह निकलता है कि वृन्दावनवासियों की अद्वितीय स्थिति का अध्ययन करके हम यह देख सकते हैं कि उनके जीवन का आवश्यक गुण शुद्ध कृष्णभावनामृत है जिसमें तनिक भी भौतिक इच्छा या मनोरथ के बिना प्रेमाभक्ति सम्पन्न की जाती है। भगवान् की ऐसी प्रेमाभक्ति से श्रीवृन्दावन धाम अर्थात् भगवद्धाम का वातावरण तुरन्त उत्पन्न हो जाता हैं। (श्री. भा. 10.14.36 ता.)

355. मथुरा के निवासियों का मुक्त रूप से संग मत करो। दूर रहकर उनका सम्मान करो, क्योंकि तुम भक्ति के भिन्न स्तर पर हो, तुम उनके स्वभाव और आदतों को नहीं अपना सकते। (चै. च. अ.ली., 13.37 ता.)

356. धाम में कलियुग का या किसी असुर का प्रभाव नहीं रहता। यदि कोई ऐसे धाम में आश्रय ग्रहण करता है तो भगवान् की पूजा सुगम हो जाती है और परिणामस्वरूप आध्यात्मिक उन्नति भी शीघ्र होती है। वास्तव में आज भी भारत में कोई व्यक्ति वृन्दावन तथा ऐसे ही अन्य स्थानों में जाकर तुरन्त ही आध्यात्मिक कर्मों का फल प्राप्त कर सकता है। (श्री. भा. 7.4.23 ता.)

357. भगवान् अपनी प्रेमरूपी सेवा उन सामान्य व्यक्तियों को प्रदान नहीं करते, जो भक्ति के विषय में निष्ठावान नहीं हैं। किन्तु ऐसे निष्ठारहित व्यक्ति भी यदि कार्तिक मास में विशेषतया मथुरा मण्डल में रहकर विधिपूर्वक भक्ति करते हैं, तो उन्हें बहुत आसानी से भगवान् की व्यक्तिगत सेवा प्राप्त होती है। (भ. र. सि. 12, प्रेमामयी आध्यात्मिक-सेवा के और पक्ष)

358. 'वराह पुराण' में मथुरा के आवासीय मकानों की प्रशंसा है। भगवान् वराह पृथ्वी के लोगों से कहते हैं, "जो व्यक्ति मथुरा के अतिरिक्त अन्य स्थानों के प्रति आकृष्ट होता है वह निश्चित रूप से माया द्वारा सम्मोहित हो जाएगा।" *ब्रह्माण्ड-पुराण* में भी कहा गया है कि तीनों लोकों के सारे तीर्थस्थानों की यात्रा करने के सारे फल मथुरा की पवित्र भूमि के स्पर्श मात्र से प्राप्त किए जा सकते हैं। अनेक शास्त्रों में कहा गया है कि मथुरा की भूमि के श्रवण, स्मरण, महिमा-गान, इच्छा, दर्शन या स्पर्श मात्र से मनुष्य की सारी इच्छाएँ पूरी हो सकती हैं। (भ. र. सि.-12 प्रेममयी आध्यात्मिक सेवा के और पक्ष)

359. यह कितनी आश्चर्यजनक बात है कि केवल एक दिन मथुरा में वास करने भर से व्यक्ति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के प्रति दिव्य प्रेम को प्राप्त कर लेता है। मथुरा की भूमि भगवान् के धाम वैकुण्ठ धाम से भी अधिक यशस्वी है। (भ.र. सि.-12 प्रेमामयी आध्यात्मिक सेवा के और पक्ष)

360. वस्तुत: यदि कोई वृन्दावन जाता है तो उसे तुरन्त ही श्रीकृष्ण, जिन्होंने वहाँ रहकर सुन्दर क्रीड़ाएँ की थीं, का विरह सताने लगता है। (भ. र. सि.-18 भाव प्रधान प्रेम के लक्षण)

361. नवद्वीप धाम, जगन्नाथ पुरी धाम और वृन्दावन धाम अभिन्न हैं। यदि कोई मथुरा-मण्डल भूमि पर इंद्रिय तृप्ति के लिए जाता है तो वह अपराध करता है और निन्दनीय है। वृन्दावन धाम में जो भी ऐसा करता है वह आगामी जीवन में कुत्ता, सुअर या बन्दर की योनि पाकर दण्डित किया जाता है। ऐसा शरीर पाकर अपराधी आगामी जीवन में मुक्त हो जाता है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं जो इन्द्रियतृप्ति का आनन्द भोगने के लिए वृन्दावन में वास करता है, ऐसा तथाकथित भक्त अवश्य ही निम्न योनि को प्राप्त होता है। (चै. च. म.ली. 22.132 ता.)

362. वृन्दावन ही केवल ऐसा स्थान है जहाँ ऐसे पापी मनुष्य कुत्तों, सुअरों और बन्दरों की योनि में जन्म लेकर अपना परिशोधन कर सकते हैं। वृन्दावन में कुत्ते, सुअर या बन्दर के रूप में रहने से भी जीव आगामी जन्म में दिव्य-स्तर पर उत्थान कर सकता है। (श्री. भा. 4.29.14 ता.)

363. कृष्णभावना का अनुशीलन वहीं सम्भव है जहाँ महान् भक्त एक साथ रहते हैं और भगवान् के गुणों का निरन्तर श्रवण तथा कीर्तन करते रहते हैं। वृंदावन जैसे पवित्र स्थान पर बहुत से भक्त

हैं जो निरंतर भगवान् के गुणों का श्रवण तथा कीर्तन करते रहते हैं। यदि ऐसे स्थान में शुद्ध भक्तों के मुख से निरन्तर अमृत की धारा रूपी कृष्ण कथा अनुभव करने का अवसर मिल जाए तो श्रीकृष्ण भावना का अनुशीलन अत्यंत सरल हो जाता है। (श्री. भा. 4.29.39-40 ता.)

364. नवम्बर 1971 में श्रील प्रभुपाद के भारत लौटने पर दिल्ली में एक 'हरे कृष्ण' पंडाल उत्सव मनाया गया। इसके तुरन्त बाद उन्होंने अपने शिष्यों के साथ वृन्दावन के लिए प्रथम यात्रा की। इसकी पूर्व संध्या पर अच्युतानन्द स्वामी, ब्रह्मानन्द स्वामी और गिरिराज ने श्रील प्रभुपाद के लिए मद्रास में एक प्रचार-कार्यक्रम का प्रबन्ध करने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएँ प्रस्तुत कीं। जब अच्युतानन्द ने श्रील प्रभुपाद को अपनी योजना की सूचना दी, तो श्रील प्रभुपाद ने पूछा, "ओह! तुम लोग हमारे साथ वृन्दावन नहीं जा रहे?"

अच्युतानन्द स्वामी ने उत्तर दिया, "इस्कॉन ही वृन्दावन है।" प्रभुपाद ने कहा, "हाँ! मेरे गुरु महाराज भी ऐसा सोचा करते थे।"

गिरिराज ने पूछा, " लेकिन आप हमें क्या करने के लिए कहते हैं? इनमें से कौन सी सेवा अच्छी है?"

प्रभुपाद ने उत्तर दिया, "मैं चाहता हूँ कि मद्रास में पंडाल कार्यक्रम रखा जाए। यह अधिक सुखद होगा।" (श्रील प्रभुपाद लीलामृत, भाग-5, पृष्ठ 57)

365. वृन्दावनवासी दिनभर कठिन परिश्रम करते थे और थककर रात में चैन की नींद सोते थे। फलतः उन्हें पूजा करने या आध्यात्मिक कार्यों के लिए प्रायः कम समय मिल पाता था, किन्तु वास्तव में वे सर्वोत्कृष्ठ आध्यात्मिक कार्यों में ही मग्न रहते थे। उनका हर कार्य आध्यात्मिक होता था, क्योंकि वह श्रीकृष्ण के लिए ही होता था। उनके कार्यों के केन्द्र बिन्दु श्रीकृष्ण थे, फलतः उनके सारे तथाकथित भौतिक कार्य आध्यात्मिक भक्ति से संतृप्त होते थे। भक्तियोग पद्धति का यही लाभ है। मनुष्य को चाहिए कि वह हर कार्य भगवान् के निमित्त करे और इस प्रकार उसके सम्पूर्ण कार्य श्रीकृष्ण के विचार से संतृप्त होंगे, जो आध्यात्मिक साक्षात्कार में समाधि का उच्चतम रूप है। (श्री. भा. 2.7.31 ता.)

366. वह वृंदावन में भगवान् का एक महान्तम मन्दिर होगा। आपको अवश्य एक अद्भुत चीज का निर्माण करना चाहिए। नहीं तो यह तुम अमरीकी भक्तों के लिए एक लज्जाजनक बात होगी। यह मन्दिर भारत में अमरीका के लिए प्रशंसनीय कार्य होगा। और प्रत्येक मन्दिर में अमेरीका से आने वाले खाद्य-अनुदान द्वारा प्रभूत भोजन बाँटा जाना चाहिए। यह वृन्दावन की परियोजना हमारे इस्कॉन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 13 मई, 1972)

367. प्रारम्भ से मैंने केवल यही कहा है कि मुझे वृन्दावन में श्रील गोविन्ददेव जी के मन्दिर जैसा एक मन्दिर चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं हुआ.... मैं नहीं समझता कि श्रीमान् सूरी की बनाई परियोजना हमारे लिए सम्भव होगी। वह बहुत विशाल है। केवल मैं श्रील गोविन्ददेव जी के जैसा एक मन्दिर चाहता हूँ - बस और कुछ नहीं। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 29 अग०, 1972)

368. भारत में आयात की गई पुस्तकों की धनराशि भारत में ही नियुक्त होनी चाहिए। ऐसा नहीं कि हम पुस्तकें बेचें और पैसा बाहर ले जाएँ। नहीं, पुस्तकों की बिक्री से जो पैसा आए, उसे बम्बई, मायापुर और वृन्दावन में खर्च किया जाना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 25 अप्रैल, 1972)

369. हम वृन्दावन में प्रसाद-वितरण का कार्यक्रम भी शुरू कर सकते हैं। चूँकि वहाँ के लिए बहुत से छात्र हैं, परन्तु हमें उन्हें कृष्णभावनामृत भी प्रदान करना चाहिए, यह बहुत विलक्षण कार्यक्रम होगा। जैसे ही साधारण जनता 'प्रसाद-वितरण' कार्यक्रम की सराहना करने लगेगी। हमें बम्बई और अहमदाबाद के मिल मालिकों से बहुत सारा कपड़ा भी मिल जाएगा। अत: कृपया शीघ्र अपनी सरकार से भारत और बंगलादेश के केन्द्रों में प्रसाद वितरण के लिए खाद्य-सामग्री लेनी शुरू करो। यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 25 अप्रैल, 1972)

370. यदि सम्भव हो तो तुम सभी आठ गोपियाँ 42 इंच लम्बाई की लो। हो सकता है यह आपके लिए बोझिल हो। वृन्दावन में एक अष्ट सखी मन्दिर है। तुम देख सकते हो उनको वहाँ कैसे संजोया गया है। श्रीकृष्ण काले हों, बलराम श्वेत और उनकी मुद्रा के लिए बी. टी. जी. के पीछे

के पृष्ठ को देखना अच्छा है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 25 अप्रैल, 1972)

371. लेकिन मूल वृन्दावन में स्वर्ग के राजा इन्द्र के कोप नाम की कोई संभावना नहीं है और मूसलाधार वर्षा से बाढ़ और जल से आप्लावित होने का भी खतरा नहीं है। वहाँ ऐसी कोई चीज नहीं। वहाँ हर वस्तु परमानन्दमय, आध्यात्मिक और नित्य है। (लगूना-बीच पर प्रवचन, 30 सित०, 1972)

372. भगवान् के बाल्यकाल की क्रीड़ास्थली वृन्दावन की भूमि में आज भी है और जो कोई भी इन स्थानों में जाता है वह वही दिव्य आनन्द पाता है, यद्यपि भगवान् हमारी अपूर्ण आँखों द्वारा दृष्टिगोचर नहीं होते। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भगवान् की इस भूमि को भगवान् से अभिन्न बतलाया है, अतएव भक्तों द्वारा यह पूजनीय है। इस उपदेश को श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुयायी, जो गौड़ीय वैष्णव कहलाते हैं, विशेषरूप से मानते है। चूँकि यह भूमि भगवान् से अभिन्न है, अतएव उद्धव और विदुर जैसे भक्तों ने 5000 वर्ष पूर्व इन स्थानों का भ्रमण किया जिससे वे भगवान् से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित कर सकें, जो अब अदृश्य हैं। आज भी भगवान् के हजारों भक्त वृन्दावन के इन पवित्र स्थानों में भ्रमण करते हैं और इस तरह वे भगवद्धाम जाने की तैयारी करते है। (श्री. भा. 3.2.27)

373. श्रील प्रभुपाद : जगन्नाथ पुरी में मैं समुद्र में स्नान किया करता था। उस समय मुझमें समुद्र में स्नान करने की शक्ति थी। उसके पश्चात् मुझे याद नहीं कभी मैंने समुद्र में स्नान किया हो।

बलिमर्दन : आप यमुना में स्नान करते थे।

श्रील प्रभुपाद : हाँ, जब मैं वृन्दावन में था, मैं नियमित रूप से करता था। (प्रात:कालीन सैर, 28 मई, 1975)

374. अतएव हम विश्व के समस्त वयोवृद्ध जनों को अपने कृष्णभावनामृत आन्दोलन वृन्दावन में आमंत्रित करते हैं कि वहाँ वे अपना सेवानिवृत्त जीवन आध्यात्मिक श्रीकृष्ण चेतना में उन्नति करने में व्यतीत करें। (श्री. भा. 7.5.5 ता.)

375. यह वृन्दावन बहुत महत्वपूर्ण और बहुमूल्य है। क्यों? क्योंकि आप वृन्दावन में जिस ओर जाएँ आपको कृष्ण-कथा श्रवण करने का सुअवसर मिलता है। यह सम्पूर्ण वृन्दाव्रन केवल कृष्णभावना के संवर्धन के लिए है। (श्री. भा. 1.2.32, प्रवचन, 11 नव०, 1972)

376. दुर्भाग्यवश हम यहाँ दूषित चेतना से ग्रस्त हो जाते हैं। इसलिए हम दण्डनीय होते हैं। वृन्दावन में हम कृष्ण-चेतना के अतिरिक्त दूसरी चेतना अपनाते हैं तो हम अपराधित होते हैं। दण्डनीय होना अर्थात् मनुष्य के अतिरिक्त दूसरा शरीर स्वीकार करके दण्डनीय होना, किन्तु फिर भी उसके पास अवसर रहता है, और उसकी सहायता होती है। क्योंकि वह वृन्दावन में है इसलिए उन्नति कर रहा है। यहाँ तक कि पशुयोनि में भी, सुअरों और कुत्तों की योनि में भी, वह प्रगति कर रहा है, क्योंकि वह वृन्दावन में है। इसलिए वृन्दावन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई भी कृष्णभावनामृत पाने का सुअवसर पा सकता है। (वृ. में श्री. भा. 1.2.32, प्रवचन, 11 नव०, 1972)

377. वृन्दावन धाम । धाम का अर्थ है, जहाँ श्रीकृष्ण निवास करते हों। वही धाम कहलाता है। वृन्दावन धाम (वृ. में श्री. भा. 1.2.32, प्रवचन, 11 नव०, 1972)

378. वृन्दावन दूषित नहीं है। वृन्दावन सदा हमारा सहयोग करता है। जो कोई भी वृन्दावन आता है तुरन्त उसकी सहायता होती है, चाहे एक नम्बर का अपराधी भी क्यों न हो। किन्तु यदि हम वृन्दावन में सदा अपराध करने की भावना से रहेंगे, तब प्रायश्चित करने के लिए हमें दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। तब वह ठीक होगा और वह बाद में प्रगति कर पाएगा। (वृ. में श्री. भा. 1.2.32, प्रवचन, 11 नव०, 1972)

379. *कर्मणा दैव नेत्रेण। कर्माणि निर्दहति....* यह शास्त्रों में कहा गया है कि भक्तों के कर्मफल कम हो जाते हैं। भक्तों के लिए इतनी सुविधा होती है। दूसरे स्थान पर कर्मफल कम होने का अर्थ है, यदि आप किसी अन्य स्थान पर कोई पापपूर्ण कार्य करते हो, तब तुम्हें शरीर धारण करना पड़ता है, और प्रगति धीरे-धीरे होगी। तब तुम्हें फिर मनुष्य शरीर प्राप्त होगा। तब यदि आप बुद्धिमान् हैं तो आप इस सुअवसर का लाभ उठा सकते हैं, परन्तु वृन्दावन में '*कर्माणि निर्दहति*'.

.... कल्पना करो आप पापी हैं, अपने अपराधपूर्ण कार्यों से आप सुअर और कुत्ता बन जाएँगे परंतु अगले जीवन में आप का उत्थान हो जाएगा। यह '*कर्माणि निर्दहति*' है। सकाम कर्मों का चक्र कम हो जाएगा। लेकिन तुम्हें स्वीकार करना होगा। तुम्हें स्वीकार करना होगा। लेकिन *निर्दहति*। परन्तु हम एक और जन्म कुत्तों और सुअरों का शरीर पाकर समय व्यर्थ क्यों करें? इसके लिए हमें बहुत सावधान होना होगा। चाहे यह *निर्दहति* है, यह कम हो गया है। हम यह कम सजा भी क्यों स्वीकार करें। (वृ. में श्री. भा. 1.2.32, प्रवचन, 11 नव०, 1972)

380. ब्रजवासियों की कृपादृष्टि के बिना श्रीकृष्ण का संग नहीं मिल सकता। अत: यदि कोई चाहता है कि श्रीकृष्ण उसे प्रत्यक्ष रूप से मोक्ष प्रदान करें तो उसे वृन्दावनवासियों की सेवा करनी चाहिए, क्योंकि वे भगवान् के विशुद्ध-भक्त हैं। (श्री. भा. 5.18.23 ता.)

381. '*अंघ्रिपद्मसुधा*' का अर्थ है श्रीकृष्ण से आत्मीय रूप से संग करना। कोई मनुष्य ऐसी पराकाष्ठा भगवान् से स्वभाविक-प्रेम करके ही प्राप्त कर सकता है। केवल विधि-विधानों से भगवान् की सेवा करने मात्र से कोई उनके गोलोक वृन्दावन में प्रवेश प्राप्त नहीं कर सकता। (चै. च. म.ली.8.226)

382. जब तक कोई गोपियों के चरणकमलों का अनुसरण नहीं करता तब तक वह नन्द महाराज के पुत्र श्रीकृष्ण के चरणकमलों की सेवा प्राप्त नहीं कर सकता। यदि कोई मनुष्य भगवान् के ऐश्वर्य के ज्ञान से अभिभूत रहता है, वह भगवान् के चरणकमलों को प्राप्त नहीं कर सकता, चाहे वह उनकी प्रेमामयी सेवा में ही क्यों न लगा हो। (चै. च. म.ली. 8.230 ता.)

383. कोई मनुष्य शास्त्रों और आध्यात्मिक गुरु के निर्देशों द्वारा भगवान् लक्ष्मी-नारायण की पूजा विधि-विधानों द्वारा अर्थात् 'वैधी-मार्ग' से कर सकता है, परन्तु पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् राधा-कृष्ण प्रत्यक्ष रूप से इस प्रक्रिया द्वारा नहीं पूजे जा सकते। राधा और कृष्ण और गोपियों का प्रेम सम्बन्ध भगवान् लक्ष्मी-नारायण के ऐश्वर्यों से रहित होता है। विधि-विधानों का पालन करते हुए 'वैधी-मार्ग' की प्रक्रिया भगवान् लक्ष्मी-नारायण की पूजा में प्रयुक्त होती है, जबकि स्वैच्छिक-सेवा की प्रक्रिया, गोपियों के आदर्श से प्राप्त की जा सकती है, जो वृन्दावन की निवासी हैं। यह मार्ग अधिक उन्नत है और यही प्रक्रिया है जिससे राधा और कृष्ण की पूजा होती

है। भगवान् की ऐश्वर्य-पूर्ण पूजा द्वारा यह उन्नत स्थिति प्राप्त नहीं की जा सकती। जो राधा और कृष्ण के माधुर्य-प्रेम से आकृष्ट हैं उन्हें गोपियों के चरणकमलों का अनुसरण करना चाहिए। केवल तभी आप गोलोक-वृन्दावन में भगवान् की सेवा में प्रवेश पा सकते हैं और राधा और कृष्ण से प्रत्यक्ष संसर्ग कर सकते हैं। (चै. च. म.ली. 8.230 ता.)

384. कोई साधारण व्यक्ति राधारानी और श्रीकृष्ण के दिव्य प्रेम के उल्लास को नहीं समझ सकता और न ही वह श्रीकृष्ण और गोपियों के मध्य आध्यात्मिक प्रेम के दिव्य-रस का आस्वादन कर सकता है, किन्तु यदि कोई गोपियों के चरणकमलों का अनुसरण करे तो शायद वह दिव्य-प्रेम के उन्नत-स्तर पर स्थित हो जाए। अत: जो कोई दिव्य-प्रेम की पराकाष्ठा पर पहुँचना चाहते हैं, उन्हें व्रज-गोपियों की एक सहायक-सेविका के रूप में उनके चरण-कमलों का अनुसरण करना चाहिए। (भ. चै. . शि. 30, श्री राधा और कृष्ण की आध्यात्मिक लीलाएँ)

385. तथ्य यह है कि श्रीचैतन्य महाप्रभु ने गोपियों के नामों का जप किया, गोपियों की पूजा करना या भगवान् के भक्तों की पूजा भगवान की प्रत्यक्ष भक्तिमय सेवा करने के ही समान है। (श्री. भा. 4.23.31 ता.)

386. जयाद्वैत : कल मैंने सुना कि कोई "निताई-गौर, निताई-गौर, निताई-निताई-गौर" का जप कर रहा था। इस तरह मैं विभिन्न मन्त्र सुनता हूँ। कोई "राधे, राधे, राधे, राधे" कीर्तन करते हए जप कर रहा था।

श्रील प्रभुपाद : देखिए, वह *आचार्यों* द्वारा नहीं किया गया। परन्तु "राधे" नाम का जप करने में कोई हानि नहीं। किन्तु कभी-कभी कुछ नई खोज करने में ह्रास हो जाता है। इसलिए अच्छा यही है कि हम 'हरे कृष्ण' और 'श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द' का ही जप करें। नहीं तो ... जैसे सहजियों ने "निताई गौर राधे श्याम हरे कृष्ण हरे राम" गढ़ लिया है। ये चीजे धीरे-धीरे आएँगी। परन्तु ये शास्त्रों द्वारा अनुमोदित नहीं हैं। यह 'छार-कीर्तन' अर्थात काल्पनिक-कीर्तन है परन्तु 'राधे, निताई-गौर' का कीर्तन करने में कोई हानि नहीं। इसलिए अच्छा यही होगा कि पंचतत्व और महामंत्र पर जोर दें। जैसे "निताई-गौर, राधे-श्याम, हरे कृष्ण हरे राम।" वे निताई-गौर राधे-श्याम कहते हैं, परन्तु यह अनुमोदित नहीं है। '*महाजनों येन गत: स पथां:*'। हमें *महाजनों*

का अनुसरण करना चाहिए। 'श्रीचैतन्य-चरितामृत' में आप पाएँगें, "श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द, श्री अद्वैत गदाधर..." वहाँ कभी भी "निताई गौर, राधे श्याम" नहीं मिलेगा। अत: हम ऐसा क्यों करें?

जयपताका : "निताई-गौर, राधे-श्याम" गढ़ने वाले पहले श्रील भक्तिसिद्धान्त ठाकुर के अनुयायी थे, लेकिन वे बाद में अस्वीकृत हुए, और उन्होंने अपना मत अलग शुरू कर लिया।

श्रील प्रभुपाद : नहीं, हाँ। वे श्रील भक्तिविनोद ठाकुर से सम्पर्क कर रहे थे। तो क्या नाम था? चरणदास बाबा जी।

सत्स्वरूप : कभी-कभी आरती में बहुत से प्रामाणिक *भजन* भी गाए जाते हैं, परन्तु 'हरे-कृष्ण' मंत्र अधिक नहीं, क्या यह अच्छी विधि नहीं? केवल दो या तीन मिनट 'हरे कृष्ण' महामंत्र और बहुत से भजन?

श्रील प्रभुपाद : नहीं! हमें हरे-कृष्ण पर बल देना है। श्रीकृष्ण-चैतन्य प्रभु नित्यानन्द, *जीव जागो, जीव जागो* .... ये प्रामाणिक हैं। परन्तु 'हरे-कृष्ण' तो *महामंत्र* है। जो श्रील भक्तिविनोद ठाकुर, श्रील नरोत्तमदास ठाकुर जैसे महाजनों द्वारा गाया गया है, वह गाया जा सकता है। (प्रात:कालीन सैर, 8 अप्रैल, 1975)

387. श्रीमती राधारानी वृन्दावन के समस्त कार्यकलापों की केन्द्रबिन्दु हैं। वृन्दावन में श्रीकृष्ण राधारानी के खिलौने के समान है इसलिए आज भी सारे वृन्दावनवासी 'जय राधे' का उच्चारण करते हैं। यहाँ पर श्रीकृष्ण के कथन से ऐसा लगता है कि राधारानी वृन्दावन की महारानी हैं और श्रीकृष्ण मात्र उनके अलंकरण हैं। श्रीकृष्ण को मदनमोहन कहा जाता है, किन्तु श्रीमती राधारानी तो श्रीकृष्ण मोहिनी हैं। फलस्वरूप श्रीमती राधारानी तो मदनमोहन मोहिनी कहलाती हैं अर्थात् कामदेव को मोहित करने वाले को भी मोहित करने वाली। (चै.च.म.ली. 13.150 ता.)

388. अप्रैल 1975 में श्रील प्रभुपाद ने मुझसे कहा कि मन्दिर का बरामदा जंगल की तरह लगना चाहिए। अत: मैंने अमरूद, अशोक, बाकुस, केला, पपीता आदि पेड़ तथा मालती, चमेली और *माधवी* उगाई। जब पेड़ बड़े हो रहे थे तो हमने उनके नीचे बेला के पौधे लगाए जिससे उनके फूल अर्चाविग्रहों को भेंट किए जा सकें। (दैवी शक्ति के संस्मरण)

389. भगवान् के विभिन्न प्रकार के भक्तों में से जो भक्त भगवान् के मूल रूप अर्थात वृन्दावन-बिहारी कृष्ण के प्रति आकृष्ट होता है वह अग्रणी अर्थात् प्रथम श्रेणी का भक्त माना जाता है। ऐसा भक्त न तो वैकुण्ठ के ऐश्वर्य से, न ही श्रीकृष्ण की राजधानी द्वारिका के ऐश्वर्य से आकृष्ट होता है। श्रील रूप गोस्वामी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गोकुल या वृन्दावन में भगवान् की लीलाओं द्वारा आकृष्ट होने वाले भक्तगण सर्वश्रेष्ठ हैं। (भ.र.सि. 4)

390. हमें गोस्वामियों के पदचिह्नों का अनुसरण करना चाहिए और इस तरह राधा और श्रीकृष्ण की खोज करनी चाहिए। वृन्दावन हमारे हृदय में हैं और हमें वहाँ श्रीकृष्ण की खोज करनी चाहिए। यह विधि श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा अनुशंसित की गई है—अर्थात विरह में पूजा करना। श्रीकृष्ण की विरह-पीड़ा में श्रीचैतन्य महाप्रभु समुद्र में कूद जाते थे। कई बार वे अर्धरात्रि को अपने कमरे से निकल पड़ते थे और अदृश्य हो जाते थे। कोई नहीं जानता था कि वे कहाँ गए हैं, किन्तु हर समय वे श्रीकृष्ण को ढूँढ़ा करते थे। यह नहीं कि हम किसी खेल-प्रदर्शन के दर्शक की भाँति राधा-कृष्ण के माधुर्य प्रेम के आदान-प्रदान का आनन्द लें। हमें अवश्य राधा-कृष्ण से विरह का अनुभव करना चाहिए। जितना हम विरह अनुभव करेंगे, उतना हम समझेंगे कि हम प्रगति कर रहे हैं। (कृष्णभावनामृत की प्राप्ति, 5: श्रीकृष्ण की शक्तियों का ज्ञान)

391. हम यह ब्रह्मचारी स्कूल या आश्रम खोलने जा रहे हैं, परन्तु मैं शंकित हूँ कि क्या हमें अधिक बच्चे मिलेंगे, क्योंकि इस युग में लोग अधिकतर शूद्र बनने में रुचि रखते हैं। कोई ब्राह्मण बनने में रुचि नहीं रखता। (वृ. में प्रवचन, श्री. भा. 1.7.16, 14 सित. 1976)

392. यह स्कूल भारत स्थानांतरित कर दिया जाए, विशेषकर हमारे वृन्दावन की नई गुरुकुल-योजना में, जहाँ सुविधाएँ बिल्कुल हमारी तथा ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप होंगी, क्योंकि यह सब प्रामाणिक शास्त्रों पर आधारित होगा। वृन्दावन में रहना सर्वोच्च पूर्णता है और वृन्दावन में बड़े होना बहुत सौभाग्य की बात है। कौन वृन्दावन की तुलना पश्चिम की घिनौनी संस्कृति से कर सकता है? यहाँ तक कि मथुरा-मण्डल में 15 दिन रहने से ही मुक्ति निश्चित है। वृन्दावन में कोई स्कूल पर प्रतिबन्ध नहीं लगाएगा और सरकार द्वारा इसे प्रोत्साहन मिलेगा। लोग ऐसे विशेष स्कूल को देखेंगे और इसका उदाहरण हजारों लोगों को अपने

बच्चे इस स्कूल में भेजने के लिए प्रोत्साहित करेगा, जिससे वे अच्छे मनुष्य तथा भक्त बनने के लिए प्रशिक्षित होंगे। डॉलरों की तुलना में इस स्थान पर रहने का खर्चा बहुत कम होगा, इससे बहुत अधिक बचत होगी। कुछ लोगों ने बच्चों को भारत भेजने के खर्चे पर विरोध किया, लेकिन बच्चे कम खर्चे पर यात्रा करते हैं और उन्हें कोई 'वीजा' की आवश्यकता नहीं होती। भारत भेजने का एक तरफ का किराया बहुत कम है जो कुछ समय में ही पूरा किया जा सकता है। बच्चे के लिए अमेरिका में एक महीने का खर्चा 100 डॉलर होगा, परन्तु भारत में उस रकम का कुछ थोड़ा-सा हिस्सा ही खर्च होगा। भारत में लोग लगभग 400 रु. (50 डालर) औसतन कमाते हैं और सारे परिवार का गुजारा अच्छी तरह चलता है। बच्चे को भारत में पढ़ाने से इतनी बचत होगी कि उससे उसकी वर्ष में एक बार माता-पिता के पास आने-जाने का टिकट का खर्चा तथा उसका स्वयं का खर्चा भी निकल आएगा। यदि सरकार को इस कार्यक्रम का पता चलेगा वह दो तरफा टिकट भी सस्ते दामों पर देगी। यह इस वर्तमान भवन की मरम्मत कराने से या नई आचरण-संहिता को पूरा करते हुए नया भवन-निर्माण से काफी सस्ता होगा।

वृन्दावन का वातावरण तो अद्वितीय है और वहाँ शिक्षक अधिक अनुभवी और कुशल हैं, वृन्दावन में रहने वाले हमारे अपने विद्वान्, जो गुरुकुल परियोजना प्रारम्भ कर रहे हैं, उनके बारे में तो क्या कहना, वहाँ तो हमारे ऐसे योग्य और सेवानिवृत्त प्राध्यापक हैं जो गुरुकुल में पढ़ाने के लिए तैयार हैं। बहुत से लोग इस परियोजना के कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए दान भी देंगे और यह 'कृष्ण-बलराम मन्दिर' विश्व में सबसे उत्तम मन्दिर है। वृन्दावन में सभी भक्त और विशेष कर बच्चे स्वस्थ हैं और हमारे सदस्य उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का आश्वासन देते हैं। वे घर-घर जाकर मधुकरी भी कर सकते हैं और पर्याप्त धन इकट्ठा कर सकते हैं जिसमें वे अपना निर्वाह ठीक से कर सकते हैं। यह भी विधि है। इसी प्रशिक्षण की आवश्यकता है, किन्तु यही काम यदि हम अमरीका में करते हैं तो हमारे ऊपर बच्चों के साथ अत्याचार करने का आरोप लग सकता है, जबकि यह वास्तव में बालक के शिष्टाचार की रक्षा का उत्कृष्ट साधन है और इससे वे बहुत प्रसन्न रहेंगे। इसलिए हर तरह से यह उचित है कि वृन्दावन ही गुरुकुल के लिए उत्तम स्थान है। और इससे पहले कि अमरीकी सरकार इसमें बाधा उत्पन्न करें, जिससे हमें हानि होगी और इससे पहले एक जोखिम भरे प्रयास पर हम बहुत-सा धन खराब करे, जो पूरी तरह से असफल हो सकता है, हमें इसे आरम्भ कर देना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 20 जन०, 1976)

393. तमाल कृष्ण : पाँच सौ ? क्या प्रभुपाद आपकी यही योजना है, पाँच सौ लड़के ?

श्रील प्रभुपाद : कम से कम।

तमाल कृष्ण : कम से कम पाँच सौ।

गुणार्णव : ऊपर की मंजिल भी गुरुकुल के लिए रखी जाएगी। हम सोच रहे हैं कि ब्रह्मचारी और संन्यासी अतिथि-गृह के स्थान पर गुरुकुल के ऊपर वाले भाग में रहे।

श्रील प्रभुपाद : हाँ, हाँ।

गुणार्णव : जिससे वे भी गुरुकुल के संपर्क में रह सकें।

श्रील प्रभुपाद : ओह! हाँ, क्यों नहीं ?

यशोदानन्दन : गृहस्थों और स्त्रियों के विषय में क्या किया जाए ?

श्रील प्रभुपाद : नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। (वृ. गुरुकुल का निरीक्षण, 26 जून, 1977)

394. मैं आपको वृन्दावन में हमारे जन्माष्टमी संस्थापना समारोह के बारे में कुछ निर्देश देना चाहता हूँ।

मुख्य बात है कि धर्मानुष्ठान हमारे अपने लोगों के द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए। हमें उन लोगों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, जो हमें नीचा समझकर, हमारे साथ बैठकर भोजन तक नहीं पाएँगे। सारे विश्व में, पेरिस, न्यूयार्क, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में, हमारे भक्त पुरुष तथा स्त्रियाँ, बहुत अच्छी तरह से अर्चाविग्रह की पूजा कर रहे हैं और मुझे उनकी पूजा विधि पर गर्व है। इसका कोई कारण नहीं कि वृन्दावन में उत्सव मनाने के लिए हम भारतीय गोस्वामियों पर निर्भर रहने का विचार करें। अत: आप इसे अच्छी तरह समझ लो और पूरी तरह से सहमत हो जाओ कि उन्हें आमंत्रित तो किया जाए, परन्तु हम अपने धर्मानुष्ठान स्वयं सम्पन्न करें।

आप हरगोविन्द को नाटकीय अभिनेता के रूप में ले सकते हैं और अपने अभिनेताओं को भी

बच्चे इस स्कूल में भेजने के लिए प्रोत्साहित करेगा, जिससे वे अच्छे मनुष्य तथा भक्त बनने के लिए प्रशिक्षित होंगे। डॉलरों की तुलना में इस स्थान पर रहने का खर्चा बहुत कम होगा, इससे बहुत अधिक बचत होगी। कुछ लोगों ने बच्चों को भारत भेजने के खर्चे पर विरोध किया, लेकिन बच्चे कम खर्चे पर यात्रा करते हैं और उन्हें कोई 'वीजा' की आवश्यकता नहीं होती। भारत भेजने का एक तरफ का किराया बहुत कम है जो कुछ समय में ही पूरा किया जा सकता है। बच्चे के लिए अमेरिका में एक महीने का खर्चा 100 डॉलर होगा, परन्तु भारत में उस रकम का कुछ थोड़ा-सा हिस्सा ही खर्च होगा। भारत में लोग लगभग 400 रु. (50 डालर) औसतन कमाते हैं और सारे परिवार का गुजारा अच्छी तरह चलता है। बच्चे को भारत में पढ़ाने से इतनी बचत होगी कि उससे उसकी वर्ष में एक बार माता-पिता के पास आने-जाने का टिकट का खर्चा तथा उसका स्वयं का खर्चा भी निकल आएगा। यदि सरकार को इस कार्यक्रम का पता चलेगा वह दो तरफा टिकट भी सस्ते दामों पर देगी। यह इस वर्तमान भवन की मरम्मत कराने से या नई आचरण-संहिता को पूरा करते हुए नया भवन-निर्माण से काफी सस्ता होगा।

वृन्दावन का वातावरण तो अद्वितीय है और वहाँ शिक्षक अधिक अनुभवी और कुशल हैं, वृन्दावन में रहने वाले हमारे अपने विद्वान्, जो गुरुकुल परियोजना प्रारम्भ कर रहे हैं, उनके बारे में तो क्या कहना, वहाँ तो हमारे ऐसे योग्य और सेवानिवृत्त प्राध्यापक हैं जो गुरुकुल में पढ़ाने के लिए तैयार हैं। बहुत से लोग इस परियोजना के कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए दान भी देंगे और यह 'कृष्ण-बलराम मन्दिर' विश्व में सबसे उत्तम मन्दिर है। वृन्दावन में सभी भक्त और विशेष कर बच्चे स्वस्थ हैं और हमारे सदस्य उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का आश्वासन देते हैं। वे घर-घर जाकर मधुकरी भी कर सकते हैं और पर्याप्त धन इकट्ठा कर सकते हैं जिसमें वे अपना निर्वाह ठीक से कर सकते हैं। यह भी विधि है। इसी प्रशिक्षण की आवश्यकता है, किन्तु यही काम यदि हम अमरीका में करते हैं तो हमारे ऊपर बच्चों के साथ अत्याचार करने का आरोप लग सकता है, जबकि यह वास्तव में बालक के शिष्टाचार की रक्षा का उत्कृष्ट साधन है और इससे वे बहुत प्रसन्न रहेंगे। इसलिए हर तरह से यह उचित है कि वृन्दावन ही गुरुकुल के लिए उत्तम स्थान है। और इससे पहले कि अमरीकी सरकार इसमें बाधा उत्पन्न करें, जिससे हमें हानि होगी और इससे पहले एक जोखिम भरे प्रयास पर हम बहुत-सा धन खराब करे, जो पूरी तरह से असफल हो सकता है, हमें इसे आरम्भ कर देना चाहिए। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 20 जन०, 1976)

393. तमाल कृष्ण : पाँच सौ ? क्या प्रभुपाद आपकी यही योजना है, पाँच सौ लड़के ?

श्रील प्रभुपाद : कम से कम।

तमाल कृष्ण : कम से कम पाँच सौ।

गुणार्णव : ऊपर की मंजिल भी गुरुकुल के लिए रखी जाएगी। हम सोच रहे हैं कि ब्रह्मचारी और संन्यासी अतिथि-गृह के स्थान पर गुरुकुल के ऊपर वाले भाग में रहे।

श्रील प्रभुपाद : हाँ, हाँ।

गुणार्णव : जिससे वे भी गुरुकुल के संपर्क में रह सकें।

श्रील प्रभुपाद : ओह! हाँ, क्यों नहीं ?

यशोदानन्दन : गृहस्थों और स्त्रियों के विषय में क्या किया जाए ?

श्रील प्रभुपाद : नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। (वृ. गुरुकुल का निरीक्षण, 26 जून, 1977)

394. मैं आपको वृन्दावन में हमारे जन्माष्टमी संस्थापना समारोह के बारे में कुछ निर्देश देना चाहता हूँ।

मुख्य बात है कि धर्मानुष्ठान हमारे अपने लोगों के द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए। हमें उन लोगों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, जो हमें नीचा समझकर, हमारे साथ बैठकर भोजन तक नहीं पाएँगे। सारे विश्व में, पेरिस, न्यूयार्क, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में, हमारे भक्त पुरुष तथा स्त्रियाँ, बहुत अच्छी तरह से अर्चाविग्रह की पूजा कर रहे हैं और मुझे उनकी पूजा विधि पर गर्व है। इसका कोई कारण नहीं कि वृन्दावन में उत्सव मनाने के लिए हम भारतीय गोस्वामियों पर निर्भर रहने का विचार करें। अतः आप इसे अच्छी तरह समझ लो और पूरी तरह से सहमत हो जाओ कि उन्हें आमंत्रित तो किया जाए, परन्तु हम अपने धर्मानुष्ठान स्वयं सम्पन्न करें।

आप हरगोविन्द को नाटकीय अभिनेता के रूप में ले सकते हैं और अपने अभिनेताओं को भी

ले सकते हैं। सारे दिन जितने लोग आएँ सब के लिए प्रचुर मात्रा में प्रसाद की व्यवस्था होनी चाहिए। रसोई सारा दिन चलती रहनी चाहिए। अत: ध्यान रहे कि प्रचुर मात्रा में चावल, आटा और घी आदि होना चाहिए। आजीवन-सदस्यों का विशेष ध्यान रखा जाए और वे अच्छी तरह से आमंत्रित होने चाहिए। हमें अपने कार्यों का प्रबंध स्वयं करना चाहिए। यदि वे आते हैं तो अच्छी बात है, नहीं तो हम प्रबंध कर लेंगे। हमारी ओर से सब कुछ अच्छे ढंग से व्यवस्थित होना चाहिए।

वृन्दावन और मथुरा के सभी बड़े अधिकारी आमंत्रित होने चाहिए। गोस्वामियों को और मेरे गुरु-भाइयों को बुलाया जाना चाहिए। स्थानीय मारवाड़ी और पाठकजी को भी आमंत्रित करो। व्यवहारिक तौर पर निमत्रंण पत्र बाँट कर हमें सबको आमंत्रित करना चाहिये। वृन्दावन के सभी ब्रजवासी भी अर्चाविग्रह के दर्शन और प्रसाद के लिए आमंत्रित किए जाएंगे। आजीवन सदस्यों के लिए विशेष प्रबंध होना चाहिए; जैसा कि श्रीमान् बिरला और दूसरे माननीय अतिथियों के लिए। धन का कोई प्रश्न नहीं है। बहुत अच्छा और उत्तम प्रबंध होना चाहिए। श्रीकृष्ण सारा खर्चा प्रदान करेंगे। अत: इसे शानदार बनाने का प्रयास करो। शानदार का अर्थ है प्रचुर मात्रा में *प्रसाद* और मंदिर की सजावट शानदार से शानदार होनी चाहिए। पोशाक का आन्तरिक प्रबंध यमुना, मदिरा और जयतीर्थ करें, ये बड़े कुशल हैं। शास्त्रीय निर्देश प्रद्युम्न से ले सकते हैं।

395. जो कोई भी धन एकत्र नहीं कर सकते, व मायापुर जाएँ और वहाँ रहें और केवल स्त्रियों और विधवाओं की तरह खाएं और सोये। मैं उनके खाने और सोने का प्रबन्ध कर दूँगा। परन्तु नगरों में वही रहें जो धन एकत्र कर सकते हैं और कमा सकते हैं। हिन्दू समाज में विधवा धन नहीं कमाती वे केवल दूसरे के खर्चे पर निर्भर रहती है और सोती है। अत: यदि आप कलकत्ता में कमाने लायक नहीं हैं तो अच्छा होगा कि आप सभी मायापुर चले जाओ। वहाँ खाओ और सोओ और मैं सभी विधवाओं, स्त्रियों और अन्यों की व्यवस्था मायापुर और वृन्दावन में कर दूँगा। नहीं तो हम कलकत्ता में इतने बड़े संस्थापन को केवल खाने और सोने और खर्चा करने के लिए क्यों चलाए। ये दो स्थान उनके लिए सुरक्षित रखने होंगे जो धन एकत्र नहीं कर सकते। उनके लिए मैं यह व्यवस्था कर रहा हूँ। केवल वही चुस्त सदस्य शहर में रहें जो धन एकत्र कर सकते हैं। खाने और सोने वाले सदस्य मायापुर में रहें। बस। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 14 जुलाई 1972)

396. मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि गृहमंत्री हमारे लोगों के प्रवेश–पत्रों (Visas) की कठिनाई के विषय में ध्यान दे रहे हैं। बात यह है कि हम इन परियोजनाओं के निर्माण कार्य में इतना खर्चा कर रहे हैं और कोई स्थानीय भारतीय इस परियोजना में सहयोग देने के लिए अपना हाथ आगे नहीं बढ़ा रहा। इन परियोजनाओं की व्यवस्था कौन करेगा ? हमें इसे व्यवस्थित करने के लिए विदेशी भक्त चाहिए। वृन्दावन में हम लगभग पचास विदेशी रखेंगे। (श्रील प्रभुपाद द्वारा पत्र, 15 नव०, 1974)

397. अक्षयानन्द : श्रील प्रभुपाद! यदि हम साबुन का प्रयोग न करें तो प्रश्न उठता है कि हम कपड़े कैसे धोएँ। क्या केवल कपड़ा पीट कर धोएँ ? क्या वह पर्याप्त है ?

श्रील प्रभुपाद : कपड़ा धोने के लिए तुम्हें साबुन की आवश्यकता है। (वृ. में कमरे में वा., 6 सित०, 1976)

जय श्रील प्रभुपाद